CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारा इतिहास

३

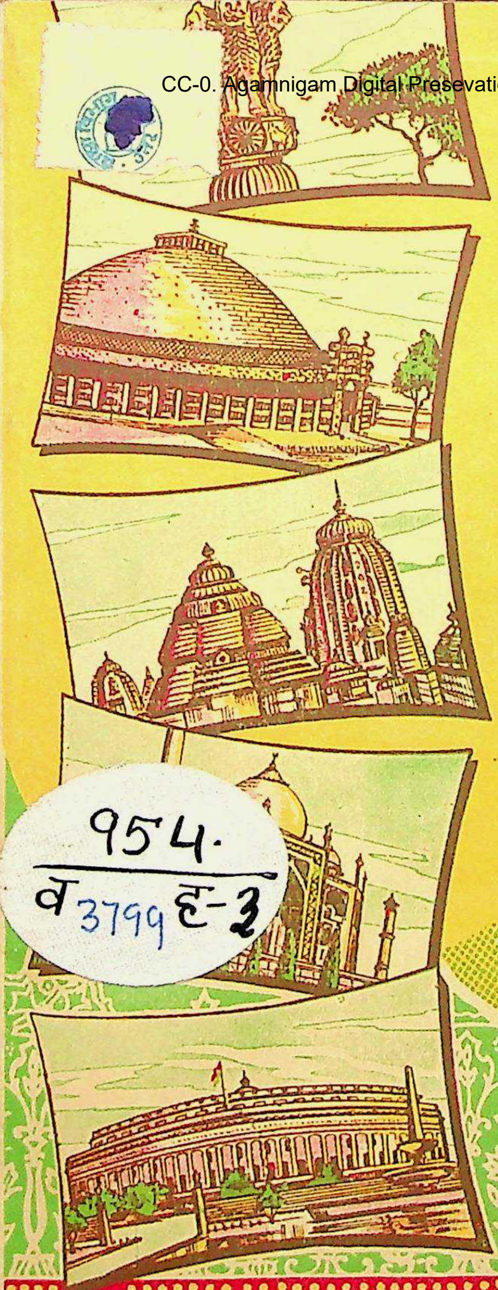

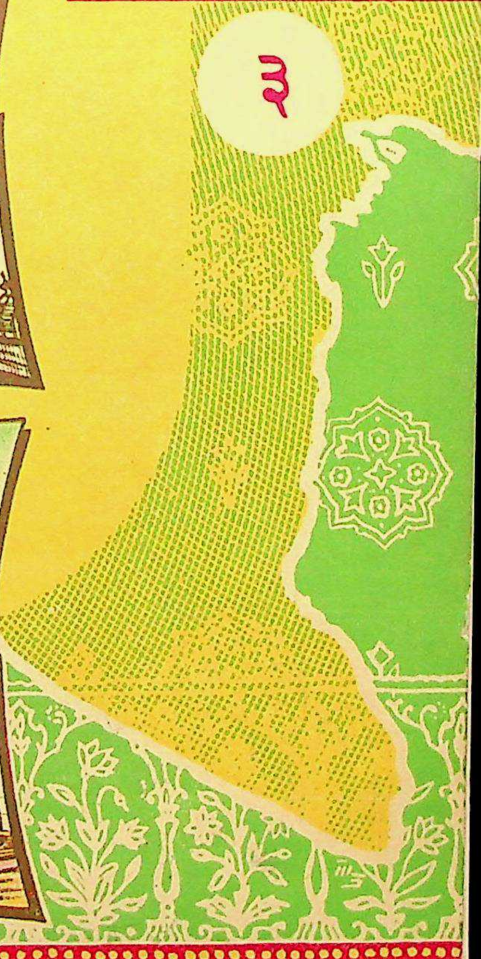

954.
व 3799 ह-3

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारा इतिहास

तीसरी पुस्तक

(जूनियर हाई स्कूलों की कक्षा ८ के लिए)

लेखक

रामचरण विद्यार्थी

एम० ए० (गोल्ड मेडलिस्ट), एल० टी०; पी० ई० एस० (रिटायर्ड)
[भूतपूर्व लेक्चरर, गवर्मेंट ट्रेनिंग कालेज, लखनऊ, एवं इलाहाबाद;
प्रोफेसर व अध्यक्ष इतिहास विभाग, गवर्मेंट डिग्री कालेज, रामपुर;
तथा प्रिंसिपल, गवर्मेंट जुबिली इण्टर कालेज, लखनऊ]

Universal Book Depot Lucknow. Aminabad.

प्रकाशक

शंकर प्रकाशन

अलीगढ़

१९६७] [मूल्य १ रुपया ४५ पैसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक
शंकर प्रकाशन
अलीगढ़

3799.

इस पुस्तक का कापीराइट उत्तर प्रदेश शासन द्वारा सुरक्षित है।

954.
व ह
3.

	१९५८-१९६६	४,४८,०००
एकादश संस्करण	१९६७	१,००,०००

मुद्रक
दि सेन्ट्रल प्रेस प्राइवेट लिमिटेड,
कानपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संग्रहालय ... State Museum, Library, Lko. क्रमांक 3799 प्राप्ति तिथि 21.5.69

भूमिका

साथी अध्यापकों से निवेदन

भारत के स्वतन्त्र होने के बाद देशवासियों पर जो उत्तरदायित्व आये हैं, उन्हें निभाने के लिए बड़ी संख्या में सुशिक्षित नवयुवकों की आवश्यकता है। जूनियर हाई स्कूलों की छठी, सातवीं एवं आठवीं कक्षाओं में जो छात्र पढ़ते हैं, उन पर कुछ ही वर्षों बाद जिम्मेदारियों को उठाने का भार होगा। उन पर कुछ जिम्मेदारियां तो अभी से विद्यमान हैं। उन सबको सुचारुरूप से समझने और निभाने योग्य बनाने के लिए शिक्षा-क्रम में इतिहास और नागरिक शास्त्र के ज्ञान का विशेष स्थान है।

इतिहास के द्वारा हमें अपने राष्ट्र की आत्मा की अनुभूति होती है। हमारा देश प्राचीन काल में वैभव और प्रतिभा की पराकाष्ठा पर पहुँचा था। उसकी ख्याति सारे संसार में व्याप्त थी। समय ने पलटा खाया और मध्यकाल में उसका अधःपतन आरम्भ हुआ। अंग्रेजी शासन-काल में आकर दशा अत्यन्त दयनीय हो गयी। संसार के अन्य देश तब तेजी से तरक्की कर रहे थे, परन्तु हमारा देश दासता की बेड़ियों से बँधा गति-शून्य सा हो रहा था। इस अधःपतन और अधोगति के कारण क्या थे? क्यों हमारे पैर आगे नहीं बढ़ते थे? अपने अतीत के नेत्रों से मध्य या अर्वाचीन काल की पतनावस्था को देखकर मालूम होता है कि अपनी व्यक्तिगत दीर्घसूत्रता, सामाजिक दुर्बलता एवं राजनीतिक चेतना की न्यूनता के कारण हम विवश और पराधीन बने रहे। अब हम जगे हैं और हमने अपने घर को सँभालना शुरू किया है। इतिहास हमारे नेत्रों के सामने यह सारा दृश्य उपस्थित करता है। इतना ही नहीं, उसमें भविष्य के मार्ग को स्पष्ट और उज्जवल बनाने की भी क्षमता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतिहास के अध्ययन के इस महत्त्व को समझकर इतिहास के लेखक या अध्यापक के लिए यह जरूरी है कि वह पाठ्य-विषय का वर्णन और उसकी आलोचना निष्पक्ष और निर्भय रीति से करे। किसी भी कारण घटनाओं को तोड़-मरोड़े नहीं। सदैव सत्य का आश्रय ले। इसी दृष्टि-क्रम से वह सच्ची देश-भक्ति, सच्चा स्वाभिमान और सच्ची सहानुभूति पैदा कर सकता है।

बालकोपयोगी प्रस्तुत पुस्तकों में बालकों की बेसिक कक्षाओं में प्राप्त पूर्व योग्यता एवं उनके वर्तमान मानसिक और बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर ज्ञातव्य बातों को इतना सुलझा और सजाकर रखा गया है कि वे उनके लिए अति सरल, रोचक और सुग्राह्य बन जायँ। कार्य-कारण का सम्बन्ध बिठाते हुए बालकों के अन्दर ऐतिहासिक तार्किकता उत्पन्न करने की कोशिश की गयी है। बालकों की तो क्या, प्रायः वयस्कों की भी रुचि जितनी व्यक्तियों के विषय में होती है, उतनी संस्थाओं के विषय में नहीं। अतः इन पुस्तकों में ऐतिहासिक वीरों को स्थान-स्थान पर प्रमुखता दी गयी है और उन्हें उनके सामाजिक वातावरण में रखकर यह दिखाया गया है कि उनके कारण किस प्रकार राष्ट्र की उन्नति में सहायता मिली या बाधा पहुँची। वीरों के मूल्यांकन का यही सही तरीका है।

इन पुस्तकों में चित्रों और मानचित्रों की प्रचुरता है। पढ़ने वालों को किसी इतिहास-एटलस की आवश्यकता न होगी। वर्णित सामग्री हृदयांकित करने में चित्र विशेष सहायता देंगे। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के लिए कुछ प्रश्न दिये गये हैं। उनका अभ्यास बालकों के अर्जित ज्ञान को सगठित करेगा। अतः हरएक पाठ को पढ़ाने के बाद बालकों से उन प्रश्नों के उत्तरों का अभ्यास अवश्य कराया जाय।

नागरिक शास्त्र के पाठों में स्थान-स्थान पर क्रियात्मक अभ्यासों के संकेत दिये गये हैं, उनका अभ्यास यथावसर अवश्य कराना चाहिए।

—लेखक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

खंड—१ इतिहास

अध्याय	विषय	पृष्ठ
पहला—ईस्ट इण्डिया कम्पनी का कुराज		१–१३
	१—बंगाल में अंग्रेजी कम्पनी के अधिकार	१
	२—कम्पनी का कुशासन	७
दूसरा—अंग्रेजी राज्य की स्थापना		१४–४९
	१—अंग्रेजों की मराठों से मुठभेड़	१४
	२—मैसूर का विभाजन	२१
	३—रुहेलखण्ड और अवध में हस्तक्षेप	२८
	४—हैदराबाद में हस्तक्षेप और तमिलनाड पर अधिकार	३२
	५—कम्पनी के शासन पर पार्लमिन्ट का अंकुश	३७
	६—शासन में सुधार	४२
	७—देशी शिल्पों की अवनति	४६
तीसरा—अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना		५०–६६
	१—मराठा साम्राज्य का पराभव	५०
	२—सिक्खों से समझौता, गोरखों का पराभव, मराठा शक्ति का अन्त	५५
	३—मराठों के पतन के कारण	६३
चौथा—अंग्रेजी साम्राज्य का चौमुखा विस्तार		६७–९५
	१—पूर्व और पश्चिम में विस्तार	६७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	२—सिन्ध पर अधिकार और पंजाब में युद्ध	७६
	३—पंजाब पर अधिकार तथा डाक्ट्रिन आफ लैप्स	८१
	४—समाज सुधार और अंग्रजी शिक्षा	८६
	५—सार्वजनिक निर्माण विभाग तथा वैज्ञानिक आविष्कारों का उपयोग	९२
पांचवां	—महान क्रान्ति—स्वाधीनता का पहला संग्राम	९६–११९
	१—क्रान्ति के कारण	९६
	२—स्वाधीनता संग्राम की मुख्य घटनाएं	१०३
	३—क्रान्ति की विफलता और शासन में परिवर्तन	१०८
	४—महारानी विक्टोरिया का घोषणा-पत्र	११५
छठा	—भारत में ब्रिटिश पार्लमिन्ट का राज्य (१) (१८५८-१९०५ ई०)	१२०–१३७
	१—अफगानिस्तान के साथ सम्बन्ध	१२०
	२—सीमान्तों पर अग्रसर नीति	१२४
	३—धर्म, समाज, व राजनीति में नवजीवन	१२७
	४—भारतीय राष्ट्रीय महासभा	१३३
सातवां	—भारत में ब्रिटिश पार्लमिन्ट का राज्य (२) (१९०५-१९४७ ई०)	१३८–१७५
	१—अफगानिस्तान, फारस और तिब्बत से सम्बन्ध	१३८
	२—दो महान विश्वयुद्ध	१४४
	३—आन्तरिक शासन में सुधार	१५१
	४—१९३५ ई० के सुधार तथा कांग्रेस का सहयोग	१५७
	५—भारत में नवचेतना—राष्ट्रीय संघर्ष	१६१
	६—सत्याग्रह और स्वराज्य	१६६
	७—सामाजिक सुधारों की लहर और पुनर्जागरण	१७२
आठवां	—नया भारत	१७६–१८१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खण्ड—२ नागरिकता

अध्याय	विषय	पृष्ठ
पहला—भारत संघ के राज्य		१८२–१९३
	१—संघ सरकार का संगठन—राष्ट्रपति	१८२
	२—मन्त्रिपरिषद	१८४
	३—संसद	१८६
दूसरा—अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति-संगठन		१९४–२१०
	१—संयुक्त राष्ट्र-संघ की स्थापना	१९४
	२—संयुक्य राष्ट्र-संघ के प्रमुख अंग (१)	१९८
	३—संयुक्त राष्ट्र-संघ के प्रमुख अंग (२)	२०३
	४—महात्मा गान्धी और रवीन्द्रनाथ टैगौर का आध्यात्मिक प्रभाव	२०७
तीसरा—भारत और विश्व		२११–२२१
	१—विश्व-राजनीति में भारत का स्थान	२११
	२—परराष्ट्रों में भारत के राज-प्रतिनिधि	२१७
	३—प्रवासी भारतवासी	२२०
चौथा—मानव जीवन पर वैज्ञानिक खोजों का प्रभाव		२२३–२३२
	१—आजकल विज्ञान का युग है	२२३
	२—स्वतन्त्र भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान	२२८
पाँचवां—उपयोगीकरण की समस्याएं		२३३–२४०
	१—कुटीर उद्योग	२३३
	२—श्रम और पूंजी समस्या	२३७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारा इतिहास

तीसरी पुस्तक

खण्ड १—इतिहास

पहला अध्याय

ईस्ट इण्डिया कम्पनी का दुराज

पाठ १—बंगाल में अंग्रेजी कम्पनी के अधिकार

तुमने पिछली कक्षा में पढ़ा है कि पलाशी में अंग्रेजों की विजय से बंगाल में उनके पैर जम गये थे (१७५७ ई०)। अब उन्होंने अपनी इच्छा के अनुसार बंगाल के नवाब की गद्दी पर **मीर जाफर** को बिठाया।

मीर जाफर

मीर जाफर उनके हाथ की कठपुतली बनकर राज्य करने लगा। अंग्रेजों को भेंटें और रिश्वतें देते-देते उसका कोष खाली हो गया। अब उसके पास अपनी सेनाओं को वेतन देने के लिए भी धन की कमी हो गयी। उधर कम्पनी की धन की माँग कभी पूरी नहीं होती थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
क्योंकि उसे इंग्लैंड में अपने मालिकों को धन भेजना पड़ता था। इस प्रकार बंगाल की स्थिति दिन-प्रति-दिन बिगड़ती गयी।

क्लाइव के इंग्लैंड लौट जाने के बाद कम्पनी के दो गवर्नर हुए, परन्तु दोनों बंगाल की दशा को न सुधार सके। इस बीच में मुगल शाहजादे अलीजौहर ने, जो बाद को बादशाह शाहआलम कहलाया, आक्रमण कर दिया। अंग्रेजी सेना ने उसे हरा दिया (१७५९ ई०)। तब कम्पनी ने धन की और माँग की। मीरजाफर लाचार था। कलकत्ता की कौंसिल उसे गद्दी से उतारकर उसके दामाद मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाने की सोचने लगी। उसे आशा थी कि नये नवाब से रुपया मिलेगा। अतः मीर जाफर पर दोष लगाया गया कि उसने बंगाल के आक्रमण में मुगल शाहजादे की सहायता की थी। बूढ़ा मीर जाफर गद्दी से उतार दिया गया और उसका दामाद मीर कासिम नवाब बनाया गया (१७६० ई०)।

मीर जाफर का चरित्र—मीर जाफर भारत के इतिहास में एक षडयन्त्री, राजद्रोही और विश्वासघाती के रूप में प्रसिद्ध है। वह अपने शासनकाल में अंग्रेजों के संकेतों पर नाचता रहा। शासन प्रबन्ध और प्रजापालन की उसे चिन्ता न थी। उसके स्वार्थ के कारण ही बंगाल में अंग्रेजों की राज-सत्ता का बीज बोया गया। अन्त में उसे अपने कुकर्मों का फल चखना पड़ा।

मीर कासिम

मीर कासिम ने कम्पनी के कर्मचारियों को बड़ी रिश्वतें और कम्पनी को बड़ी रकमों के अलावा कई जिलों की जमींदारी दी।

मीर कासिम बड़ा बुद्धिमान और धुन का पक्का था। उसे अंग्रेजों की कठपुतली बनकर रहना पसन्द न था। उसने अपनी सेना का संगठन किया। सेना में विदेशियों को भर्ती किया एवं उसका सेनापति समरू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नामक एक जर्मन को बनाया। वह अपनी राजधानी को भी अंग्रेजों के असर से कुछ दूर के स्थान मुंगेर में ले गया। वहाँ उसने बन्दूकों का कारखाना खोला। उसकी इच्छा थी कि अपने शासन में हर तरह का सुधार करे, पर अंग्रेजों ने उसे वैसा न करने दिया।

मीर कासिम

बंगाल — बिहार में अंग्रेजी गुमाश्तों ने व्यापार के मामले में बड़ी धींगा-मुश्ती मचा रखी थी। वे लोग न केवल कम्पनी का माल बिना चुंगी दिये लाते और ले जाते थे, वरन् उन्होंने चुंगी की माफी के परवाने (दस्तक) दूसरों को देना शुरू कर दिये। नवाब मीर कासिम के विरोध का कोई फल न निकला, अतः उसने सारे व्यापार से चुंगी उठा ली। अंग्रेज आग-बबूला हो गये, क्योंकि जो रियायतें केवल उनके व्यापार को मिलती थीं वे सबके लिए सामान्य हो गयीं। अंग्रेजों ने नवाब मीर कासिम पर तरह-तरह के आरोप लगाये और कलकत्ता कौंसिल ने लड़ाई छेड़ दी।

बक्सर का युद्ध–कासिम और उसका सेनापति बड़ी वीरता से लड़े, परन्तु हार गये और अवध की ओर भागे। वहाँ से अवध के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

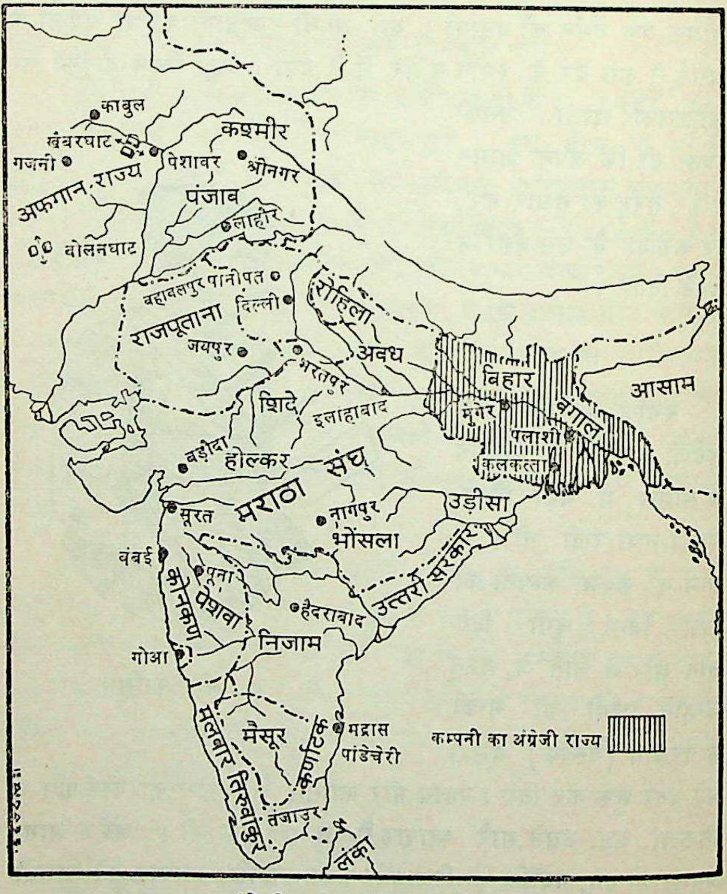

अंग्रेजी राज्य (१७६५ ई०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवाब शुजाउद्दौला एवं मुगल बादशाह शाहआलम की सहायता ले कर मीर कासिम ने बिहार पर चढ़ाई की। उनकी सम्मिलित सेना **बक्सर** में हार गयी (१७६४ ई०)। इस प्रकार बक्सर के युद्ध में केवल बंगाल का नवाब ही नहीं हारा, अपितु मुगल सम्राट और उसका वजीर अवध का नवाब शुजाउद्दौला भी हारे। **अंग्रेजों के पक्ष में पलाशी का काम बक्सर ने पूरा कर दिया।**

अवध का नवाब शुजाउद्दौला

बक्सर के युद्ध का भारत के इतिहास में बड़ा महत्व है। पलाशी के युद्ध में अंग्रेजों ने धोखा देकर विजय प्राप्त की थी, परन्तु बक्सर में अंग्रेजों की विजय उनके सैनिक बल की विजय थी। मीर कासिम ने मुगल सम्राट और अवध के नवाब के साथ मिलकर एक बड़ी सेना तैयार की थी, परन्तु उसे युद्ध में सफलता न मिली। बक्सर के युद्ध का भारत के लिए बड़े घातक परिणाम हुए। इस विषय में प्रसिद्ध इतिहासकार लायल ने लिखा है कि इस युद्ध में "अंग्रेजों की सफलता से मुगल सम्राट उनके कैम्प में आ गया, नवाब वजीर डर गया और कम्पनी की सेनाएँ गंगा के उस पार वाराणसी एवं इलाहाबाद तक पहुँच गयीं।"

मीरकासिम के बाद **मीर जाफर** को कम्पनी ने फिर बंगाल का नवाब बना दिया। उसकी सेना को इतना सीमित कर दिया कि यदि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह कभी चाहे भी, तो सिर न उठा सके। । बक्सर के युद्ध में जो अंग्रेजों को क्षति पहुँची थी, उसकी पूर्ति भी मीर जाफर से करायी गयी ।

सन्धियाँ—अब क्लाइव इंग्लैंड से भारत को लौट आया (१७६५ ई०) । उसने **वाराणसी** पहुँच कर शुजाउद्दौला और **इलाहाबाद** जाकर शाहआलम से सन्धियाँ कीं । **शुजाउद्दौला ने** लड़ाई का भारी हर्जाना कम्पनी को दिया और वादा किया कि वह अंग्रेजों के शत्रुओं को अपना शत्रु समझेगा । **शाहआलम** ने कम्पनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी सौंप दी और उनकी निगरानी में इलाहाबाद में रहना स्वीकार किया । **दीवानी के मिलने की तिथि १७६५ ई० से ही भारत में अंग्रेजों का असली राज्याधिकार आरम्भ हो जाता है।**

अभ्यास के लिए प्रश्न--

१—मीर जाफर कौन था ? उसके विषय में क्या जानते हो ?

२—मीर कासिम और अंग्रेजों के बीच झगड़े का विवरण दो ।

३—बक्सर का युद्ध कब और किसके बीच हुआ ? युद्ध के कारण क्या थे ?

४—बक्सर के युद्ध के क्या परिणाम हुए ?

५—'अंग्रेजों के पक्ष में पलाशी का काम बक्सर ने पूरा कर दिया।' इस कथन को स्पष्ट करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २— कम्पनी का कुशासन

बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी मिलने के पहले कम्पनी का बाहरी रूप व्यापारिक था। दीवानी मिलने से उसका रूप बदल गया। इन प्रान्तों पर राज्य करने के लिए अब वह हिस्सेदार बन गयी। दूसरे शब्दों में **दुराज यानी दोहरा शासन** कायम हो गया। दीवानी अर्थात मलगुजारी एवं उसके सम्बन्ध में न्याय करने का काम तो कम्पनी के पास था, परन्तु फौजदारी अर्थात शान्ति स्थापन एवं उसके सम्बन्ध में न्याय करने का काम नाममात्र को नवाब के पास।

कम्पनी का उद्देश्य दोनों अवस्थाओं में अर्थात दीवानी का अधिकार मिलने के पहले और उसके बाद एक ही रहा— **जैसे भी हो सके, अधिक से अधिक आर्थिक लाभ उठाना**। इसके लिए कम्पनी ने कभी इस बात की चिन्ता न की कि उसके कर्मचारी किन साधनों से कम्पनी के सदस्यों की तिजोरियां भर रहे हैं। यदि उसे भरपूर मुनाफा मिलता रहा, तो उसने अपने कर्मचारियों के भ्रष्टाचार, अन्याय एवं अत्याचारों की भी उपेक्षा की। कम्पनी का तत्कालीन शासन भारत में अंग्रेजी राज्य पर एक कलंक माना जाता है।

(१) पिछले एक मुगल सम्राट ने कम्पनी के माल पर चुंगी की छूट दे दी थी। पलाशी की लड़ाई के बाद कम्पनी के अनेक नौकरों ने, जो अपना निजी व्यापार भी करने लगे थे, अपने निजी माल पर भी चुंगी देनी बन्द कर दी। माल कम्पनी का है, इसे प्रमाणित करने के लिए कम्पनी के मुखिया की ओर से **दस्तक** (परवाने या परमिट) दिये जाते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थे। इस प्रकार के दस्तक लिये हुए कम्पनी के गुमाश्ते तथा अन्य अंग्रेज नमक, सुपारी, तम्बाकू आदि दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं का व्यापार करते घूमने लगे। यदि कहीं नवाब के अधिकारी उन्हें टोकते थे, तो वे उनकी मुश्कें बँधवाकर पिटवाते थे।

अंग्रेज व्यापारियों का अन्याय केवल चुंगी अदा न करने तक ही सीमित नहीं रहा। वे जहाँ जाते, अपने मुँह माँगे दामों पर माल वेचते थे तथा दूसरे लोगों से बलात अपने मनमाने दामों पर माल छीन लेते थे। भारत की खड़ी खेती और कारखानों के माल की इसी प्रकार लूट-खसोट होने लगी। यदि कहीं कोई माल देने से इनकार करता,तो कम्पनी के गुमाश्ते उसे कोड़ों से पिटवाते, घर की तलाशी लेकर जुर्माने वसूल करते एवं कैद की सजा देते थे। नवाब मीरकासिम ने इस सम्बन्ध में कम्पनी के गवर्नर से कई बार शिकायत की, परन्तु गुमाश्तों के अत्याचार बन्द न हुए। जुलाहों से कपड़ा बुनवाने और मोल लेने में कम्पनी के गुमाश्तों ने अत्याचार की हद कर दी। कम्पनी का कोई गुमाश्ता कारीगरों की बस्ती में जाता और अपनी कचहरी लगाकर वहाँ कारीगरों को बुलाता। कुछ पेशगी देकर लिखा लेता था कि किस भाव पर, कितना माल, किस दिन देना होगा। जुलाहे उसकी शर्तों को मंजूर करते भी हैं या नहीं, इसकी उसे परवाह नहीं थी। यदि जुलाहे आनाकानी करते अथवा पेशगी न लेते,तो कोड़ों की मार पड़ती। बंगाल में यह बात प्रसिद्ध है कि इस प्रकार के अत्याचारों से तंग आकर बहुत से रेशम के कारीगरों ने अपने अँगूठे काट डाले जिससे वे कपड़ा बुनने के लिए अयोग्य मान लिए जायँ। यह बात चाहे सच न हो, परन्तु इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि कम्पनी के शासन प्रबन्ध में बुनकरों की विपत्ति की कोई सीमा न थी।

एक बार अंग्रेजों की इन क्रूरताओं से कराह कर बंगाल के कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जमींदारों ने मराठों की शरण में एकत्र होकर अंग्रेजों को बंगाल से निकालने का संकल्प भी किया, परन्तु पानीपत में मराठों की पराजय ने उस प्रयत्न पर पानी फेर दिया।

(२) कम्पनी दीवानी मिलने के कारण बंगाल, बिहार और उड़ीसा के शासन में भाग लेने लगी। इससे प्रजा के कष्ट घटने की जगह और अधिक बढ़ गये। देश में किसी प्रकार के व्यापार पर अंग्रेजों के लिए कोई प्रतिबन्ध न रहा और न कोई चुंगी। मालगुजारी में वसूली के विषय में **ठेकेदारी की प्रणाली** जारी की गयी। ऊँची से ऊँची बोली पर मालगुजारी की वसूली का ठेका नीलाम किया जाने लगा जिसे प्रायः अंग्रेजों के गुमाश्ते या अन्य सेवक मोल ले लेते और मनमानी रकम वसूल करने के लिए किसानों के साथ निर्दयतापूर्वक व्यवहार करते।

कम्पनी के कुशासन के इस रंग-ढंग को देखकर क्लाइव भी, जो अब इंग्लैंड से सुधार करने के लिए भेजा गया था, दंग रह गया। उसने लिखा कि मैं केवल इतना ही कहूँगा कि अराजकता, अव्यवस्था, लूट-खसोट एवं भ्रष्टाचार का ऐसा दृश्य बंगाल के सिवा न तो किसी देश में सुना गया और न देखा गया तथा न इतने लालची तरीके से इतने मुनाफे कमाये गये हैं।

क्लाइव ने अपनी गवर्नरी के काल (१७६५-६७ ई०) में कुछ सुधार किये, परन्तु बंगाल में दुराज की दोषपूर्ण पद्धति के कारण जनता वैसी ही पिसती रही जैसी पहले पिसती थी। फलस्वरूप बंगाल की खेती-बारी और उद्योग-धन्धे नष्ट होने लगे और कम्पनी के राज्य में कंगाली छा गयी। ऐसी दुर्दशा में बंगाल को छोड़कर क्लाइव अपने घर इंग्लैंड को लौटा था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्लाइव का महत्व—भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के इतिहास में क्लाइव का बड़ा महत्व है। उसका जीवन भारत में अंग्रेजी राज्य के विकास का एक साकार रूप है। जैसे आरम्भ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारत में एक तुच्छ हैसियत के साथ आयी और उन्नति करते-करते भारत की मालिक बन गयी, वैसे ही आरम्भ में क्लाइव भी एक साधारण व्यक्ति के रूप में इस देश में आया और उन्नति करते-करते बंगाल का गवर्नर और मालिक बन गया। वह भारत में ब्रिटिश राज्य का प्रथम संस्थापक माना जाता है। कम्पनी को एक व्यापारिक संस्था से एक राजसत्ता का रूप देना क्लाइव का ही काम था।

क्लाइव

इतिहास के विद्वानों ने उसके कार्यों और चरित्र की बड़ी विवेचना की है। उनका विचार है कि चाहे क्लाइव महापुरुष न रहा हो, चाहे वह उच्चकोटि के सेनापतियों में न गिना जाय, चाहे वह एक योग्य शासक न समझा जाय, परन्तु इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि वह अपने देश का परम भक्त था। उसने अपने देश के हित के लिए उचित व अनुचित हरएक प्रकार के साधनों का प्रयोग करके भारत में अंग्रेजी राज्य की नींव रखी।

जब वह इंग्लैंड वापस लौटा, तब कुछ उदार विचार के अंग्रेजों ने उसके ऊपर रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार आदि के अनेक आरोप लगाये। उनकी जांच के लिए एक समिति बनायी गयी और उसने भी उसे दोषी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ठहराया, परन्तु ब्रिटिश पार्लामेंट ने क्लाइव की ब्रिटेन के लिए देशभक्ति और अपूर्व सेवाओं की बड़ी प्रशंसा की और उसे सारे आरोपों से मुक्त कर दिया। जहाँ तक भारत की भलाई का सम्बन्ध है क्लाइव का न तो वह उद्देश्य ही था और न उसने उसकी परवाह ही की। उसने तो बंगाल के नवाब को भी नाममात्र का शासक बनाकर उसे प्रजा की भलाई करने के साधनों एवं शक्ति से वंचित कर दिया।

बंगाल में दुर्भिक्ष—१७६९-७० ई० में बंगाल-बिहार में भीषण दुर्भिक्ष पड़ा, क्योंकि लगभग छह महीनों तक अधिकांश जिलों में एक बूंद भी वर्षा नहीं हुई थी। अनाज और चारे का अभाव हो गया। नगरों की सड़कों पर भूखों की भीड़ लगने लगी। दुर्भिक्ष के साथ घातक रोग भी फैल गये। बंगाल में हाहाकार मच गया। बंगाल की तीन करोड़ जनसंख्या में करीब एक तिहाई अर्थात एक करोड़ जनसंख्या दुर्भिक्ष की भेंट हो गयी। कम्पनी के कर्मचारी इस पर भी धन बटोरने में लगे रहे। परन्तु जब थनों में दूध ही नहीं रहा, तब दुहते क्या? कम्पनी की आर्थिक दशा भी बिगड़ गयी। सम्भव था कि उसका दिवाला पिट जाता, यदि इंग्लैंड में बैठे कम्पनी के डायरेक्टर स्थिति को न संभालते। इस दुर्दशा के सुधारने का काम वारेन हेस्टिंग्ज ने किया जिसका वर्णन तुम आगे चलकर पढ़ोगे।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—'दुराज' या 'दोहरा शासन' का क्या अर्थ है ? बंगाल में दोहरा शासन-प्रबन्ध कब कायम हुआ ? उससे बंगाल को क्या क्षति पहुँची ?

२—ईस्ट इण्डिया कम्पनी का क्या उद्देश्य था ? उसने अपने उद्देश्य की पर्ति बंगाल में किस प्रकार की ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३–'दस्तक' का क्या अभिप्राय है ? कम्पनी के कर्मचारियों ने दस्तकों का किस प्रकार दुरुपयोग किया ?

४–अंग्रेज व्यापारी किस प्रकार भारत की कृषि और कारखानों को नष्ट करने का साधन बने ?

५–कम्पनी के गुमाश्तों ने बंगाल के बुनकरों पर क्या अत्याचार किये ? उन लोगों ने प्रतिकार के लिए क्या प्रयत्न किया ?

६–दीवानी मिलने पर कम्पनी के मालगुजारी वसूल करने के ढंग का वर्णन करो। उस ढंग के लाभ और हानियाँ बताओ।

७–भारत के इतिहास में क्लाइव का क्या महत्व है ?

८–भारत में आकर क्लाइव ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सूचना दी थी कि 'मैं इतना ही कहूँगा कि अराजकता, अव्यवस्था, लूट-खसोट एवं भ्रष्टाचार का ऐसा दृश्य बंगाल के सिवा न तो किसी देश में सुना गया और न देखा गया और न इतने लालची तरीके से इतने मुनाफे कमाये गये हैं।' उदाहरण देकर क्लाइव के इस लेख की सत्यता सिद्ध करो।

९–१७६९-७० ई० के बंगाल के दुर्भिक्ष के विषय में क्या जानते हो ?

१०–भारत का एक नक्शा अक्स करो और उसमें १७६५ ई० की नीचे लिखी बातें दिखाओ–

(क) कम्पनी का अंग्रेजी राज्य।

(ख) मराठा संघ का राज्य।

(ग) अफगान राज्य।

(घ) निजाम राज्य।

(ङ) मैसूर राज्य।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११–निम्नलिखित शब्दों और सनों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

बक्सर, पलाशी, मीरजाफर, मीरकासिम, १७५७, १७६४।

सन..................में...........की विजय से बंगाल में अंग्रेजों के पैर जम गये थे। उन्होंने अपनी इच्छा के अनुसार..............को नवाब बनाया। जब मीर जाफर अंग्रेजों की रुपयों की माँगें न पूरी कर सका, तब उसका दामाद...........नवाब बनाया गया। व्यापार में अंग्रेजों की धींगामुश्ती का जब मीर कासिम ने विरोध किया, तब अंग्रेज आग-बबूला हो गये और कलकत्ता कौंसिल ने लड़ाई छेड़ दी। सन्.........में मीर कासिम...........में हारा। अंग्रेजों के पक्ष में पलाशी का काम बक्सर ने पूरा कर दिया।

१२–यह क्यों कहा जाता है कि 'दीवानी के मिलने की तिथि १७६५ ई० से ही भारत में अंग्रेजों का असली राज्याधिकार आरम्भ हो जाता है' ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा अध्याय

अंग्रेजी राज्य की स्थापना (१७७२-१७९९)

पाठ १—अंग्रेजों की मराठों से मुठभेड़

तुम्हें याद होगा कि पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों की बुरी तरह हार हुई थी, परन्तु पेशवा माधवराव ने मराठों के गत गौरव को पुनः स्थापित कर दिया। उसका मरना (१७७२ ई०) मराठा राज्य के लिए बड़ा दुर्भाग्य हुआ। बात यह नहीं थी कि उससे मराठों के साहस या शूरवीरता में कमी आ गयी हो। **माधवराव की मृत्यु के बाद उनमें एकता का अभाव हो गया**। शिन्दे, होल्कर, भोंसले आदि सेनापतियों ने अपने-अपने स्वतन्त्र राज्य खड़े कर लिये। उनमें आपस में ईर्ष्या-द्वेष और मुकाबले की भावनाएँ बल पकड़ गयीं। उनका कोई एक नेता न रहा जिसके झंडे के नीचे सब मिलकर आगे बढ़ते। पेशवा नाममात्र का नेता था और इतना दुर्बल था कि हर कोई सरदार उसे अपनी मुट्ठी में रखने एवं उसकी आड़ लेकर अपना प्रभाव बढ़ाने का प्रयत्न करने लगा। ऐसी स्थिति में अंग्रेजी कम्पनी की बन आयी। वह बंगाल की दौलत से मालामाल हो चुकी थी। उसके पास अपने राज्यविस्तार के लिए धन एवं जन की बिलकुल कमी न थी। इधर भारतीय राजे और नवाब आपस में लड़-कट रहे थे।

माधवराव के मरने पर उसका भाई नारायण राव पेशवा बना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकिन उसके चाचा **राघोबा** ने उसकी हत्या कर दी। इस कुकृत्य से सारा महाराष्ट्र काँप उठा और नाना फडनीस सहित महाराष्ट्र के १२ प्रमुख नेताओं (बारा भाई) ने प्रतिज्ञा की कि हत्यारे राघोबा को शासन नहीं करने देंगे। राघोबा के छक्के छूट गये और उसने मराठा जनमत की परवाह न कर बम्बई के **अंग्रेजों की शरण ली**।

मराठा राजनीतिज्ञ नाना फडनीस

अंग्रेज तो ऐसे अवसर के लिए उत्सुक ही थे। परन्तु बम्बई से अंग्रेज सेनापति पूना पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ, परन्तु कलकत्ता से गवर्नर-जनरल वारेन हेस्टिंग्ज ने युद्ध बन्द करने की आज्ञा भेजी। गवर्नर-जनरल के प्रतिनिधि और बारा भाई समिति में **सन्धि** हुई (१७७६ ई०)। अंग्रेजों ने राघोबा को सहायता न देने का वचन दिया। बम्बई सरकार ने इस सन्धि को पसन्द नहीं किया और पूना पर आक्रमण करने के लिए एक सेना राघोबा के साथ भेज दी (१७७८ ई०)। इस अंग्रेजी सेना को मराठों ने घेर कर परास्त एवं सन्धि करने के लिए विवश किया। राघोबा को महादजी शिन्दे ने कैद कर लिया। **यह बड़गांव की सन्धि** अंग्रेजों के लिए अत्यन्त अपमानजनक थी, अतः उन्होंने बम्बई पहुँचकर सन्धि भंग कर दी। राघोबा भागकर उनसे जा मिला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब अंग्रेजों और मराठों में फिर युद्ध छिड़ गया।

मराठों के कुशल राजनीतिज्ञ नाना फडनीस ने हैदराबाद के निजाम और मैसूर के हैदरअली को अपने पक्ष में करके अंग्रेजों के तीनों प्रदेशों बम्बई, मद्रास और कलकत्ता पर एक साथ आक्रमण करने की योजना बनायी। गवर्नर-जनरल वारेन हेस्टिंग्ज ने बड़े धैर्य और साहस के साथ कूटनीति से काम लिया। उसने निजाम को अपनी ओर मिला लिया, तिस पर भी अन्य मराठे, हैदर और भोंसले अंग्रेजों से भिड़ गये (१७८० ई०)। इस युद्ध में मराठों और अंग्रेजों दोनों की काफी हानि हुई। अत: अंग्रेजों ने भविष्य में राघोबा को कोई सहायता न देने का वचन देकर मराठों से **सालबाई** में सन्धि कर ली (१७८२ई०)।

मराठा सेनानायक महादजी शिन्दे

इस प्रकार अंग्रेजों और मराठों का पहला युद्ध समाप्त हुआ। इसमें अंग्रेजों को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ।

इस युद्ध से दो बातें स्पष्ट हो गयीं—एक तो नाना फडनीस की कूटनीति में निपुणता तथा दूसरी मराठा संघ की आन्तरिक दुर्बलता। सालबाई की सन्धि के बाद लगभग बीस वर्षों तक मराठों और अंग्रेजों में कोई युद्ध नहीं हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजों और मराठों में सन्धि स्थापित होने के बाद **महादजी शिन्दे** अपनी सेना को लेकर उत्तर की ओर बढ़ा और दिल्ली पहुँचा। वहाँ वह मुगल **सम्राट शाह आलम** द्वितीय को कठपुतली बनाकर मराठा साम्राज्य खड़ा करने में लग गया। सम्राट ने शिन्दे को शासन का सारा भार सौंप दिया और पेशवा को अपना एकमात्र प्रतिनिधि 'वजीरे मुतलक' माना। शिन्दे स्वयं पेशवा का नायब बना। मराठे इस प्रकार दिल्ली के कर्त्ता धर्त्ता बन गये।

१७९२ ई० तक शिन्दे ने राजपूतों और जाटों से अधीनता मनवा ली। दो वर्षों बाद उसकी मृत्यु हो गयी (१७९४ ई०)।

महारानी अहल्याबाई

महादजी शिन्दे की मृत्यु के थोड़े दिनों बाद मराठों के होल्कर राज्य की महारानी अहल्याबाई का भी स्वर्गवास हो गया (१७९५ ई०)। तुम पिछली कक्षा में पढ़ चुके हो कि मल्हारराव होल्कर के मरने पर उसकी विधवा अहल्याबाई को होल्कर की गद्दी मिली थी। महारानी ने जिस योग्यता और कुशलता से करीब ३० वर्षों तक राज्य किया, वह वास्तव में बहुत आश्चर्यजनक था। उसके राज्य में कोई आन्तरिक उपद्रव नहीं हुआ और न कोई बाहरी आक्रमण। प्रजा अत्यन्त सुखी रही। इन्दौर एक गाँव से बढ़ कर एक धनी नगर बन गया। यही कारण है कि प्रजा की दृष्टि में अहल्याबाई ईश्वरावतार मानी जाती थीं। एक अनुभवी अंग्रेज शासक ने उसकी गणना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

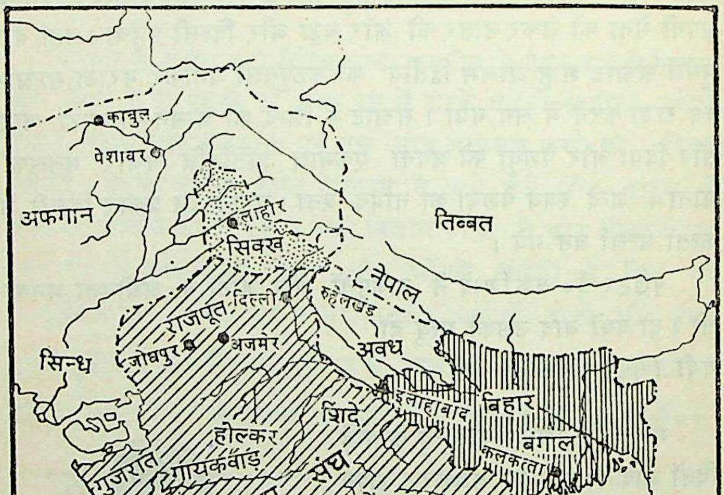

मराठा संघ का राज्य (१७९५ ई०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संसार के पवित्रतम और आदर्श शासकों में की है। उसकी मृत्यु के बाद दो वर्षों तक वृद्ध तुकोजी ने शासन को सँभाले रखा, परन्तु तुकोजी की मृत्यु (१७९७ ई०) के बाद होल्कर राज्य में अराजकता फैल गयी।

१७९६ ई० में बाजीराव द्वितीय पेशवा बना और नाना फडनीस उसका मन्त्री। पेशवा अपने मन में नाना से जलता था। अतः दोनों की आपसी कलह से मराठों का संगठन और शासन ढीला पड़ गया। बाजीराव ने षड्यन्त्र करके नाना को बन्दी बना लिया। इसी बीच जसवन्तराव होल्कर ने अपने को मराठों में सर्वाधिक शक्तिशाली बना लिया। बाजीराव ने मराठा राज्य की दुर्दशा होते देख कर नाना फडनीस को पुनः अपना प्रधान मन्त्री बनाया (१७९८ ई०) उस समय भारत में मराठों के राज्य विशेष रूप से फैले थे और अंग्रेज अपना पक्ष प्रबल करने के लिए कूटनीति एवं बलप्रयोग के द्वारा जी तोड़ प्रयत्न कर रहे थे।

नये गवर्नर-जनरल **वेलेजली** (१७९८ ई०) ने आकर देशी राज्यों में हस्तक्षेप शुरू कर दिया। उसके प्रयत्नों से निजाम के यहाँ अंग्रेजी सेना स्थापित हो गयी (१७९८ ई०)। श्रीरंगपट्टम में हैदरअली का उत्तराधिकारी पुत्र टीपू सुल्तान अंग्रेजों से लड़ते हुए मारा गया (१७९९ ई०)। इस प्रकार हैदराबाद और मैसूर ब्रिटिश आधिपत्य में आ गये और अंग्रेजों की शक्ति चमक उठी। इस सबका विस्तृत, वर्णन आगे किया जायगा।

१८०० ई० में **नाना फडनीस का स्वर्गवास हो गया**। वह अति चतुर और कुशल राजनीतिज्ञ था। जिस समय अंग्रेजों से मराठा राज्य को बचाने के लिए नाना जैसे राजनीतिज्ञ की परम आवश्यकता थी वह इस संसार से चल बसा। अब मराठों की राज्य-नौका भँवर में डगगाने लगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१---पेशवा माधवराव की मृत्यु से मराठा संघ की क्या हानि हुई ?

२--राघोबा कौन था ? उसके विषय में क्या जानते हो ?

३— अंग्रेजों और मराठों के पहले युद्ध का वर्णन निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखकर करो :—

(क) कारण (ख) घटनाएं (ग) सन्धि (घ) परिणाम

४----महादजी शिन्दे कौन था ? उसके विषय में क्या जानते हो ?

५-- महारानी अहल्याबाई कौन थी ? उसके विषय में क्या जानते हो ?

६--नाना फडनीस कौन था ? उसके विषय में क्या जानते हो ?

७—सिद्ध करो कि नाना फडनीस एक चतुर और कुशल राजनीतिज्ञ था ।

८—निम्नलिखित के विषय में क्या जानते हो ?

(क) बड़गाँव की सन्धि ।

(ख) सालबाई की सन्धि ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—मैसूर का विभाजन

तुमने गत पाठों में मैसूर के हैदरअली का नाम बार-बार पढ़ा है। हैदरअली पहले मैसूर के हिन्दू राज्य में सेनापति था। अपनी वीरता और साहस के बल पर वह प्रधान मन्त्री बना और बाद में सुल्तान बन बैठा। मैसूर की गद्दी सँभाल कर उसने देखा कि मैं चारों ओर शत्रुओं से घिरा हूँ। ये शत्रु थे मराठे, निजाम और अंग्रेज। अपने जीते जी उसने बड़ी कूटनीति से काम लिया और शत्रुओं को कभी अपने विरुद्ध एक साथ संगठित न होने दिया। अंग्रेजों से वह बहुत सावधान रहता था। वह अपनी आँखों देख चुका था कि किस प्रकार उन लोगों ने बंगाल एवं अन्य प्रदेशों में अपनी सत्ता कायम कर ली थी।

हैदरअली

(१) अंग्रेजों से उसका पहला संघर्ष उस समय हुआ जब उसने मलबार में नायक सामन्तों को जो अंग्रेजों के मित्र थे, परास्त करके वहाँ अपना अधिकार जमा लिया। अंग्रेज उससे अप्रसन्न हो गये और उसकी बढ़ती शक्ति से भयभीत हुए। उन्होंने एक जहाजी बेड़ा मलबार के कन्नड़ तट पर चढ़ाई करने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के लिए भेजा, परन्तु हैदरअली ने उसे नष्ट कर दिया। इस विजय से उत्साहित होकर हैदरअली ने कर्नाटक पर छापे मारे और एकाएक मद्रास के फाटक तक पहुँच गया। अंग्रेजों को विवश होकर हैदरअली की शर्तों पर सन्धि करनी पड़ी (१७६९ ई०)। इस प्रकार **पहले मैसूर युद्ध में हैदरअली की जीत हुई।**

(२) इस सन्धि में यह निश्चित हुआ था कि यदि कोई तीसरी शक्ति उनमें से किसी पर हमला करेगी, तो वे एक दूसरे की सहायता करेंगे। सन्धि के दो वर्षों बाद पेशवा माधवराव की मराठा सेना ने जब मैसूर पर आक्रमण किया, तब अंग्रेजों ने हैदर की कोई सहायता न की। हैदर मराठों से मिल गया। निजाम भी उन दोनों के साथ हो गया। १७८० ई० में हैदर ने कर्नाटक पर चढ़ाई की। अंग्रेजों ने उसके विरुद्ध दो सेनाएँ भेजीं। दोनों बुरी तरह हारीं। सैकड़ों अंग्रेज मारे गये। बहुत सी युद्ध सामग्री हैदरअली के हाथ लगी और आरकाट पर उसका अधिकार हो गया।

अंग्रेजों के गवर्नर-जनरल वारेन हेस्टिंग्ज ने बड़ी धीरता से काम लिया। उसने वाँडेवाश के विजेता प्रसिद्ध सेनापति आयरकूट की अध्यक्षता में हैदर के विरुद्ध एक सेना भेजी और मराठों को फोड़ा। आयरकूट दो-एक युद्धों में सफल हुआ, परन्तु उनमें अंग्रेजों की बड़ी क्षति हुई। पीछे एक युद्ध में आयरकूट भी बुरी तरह हारा और लौट गया। विजय के उल्लास के उस बीच में हैदरअली की मृत्यु हो गयी (१७८२ ई०)। उसके पुत्र टीपू सुल्तान ने युद्ध जारी रखा। अंग्रेजों ने तब पश्चिमी तट की ओर से उसके राज्य पर धावा बोल दिया। टीपू को उधर जाना पड़ा। अब दोनों ही पक्ष युद्ध से थक गये थे अतः दोनों में **मंगलूर में सन्धि** हो गयी (१७८४ ई०)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोनों ने एक दूसरे के विजित प्रदेश लौटा दिये और अंग्रेजों ने वचन दिया कि वे फिर कभी मैसूर के मामले में हस्तक्षेप न करेंगे ।

टीपू का आचरण अपने पिता से कई बातों में भिन्न था । वह हैदरअली के समान अपने शत्रु को मित्र बनाने अथवा शत्रुओं के गुट को भंग करने में दक्ष न था । हिन्दू प्रजा के साथ भी उसका व्यवहार उचित न था । एक बार तो उसके अत्याचारों से तंग आकर दो हजार हिन्दुओं ने आत्मघात कर लिया ।

(३) टीपू ने तिरुवांकुर के राजा पर चढ़ाई की तब नाना फडनीस, निजामअली और लार्ड कार्नवालिस तीनों के गुट ने मैसूर को चारों ओर से घेर लिया। टीपू वीर, धीर और साहसी था, पर अंग्रेजों, मराठों एवं निजाम की संयुक्त सेनाओं का सामना करना उसकी शक्ति के परे था । उसकी हार पर हार होती गई और शत्रु राजधानी श्रीरंगपट्टम के पास पहुँच गये । विवश होकर उसे **श्रीरंगपट्टम में सन्धि** करनी पड़ी (१७९२ ई०), जिसके अनुसार तीन करोड़ रुपया और करीब आधा मैसूर शत्रुओं के हवाले करना पड़ा । विश्वास के लिए टीपू ने अपने दो पुत्रों को भी बन्धक रूप

टीपू सुल्तान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लार्ड कार्नवालिस टीपू के दो पुत्रों को बन्धक रूप में स्वीकार कर रहा है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में कार्नवालिस को सौंप दिया। पिछले पृष्ठ पर चित्र में यही दृश्य अंकित है।

(४) श्रीरंगपट्टम की अपमानपूर्ण सन्धि के बाद टीपू ने चैन की साँस नहीं ली। वह अंग्रेजों का कट्टर दुश्मन था। उसने अंग्रेजों से पुन: बलपरीक्षा के लिए पहले अपने घर को ठीक किया। कृषि एवं व्यापार की वृद्धि, सेना का संगठन और राजधानी की किलेबंदी बड़ी सावधानी से की गयी। दूसरे, उसने अफगानिस्तान के अमीर जमानशाह तथा फ्रांस के प्रथम कौंसल नैपोलियन के पास अंग्रेजों को इस देश से बाहर निकालने के लिए सन्देश भेजे। अंग्रेज सब कुछ देख रहे थे। टीपू के छह वर्ष इस तैयारी में लग चुके थे।

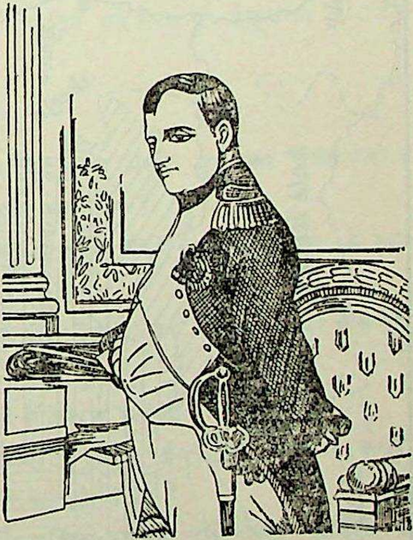

फ्रान्स का प्रथम कौंसिल नैपोलियन

अभी उसे देशी शक्तियों को अपनी ओर मिलाना बाकी था कि १७९९ ई० में गवर्नर-जनरल **वेलेजली ने युद्ध छेड़ दिया।**

अंग्रेजी सेनाओं ने इधर पूर्वी घाटों तथा उधर पश्चिमी घाटों से मैसूर पर दोतरफा चढ़ाई की। टीपू कई जगह हारा और अन्त में अपने दुर्ग में जा घुसा। शत्रुओं ने उसे चारों ओर से घेर लिया। कई

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

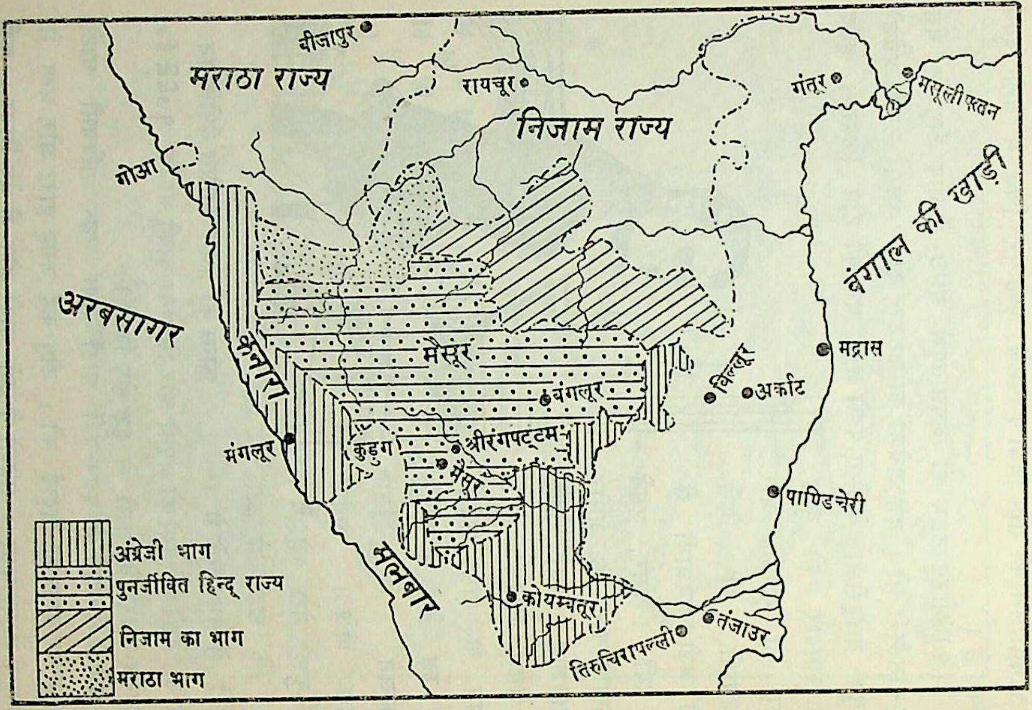

मैसूर विभाजन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिन घेरा चलता रहा। अन्त में **श्रीरंगपट्टम का पतन** हो गया। टीपू दुर्ग के द्वार पर लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। (१७९९ ई०)।

टीपू के वंशजों को पेंशनें-मिलीं। मैसूर के कुछ भाग मित्रों ने बाँट लिये। शेष भाग मैसूर के उस हिन्दू राजा के वंशज को दे दिया गया जिससे हैदर ने छीना था। पृष्ठ २६ पर दिये गये नक्शे में मैसूर का विभाजन दिखाया गया है।

अभ्यास के लिए प्रश्न----

१---अंग्रेजों और हैदरअली के प्रथम मैसूर युद्ध का वर्णन करो। इसके क्या कारण थे ? परिणाम क्या हुआ ?

२---अंग्रेजों और हैदरअली के दूसरे मैसूर युद्ध के विषय में क्या जानते हो ?

३---टीपू कौन था ? उसने अंग्रेजों का किस प्रकार विरोध किया ?

४---टीपू की असफलता के कारण बताओ।

५---श्रीरंगपट्टम की सन्धि (१७९२ ई०) टीपू को क्यों करनी पड़ी ? इस सन्धि से मैसूर की क्या हानि हुई ?

६---टीपू और अंग्रेजों के अन्तिम-युद्ध का नीचे लिखे शीर्षकों में वर्णन करो:—

(क) अंग्रेजों को निकालने के लिए टीपू के प्रयत्न।

(ख) अंग्रेजों से युद्ध की घटनाएं।

(ग) टीपू की वीरगति (१७९९ ई०)।

(घ) मैसूर का विभाजन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३—रुहेलखण्ड और अवध में हस्तक्षेप

तुमने इस पुस्तक के पहले पाठ में कम्पनी के क्लाइव और अवध के नवाब शुजाउद्दौला के बीच वाराणसी की सन्धि का हाल पढ़ा है। **शुजाउद्दौला** अंग्रेजों के हाथ में आ गया था। अत: जब-जब कम्पनी को रुपये की आवश्यकता होती, तब-तब वे रुपये किसी न किसी प्रकार शुजा-उद्दौला से प्राप्त कर लेते थे।

रुहेलखण्ड

१७७१ ई० से ही ऐसी आशंका बनी थी कि मराठे रुहेलों के राज्य पर चढ़ाई करेंगे। अत: उदार एवं प्रजापालक रुहेले सरदार **हाफिज रहमतखाँ** ने अपने राज्य की रक्षा के लिए नवाब अवध से सहायता प्राप्त करने की एक सन्धि कर ली (१७७२ ई०)। निश्चित हुआ कि यदि मराठे रुहेलखण्ड पर आक्रमण करें, तो नवाब उनकी सहायता करेगा एवं रुहेले इसके बदले उसे ४० लाख रुपये देंगे। पेशवा माधवराव की मृत्यु के बाद मराठे अपने घरेलू झगड़ों में फँस गये और उनकी सेनाएं उत्तर भारत छोड़कर दक्षिण को चली गयीं (१७७३ ई०)। आक्रमण न हुआ, परन्तु अवध के नवाब ने ४० लाख रुपये की माँग कर दी। रुपये मिलने में आनाकानी होने पर नवाब बहुत बिगड़ा और रुहेलों का दमन करने के लिए वारेन हेस्टिंग्ज से सैनिक सहा-यता माँगी।

उन दिनों कम्पनी की आर्थिक दशा खराब थी। उसे रुपये की बड़ी आवश्यकता थी। उसने नवाब से एक गुप्त सन्धि कर ली जिसमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तय पाया कि कम्पनी और नवाब की संयुक्त सेनाएँ रुहेलखण्ड पर चढ़ाई करें एवं रुहेलों का राज्य नष्ट कर उसे अवध में मिला दें। इस सहयोग के बदले में नवाब कम्पनी को ४० लाख रुपये और युद्ध का सारा व्यय देगा ।

अब अंग्रेजी सेना ने शुजाउद्दौला के साथ रुहेलखण्ड पर आक्रमण किया (१७७४ ई०)। मीरनपुर कटरा के पास रुहेले बड़ी वीरता से लड़े, पर हार गये। उनका नेता सरदार हाफिज रहमतखाँ मारा गया। रुहेलों का संहार हुआ और रुहेलखण्ड बुरी तरह लूटा गया एवं अवध में मिला लिया गया। कम्पनी को १० लाख और वारेन हेस्टिंग्ज को दो लाख रुपये भेंट में मिले ।

अंग्रेजों और रुहेलों का कोई बैर न था, अत: उनसे युद्ध के लिए इतिहास में हेस्टिंग्ज की बड़ी कटु आलोचना की जाती है ।

अवध

रुहेलों पर अन्याय और अत्याचार का बदला लेने के लिए अवध के नवाब शुजाउद्दौला को एक रुहेले सरदार की बेटी ने मार डाला, तब उसका बेटा आसफउद्दौला नवाब बना । वारेन हेस्टिंग्ज ने उसे अवध में अधिक अंग्रेजी सेना रखने के लिए बाध्य किया तथा उस सेना के व्यय के लिए गोरखपुर एवं बहराइच जिलों की मालगुजारी ले ली। इसके लिए नवाब ने वाराणसी भी कम्पनी को दे दिया। अब हमारे वर्तमान उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिले भी अंग्रेजों के अधिकार में आकर उनके अत्याचार की चक्की में पिसने लगे। बंगाल, बिहार की भाँति यहाँ भी मालगुजारी के ठेके होने लगे। जो किसान लगान अदा न कर पाते थे उनको पिंजरे में बंद कर धूप में छोड़ देना कम्पनी के कारिन्दों का साधारण काम हो गया ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अवध में अंग्रेजी सेना को स्थायी रूप से रखने के साथ ही वह प्रान्त पूरी तरह अंग्रेजों का रक्षित राज्य बन गया था। अंग्रेजों ने वहाँ व्यापार पर अपना एकाधिकार जमा लिया और अंग्रेजी एजेन्ट नवाब के निजी मामलों में हस्तक्षेप करने लगा। फलस्वरूप अवध का नवाब बिगड़ गया। अंग्रेजी सेनाओं के व्यय के भार से नवाब पहले ही दबा जा रहा था। अन्त में नवाब ने परेशान होकर कम्पनी के गवर्नर-जनरल कार्नवालिस के पास अपना दूत भेजकर प्रार्थना की कि कानपूर और फतेहगढ़ से यदि सेनाएं हटा ली जायँ, तो उसका भार कुछ हलका हो जाय। कार्नवालिस ने कहा कि उसे सेनाएं तो रखनी ही पड़ेंगी, परन्तु आगे उसके खर्चे के लिए नवाब को ५० लाख रुपये सालाना से अधिक न देने पड़ेंगे।

कार्नवालिस के चले जाने पर नये अस्थायी गवर्नर-जनरल जान शोर ने अवध में अंग्रेजी फौज बढ़ाने और उसके व्यय के लिए साढ़े पाँच लाख रुपया अदा करने की माँग की। नवाब आसफउद्दौला के आनाकानी करने पर गवर्नर-जनरल जान शोर स्वयं लखनऊ गया और वहाँ नवाब के मन्त्री झाऊलाल को बरखास्त कर दिया। विवश होकर नवाब को जान शोर की बात माननी पड़ी। कहते हैं इसकी घातक चोट उसके दिल पर ऐसी लगी कि वह बीमार पड़ गया और चल बसा (१७९७ ई०)।

अवध की आपत्तियों का अन्त अभी नहीं हुआ। चार वर्षों के बाद कम्पनी के गवर्नर-जनरल लार्ड वेलेजली ने अंग्रेजी सेना और उसके व्यय की रकम को बढ़ाने का प्रस्ताव किया (१८०१ ई०)। नवाब की आनाकानी पर उसने नवाब के विरुद्ध विश्वासघात और कुशासन का आरोप लगाया तथा कानपुर और इलाहाबाद से अंग्रेजी सेनाएं लखनऊ को रवाना कीं। नवाब डर गया और उसने सन्धि कर ली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके अनुसार उसे अपना आधा राज्य रुहेलखण्ड और जिला फर्रुखाबाद कम्पनी को देने पड़े। अवध में अंग्रेजी सेना बढ़ा दी गई और नवाब की सेना कम कर दी गयी।

अभ्यास के लिए प्रश्न----

१—हाफिज रहमतखाँ कौन था? अवध के नवाब और अंग्रेजों ने उस पर क्यों चढ़ाई की?

२—अंग्रेजों का रुहेलों पर चढ़ाई करना क्यों अनुचित था?

३—गोरखपुर और बहराइच के जिले अंग्रेजों को कैसे प्राप्त हुए? कम्पनी के शासन में इन जिलों के किसानों की क्या दशा हुई?

४—अवध में अंग्रेजी सेना रखना किसने और क्यों स्वीकार किया? इसका अवध पर क्या प्रभाव पड़ा?

५—नवाब आसफउद्दौला और अंग्रेजों के बीच कैसे सम्बन्ध थे?

६—रुहेलखण्ड एवं जिला फर्रुखाबाद अंग्रेजों के अधिकार में किस प्रकार आये?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ४—हैदराबाद में हस्तक्षेप और तमिलनाड (कर्नाटक*) पर अधिकार

तुम्हें याद होगा कि टीपू के साथ पहले युद्ध में अंग्रेजों की सहायता निजाम और मराठों ने की थी। उस समय निजाम को गवर्नर-जनरल लार्ड कार्नवालिस ने वचन दिया कि यदि आवश्यकता पड़ी, तो अंग्रेज उसकी सहायता करेंगे (१७६० ई०)।

हैदराबाद में हस्तक्षेप

हैदराबाद के निजाम को सदा मराठों का भय बना रहता था, अतः उसने एक ओर तो अंग्रेजों से मित्रता की और दूसरी ओर फ्राँसीसी जनरल रेमों की मदद से अपनी सेना को बढ़ा कर और उसे यूरोपीय ढंग से कवायद आदि सिखा कर अच्छी प्रकार संगठित कर लिया। अब उसे अपनी शक्ति का बड़ा अभिमान हो गया। वह कई वर्षों से मराठों को चौथ नहीं दे रहा था। जब मराठा राजदूत उसके दरबार में चौथ लेने के लिए पहुँचा, तो उसके दीवान ने नाना फडनीस और पेशवा को अपशब्द कहे। मराठों ने उसे अपना राष्ट्रीय अपमान माना। उनके सारे सेनापति एकत्र हो गये और निजाम पर धावा बोल दिया। निजाम ने अंग्रेज गवर्नर-जनरल जान शोर से सहायता माँगी, परन्तु शोर की नीति देशी राजाओं और

***कर्नाटक वास्तव में मैसूर प्रदेश का नाम है। अंग्रेज इतिहासकारों ने तमिलनाड प्रदेश को 'कर्नाटक' का नाम दे दिया। तब से वही नाम इतिहास में चला आता है।**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवाबों के झगड़ों में तटस्थ रहने की थी। अतः उसने कोरा जवाब दे दिया।

मराठों की विशाल सेना ने पहली ही लड़ाई में निजाम को भगा दिया। निजाम को खर्डा के कोटले में शरण लेनी पड़ी और ३ करोड़ रुपये, अपना आधा राज्य एवं अपना दीवान मराठों को सौंपना पड़ा (१७६५ ई०)। खर्डा में पराजय से निजाम की प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल गयी। अपने ऊपर विपत्ति के समय सहायता न मिलने के करण वह अंग्रेजों से घृणा करने लगा। अब वह अंग्रेजों पर विश्वास करने को तैयार न था। अतः उसने अपने राज्य से अंग्रेजी सेनाओं को निकाल दिया एवं फ्राँसीसियों का आश्रय लेना आरम्भ किया। अनेक फ्राँसीसी सैनिकों को अपने यहाँ नौकर रखा और उसकी सहायता से अपनी सेना का पुनर्निर्माण किया।

लार्ड वेलेजली
(गवर्नर-जनरल १७६८-१७०५ ई०)

इसी समय यूरोप में फ्राँस की राज्यक्रान्ति चल रही थी। सारा यूरोप और इंग्लैंड नैपोलियन से भयभीत था। अतः कम्पनी के गवर्नर-जनरल **लार्ड वेलेजली** को भारत में निजाम हैदराबाद और फ्राँसीसियों की मित्रता असह्य हो गयी। वह जान शोर की तटस्थ रहने की नीति के विरुद्ध था। उसका लक्ष्य भारत में फ्राँसीसियों के प्रभाव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को समूल नष्ट करके देशी राजाओं और नवाबों को अंग्रेजी सत्ता के वशीभूत रखना था। उसने अपने शासनकाल (१७६८-१८०५ ई०) में सबसे पहले हैदराबाद के निजाम को वशीभूत किया। अपने उद्-देश्य को पूरा कराने के लिए वेलेजली ने षड्यन्त्रों और कूटनीति से काम लिया। उसने निजाम के मन्त्री को अपनी ओर मिलाकर धीरे-धीरे हैदराबाद से फ्राँसीसी सेनाओं को निकलवा दिया और उसके स्थान पर निजाम को हैदराबाद में अंग्रेजी सेनाएं रखने के लिए बाध्य किया (१७६८ ई०)। इस सेना का खर्च भी निजाम ही को देना पड़ा।

दो वर्षों बाद वेलेजली ने निजाम से एक दूसरी सन्धि की जिसके अनुसार हैदराबाद में अंग्रेजी सेना बढ़ा दी गयी। उसके खर्च के लिए निजाम को वह सारा प्रदेश कम्पनी को देना पड़ा जो उसे मैसूर युद्ध के फलस्वरूप मिला था। **निजाम अब अंग्रेजों का आश्रित हो गया था।**

तमिलनाड पर अधिकार

आरकाट का नवाब मुहम्मदअली अंग्रेजों की सहायता से अपने पिता के स्थान पर नवाब बना था, परन्तु वैधानिक रूप से वह निजाम का सामन्त माना जाता था। कम्पनी और शाहआलम के बीच इला-हाबाद की सन्धि (१७६५ ई०) में एक शर्त यह भी थी कि नवाब मुहम्मदअली को निजाम से स्वतन्त्र माना जायगा। इसके बदले मुहम्मदअली ने तमिलनाड की रक्षा का भार कम्पनी को सौंप कर अपने कई जिलों की मालगुजारी उसे दे डाली थी। कम्पनी ने कई वर्षों के युद्ध का व्यय भी उसके मत्थे मढ़ दिया था जिसे चुकाने के लिए वह कम्पनी के नौकरों से उधार लेता गया। जब मुहम्मदअली उनके ऋणों को न चुका सका, तब उसने अपने अंग्रेज महाजनों को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तंजाउर के राजा को लूटकर रुपया वसूल करने की अनुमति दे दी। अंग्रेजी सेना ने तंजाउर पर आक्रमण करके ४० लाख रुपये प्राप्त किये (१७७१ ई०), परन्तु इतने से भी अंग्रेजों का भुगतान पूरा न हुआ।

मुहम्मदअली को निरन्तर अंग्रेजों को रुपया देना पड़ता था। इस तरह उसका कोष बिलकुल खाली हो गया। मुहम्मदअली की मृत्यु (१७९५ ई०) के वाद उसके पुत्र के सामने भी अंग्रेज महाजनों के **ऋणों** तथा उन पर ब्याज अदा करने का प्रश्न बना रहा। कहा जाता है कि नये नवाब ने गुप्त रूप से टीपू सुल्तान के साथ षड्यन्त्र किया। अतः टीपू से निबट कर **वेलेजली ने तमिलनाड का मुल्की और फौजी शासन अपने हाथों में ले लिया (१८०१ ई०)।**

लार्ड वेलेजली ने अपने शासनकाल में मराठों से भी मोर्चा लिया जिसका विवरण तुम आगे पढ़ोगे। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित करने में वेलेजली ने बड़ा काम किया। उसने कम्पनी के भारतीय शत्रुओं को पछाड़ा तथा फ्रांसीसियों से उसकी रक्षा की। कम्पनी के राज्य का विस्तार करके उसने मद्रास प्रेसीडेंसी को बढ़ाया एवं आगरा प्रान्त को बनाया। इस प्रकार **वेलेजली ने कम्पनी के राज्य को दोगुना कर दिया।**

वेलेजली बड़ा चतुर राजनीतिज्ञ था। उसने टीपू सुल्तान का अन्त करके मैसूर में हिन्दू राज्य की स्थापना की जिससे मैसूर और हैदराबाद का भी गठबन्धन न हो सके '। आगे चलकर तुम पढ़ोगे कि वेलेजली ने किस प्रकार मराठों के विभिन्न राज्यों को अलग कर दिया। उसने दिल्ली के मुगल सम्राट पर भी अपना नियन्त्रण कायम करके **कम्पनी को भारत में सर्वोच्च सत्ताधारी बना दिया।** यही कारण है कि वेलेजली की गिनती भारत में अंग्रेजी राज्य के निर्माताओं में की जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास के लिए प्रश्न----

१—गवर्नर-जनरल जान शोर की क्या नीति थी ? उसने निजाम को मरठों के विरुद्ध सहायता क्यों नहीं दी ?

२—गवर्नर-जनरल वेलेजली और जान शोर की नीति में क्या अन्तर था ?

३—गवर्नर-जनरल वेलेजली और निम्नलिखित भारतीय राजाओं के सम्बन्धों के विषय में क्या जानते हो:—

(क) हैदराबाद का निजाम ।

(ख) टीपू सुल्तान ।

(ग) अवध का नवाब ।

(घ) तमिलनाड का नवाब ।

४— वेलेजली ने ब्रिटिश साम्राज्य की क्या सेवा की ?

निम्नांकित शब्दों और सनों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:—

खर्डा, शत्रु भारत, १७६५, १७६८, १७६६, १८०१ ।

…………ई० में निजाम ने मराठों से हार कर…………के कोटले में शरण ली और उसे ३ करोड़ रुपया एवं अपना आधा राज्य मराठों को सौंपना पड़ा । वेलेजली ने पहले अपनी सहायक सन्धि का जादू उसी पर चलाया (………ई०)। टीपू अंग्रेजों का कट्टर……था और उन्हें… से बाहर निकालने के लिए प्रयत्न कर रहा था । हैदराबाद को अपनी ओर मिलाने के बाद वेलेजली ने टीपू से युद्ध छेड़ दिया । युद्ध में टीपू मारा गया (………ई०) । …… में वेलेजली ने तमिलनाड पर अधिकार स्थापित कर दिया ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ५—कम्पनी के शासन पर पार्लमेंट का अंकुश

ईस्ट इण्डिया कम्पनी एक स्वतन्त्र किन्तु केवल व्यापारिक कम्पनी थी। धीरे-धीरे भारत में उसका रूप बदलता गया। वह एक मुख्य राजनीतिक शक्ति बन गयी। सेना–संचालन, युद्ध, सन्धि, शासन प्रबन्ध आदि सभी काम उसके हाथ में आ गये। स्वभावतः एक व्यापारियों की संस्था इन कामों को अच्छी तरह नहीं कर सकती, उसे तो सदा अपनी जेबें गरम करने की चिंता रहती है। इसी धुन में कम्पनी के कर्मचारियों के हाथों भारत की कृषि, व्यापार आदि की जो दुर्दशा हुई तथा भारतीय किसानों, कारीगरों एवं व्यापारियों के ऊपर जो भीषण जुल्म ढाये गये, उनके समाचारों से ब्रिटिश गवर्मेन्ट भी दहल गयी। उस समय कम्पनी की ये काली करतूतें सारी अंग्रेज जाति के कलंक का कारण बन गयीं।

पार्लमिंट की एक विशेष और गुप्त समिति कम्पनी के कामों की जाँच के लिए बैठायी गयी। उसकी रिपोर्ट से विदित हुआ कि कम्पनी के कर्मचारी कैसे-कैसे अत्याचार करते थे तथा व्यापार के अलावा कैसे भेंटें, रिश्वतें एवं जागीरें आदि लेते थे। पार्लमिंट की जाँच का एक कारण और भी था। पहले हैदरअली और फिर मराठों के साथ युद्ध में कम्पनी का इतना रुपया व्यय हो चुका था कि कम्पनी का दिवाला खिसकने वाला था और कम्पनी को सरकारी सहायता की आवश्यकता थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रेगूलेटिंग एक्ट (१७७३ ई०)

कम्पनी के कामों को ठीक-ठाक (रेगूलेट) करने के लिए एक कानून बनाया गया जो १७७३ ई० के **रेगूलेटिंग एक्ट** के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनुसार एक तो बंगाल-बिहार के मुल्की और फौजी शासन के लिए कलकत्ते में गवर्नर-जनरल रखा गया। उसके साथ चार सदस्यों की एक कौंसिल थी। दूसरे, बंगाल और मद्रास की प्रेसीडेंसियों को गवर्नर-जनरल के अधीन किया गया। तीसरे, अपने कामों के लिए गवर्नर-जनरल एवं कौंसिल को पार्लमिंट के प्रति उत्तरदायी ठहराया गया। कम्पनी के डायरेक्टरों के लिए आवश्यक हो गया कि वे मालगुजारी और मुल्की व फौजी शासन के सम्बन्ध में सब कागज-पत्र ब्रिटिश गवर्मेंट के सामने रखा करें।

रेगूलेटिंग एक्ट के अनुसार बंगाल के गवर्नर वारेन हेस्टिंग्ज को पहला गवर्नर-जनरल बनाया गया (१७७४ ई०)। रेगूलेटिंग एक्ट में न्याय की व्यवस्था भी थी। उसके लिए कलकत्ता में एक सुप्रीम कोर्ट (उच्चतम न्यायालय) स्थापित किया गया जिसमें नियुक्तियां कम्पनी नहीं वरन् ब्रिटिश गवर्मेंट करती थी। उसमें चार अंग्रेज जज नियुक्त हुए। गवर्नर-जनरल का इन जजों पर कोई अधिकार नहीं था। इसके अतिरिक्त कम्पनी के कर्मचारियों को भेंटें, रिश्वतें आदि लेने की स्वतन्त्रता न रही। उनका कोई अधिकारी लाइसेन्स के बिना अपना निजी व्यापार भी नहीं कर सकता था।

इस प्रकार **रेगूलेटिंग एक्ट ने कम्पनी को पार्लमिंट के अधीन कर दिया।** अब कम्पनी के कामों पर पार्लमिंट का अंकुश हो गया। यह अंकुश और नियन्त्रण धीरे-धीरे बढ़ता गया। जैसे-जैसे किसी एक कानून के दोष प्रकट होते गये, वैसे-वैसे उन्हें दूर करने के लिए उचित विधान किये जाते रहे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रेगूलेटिंग एक्ट के अनुसार अमल करने पर वह एक्ट व्यवहार में दोषपूर्ण सिद्ध हुआ। अनुभव से मालूम हुआ कि रेगूलेटिंग एक्ट ने न तो ब्रिटिश गवर्मेन्ट का पूर्ण नियन्त्रण कम्पनी पर, न कम्पनी के डाइरेक्टरों का कम्पनी के कर्मचारियों पर, न गवर्नर-जनरल का उसकी कौंसिल पर तथा न कलकत्ता प्रेसीडेंसी का मद्रास और बम्बई की प्रेसीडेंसियों पर स्थापित किया है। अतः शीघ्र ही नये एक्ट की आवश्यकता अनुभव हुई, परन्तु अंग्रेज राजनीतिज्ञ उस समय अमेरिका के स्वातन्त्र्य युद्ध में उलझे थे। उससे निबट कर उनका ध्यान विशेष रूप से भारत की ओर गया। वह समझते थे कि भारत में शासन व्यवस्था न सुधारी गयी, तो वहाँ भी अंग्रेजी आधिपत्य समाप्त हो जायगा। अतः **पिट के इण्डिया एक्ट** में कम्पनी को पार्लमिंट के पंजे में जकड़ने के लिए नयी व्यवस्थाएं रखी गयीं।

पिट का इण्डिया एक्ट (१७८४ ई०)

इस एक्ट के अनुसार कम्पनी का **शासन सम्बन्धी सब काम ब्रिटिश गवर्मेंट की अधीनता में चला गया**। ब्रिटिश सम्राट की ओर से नियुक्त ६ सदस्यों की एक नियन्त्रण समिति (**बोर्ड आफ कन्ट्रोल**) इंगलैंड में स्थापित की गयी। कम्पनी के डाइरेक्टर मालगुजारी तथा मुल्की एवं फौजी शासन के सब विषयों में बोर्ड आफ कन्ट्रोल के अधीन थे। इसके अतिरिक्त एक गुप्त समिति (**कमेटी आफ सीक्रेसी**)

पिट
इंगलैंड का प्रधान मन्त्री

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थापित की गयी जो डाइरेक्टरों को सूचित किये बगैर बोर्ड के आदेश भारत को भेजती थी। भारत के गवर्नर कोई युद्ध या युद्ध विषयक सन्धि गुप्त समिति के आदेश के बिना नहीं कर सकते थे।

अब गवर्नर जनरल की कौंसिल के सदस्यों की संख्या तीन कर दी गयी। बम्बई और मद्रास के गवर्नर पूर्ण रूप से गवर्नर-जनरल की अधीनता में आ गये। गवर्नरों और सेनापति की नियुक्ति ब्रिटिश गवर्मेन्ट ने अपने हाथ में रखी।

यह शासन व्यवस्था १८५७ ई० के भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम तक चलती रही। उसके बाद कम्पनी का कोई अधिकार न रहा। तब भारत का शासन ब्रिटिश पार्लामेंट ने सीधा अपने हाथों में ले लिया।

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१—ईस्ट इण्डिया कम्पनी का रूप व्यापारिक से राजनीतिक किस प्रकार हो गया ?

२—पार्लमिंट ने रेगूलेटिंग एक्ट (१७७३ ई०) क्यों पास किया ?

३—भारत का पहला गवर्नर-जनरल कौन था ? उसके क्या अधिकार थे ?

४—रेगूलेटिंग एक्ट ने कम्पनी के कामों में क्या परिवर्तन किया ?

५—रेगूलेटिंग एक्ट से भारत में कम्पनी के राज्य में क्या सुधार किये गये ? उसमें गवर्नर-जनरल और सुप्रीम कोर्ट का क्या सम्बन्ध रखा गया ?

६—रेगूलेटिंग एक्ट में क्या दोष पाये गये ?

७—पिट का इण्डिया एक्ट (१७८४ ई०) बनाने की क्या आवश्यकता पड़ी ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८–पिट के इण्डिया एक्ट से कम्पनी के राज्य में क्या सुधार किये गये ?

९–ब्रिटिश पार्लमेंट ने भारत का शासन सीधा अपने हाथ में कब लिया ?

१०–निम्नलिखित के विषय में क्या जानते हो–

(क) सुप्रीम कोर्ट।

(ख) बोर्ड आफ कन्ट्रोल।

(ग) कमेटी आफ सीक्रेसी।

११–नीचे लिखी इबारत में रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

कम्पनी के कार्यों को ठीक-ठाक करने के लिए एक कानून बनाया गया जो १७७३ ई० के.....................के नाम से प्रसिद्ध है। रेगूलेटिंग एक्ट पर अमल करते समय उसमें कुछ दोष प्रकट हुए जिन्हें ठीक करने के लिए १७८४ ई० में.......................पास किया गया। इस एक्ट के अनुसार...........कम्पनी का शासन सम्बन्धी सब काम ब्रिटिश सरकार की अधीनता में चला गया। यह शासन व्यवस्था.....................ई० के भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम तक चलती रही।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ६—शासन में सुधार

तुमने इस पुस्तक के पहले अध्याय में कम्पनी के प्रारम्भिक कुशासन का इतिहास पढ़ा है। इनका सुधार आवश्यक था। इस सुधार के काम को वारेन हेस्टिंग्ज ने किया, जब वह बंगाल का गवर्नर नियुक्त हुआ (१७७२ ई०)। हेस्टिंग्ज शासन-सुधारों के विषय में बड़ा सुलझा हुआ शासक सिद्ध हुआ। उसने शासन के सभी क्षेत्रों में सुधार किये। अपने सुधारों के द्वारा वारेन हेस्टिंग्ज ने भारत में उस अंग्रेजी राज्य की नींव को दृढ़ कर दिया जो क्लाइव ने धोखे और बेईमानी से रखी थी।

वारेन हेस्टिंग्ज के सुधार

सबसे पहले हेस्टिंग्ज ने क्लाइव के **दोहरे शासन की पद्धति (दुराज)** का अन्त कर सीधे अंग्रेजी शासन की स्थापना की। उसके लिए बंगाल के नवाब को शासन के काम से पूर्णतः मुक्त कर दिया गया। अतः अब नवाब का रूप केवल एक पेंशन-भोगी का रह गया।

हेस्टिंग्ज ने कलकत्ते में एक **बोर्ड आफ रेवेन्यू कायम** किया और उसके अधीन हर एक जिले में एक **कलक्टर** नियुक्त किया गया। कलकत्ते में दो **अदालतें** एक **सदर दीवानी** और दूसरी **सदर निजामत** स्थापित कीं। उनके निरीक्षण में कलक्टरों को जिलों में दीवानी के मुकदमे और पुराने देशी अधिकारियों को फौजदारी के मुकदमे सुनने और निर्णय करने का कार्य सौंपा। हेस्टिंग्ज ने शासन-व्यवस्था में जिले को विशेष महत्व दिया और यह महत्व भारत के शासन संविधान में अब तक चला आता है। उसकी व्यवस्था के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुसार हरएक जिले में एक अंग्रेज कलक्टर रखा गया जो माल विभाग का शासक था।

भूमि के लगान की व्यवस्था वारेन हेस्टिंग्ज ने पाँचसाला की अर्थात लगान का प्रबन्ध पाँच सालों के लिए किया गया और पिछले वर्षों के लगान के आधार पर उसकी एक निश्चित दर नियत कर दी गयी (१७७२ ई०)। एक ऐसी समिति बनायी गयी जिसने बंगाल के प्रमुख जिलों में घूम-घूम कर भूमि का बन्दोबस्त किया। जो जमींदार पाँचसाला प्रबन्ध स्वीकार न करते थे, उनकी भूमि पाँच वर्षों के लिए ऊँची बोली बोलने वाले को दे दी जाती थी। इससे किसानों को बड़ा कष्ट हुआ, क्योंकि जो नये जमींदार केवल पाँच सालों के लिए भूमि के स्वामी बनते थे, वे किसानों से अधिक से अधिक धन प्राप्त करने का प्रयत्न करते थे।

वारेन हेस्टिंग्ज

भूमि के लगान की पाँचसाला व्यवस्था में सफलता न मिलने पर कम्पनी केवल एक वर्ष के लिए जमींदारों को लगान वसूल करने का ठेका देने लगी (१७७७ ई०)। यह योजना भी पूर्णरूप से सफल नहीं हुई। अतः आगे चलकर लार्ड कार्नवालिस के समय में फिर भूमि और लगान के विषय में नयी व्यवस्था करनी पड़ी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लार्ड कार्नवालिस के सुधार

हेस्टिंग्ज के समय की लगान व्यवस्था के फलस्वरूप भूमि की उपजशक्ति कम होती गई और किसानों का कष्ट बढ़ने लगा। कम्पनी की आय में घाटा होने लगा। अत: कार्नवालिस ने उसके सुधार का संकल्प किया। इंग्लैंड की सरकार ने भी इसके लिए उसे अनुमति दे रखी थी।

उसने बंगाल में भूमि का **स्थायी प्रबन्ध** (इस्तमरारी बन्दोबस्त) किया (१७९३ ई०)। इस प्रबन्ध के अनुसार जमींदार जिस भूमि का लगान वसूल करते थे, उसके स्वामी मान लिये गये। लगान हमेशा के लिए निश्चित कर दिया गया। भूमि की उन्नति से जो अधिक आय होती उस पर भी जमींदार का अधिकार माना गया। किसानों की रक्षा के लिए उनसे लिया जाने वाला लगान भी पट्टे द्वारा निश्चित कर दिया गया।

कार्नवालिस और कम्पनी के अधिकारियों ने सोचा था कि स्थायी प्रबन्ध से कम्पनी की वार्षिक आमदनी निश्चित हो जायगी। उसे बार-बार बन्दोबस्त का झंझट न करना पड़ेगा। जमींदार भी भूमि के मालिक और उसकी उन्नति से खुद ही लाभान्वित होने के कारण भूमि-सुधार और खेती की उन्नति करेंगे। इसके अलावा अंग्रेजी शासन को एक बड़ा लाभ यह होगा कि जमीदारों के एक ऐसे वर्ग का विकास हो जायगा जो अंग्रेजों पर निर्भर, उनका भक्त एवं देशी विद्रोहों के दमन में सहायक होगा।

कार्नवालिस का उद्देश्य अनेक अंशों में सफल हुआ। बंगाल भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का सबसे धनी प्रान्त बन गया। जनता में अंग्रेजों के स्थायी राज्य की भावना पैदा हो गयी। जनता में एक राजभक्त वर्ग भी पैदा हो गया। कृषि और व्यापार की उन्नति हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धनी और सम्पन्न जमींदारों ने बंगाल में शिक्षा और संस्कृति की उन्नति में सहायता दी।

आगे चलकर जब शक्तिशाली जमींदारों ने विलासमय जीवन बिताना और किसानों से मनमाना लगान लेना शुरू किया, तो स्थायी प्रबन्ध में दोष दीखने लगे। अदालतें जमींदारों के अन्याय और कठोर व्यवहार को रोकने के लिए अवश्य मौजूद थीं, परन्तु उनमें इतना व्यय होता था एवं न्याय में इतनी देर लगती थी कि सब लोग उनसे फायदा नहीं उठा पाते थे।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—वारेन हेस्टिंग्ज ने दोहरे शासन की पद्धति में क्या सुधार किया ?

२—वारेन हेस्टिंग्ज ने हर जिले में किस अधिकारी की नियुक्ति की ?

३—कलक्टर कौन था ? उसका क्या काम था ?

४—वारेन हेस्टिंग्ज ने कलकत्ते में कौन सी अदालतें कायम कीं ?

५—सदर दीवानी और सदर निजामत अदालतों का क्या काम था?

६—वारेन हेस्टिंग्ज की स्थापित की हुई शासन व्यवस्था की कौन सी बात अब तक भारत के शासन-विधान में चली आती है ?

७—वारेन हेस्टिंग्ज ने भूमि के लगान की क्या व्यवस्था की।

८—वारेन हेस्टिंग्ज की भूमि की पाँचसाला व्यवस्था क्यों असफल हुई ?

९— लार्ड कार्नवालिस के समय भूमि और लगान के विषय में क्या व्यवस्था की गयी ?

१०—इस्तमरारी बन्दोबस्त किसे कहते हैं ?

११—स्थायी प्रबन्ध या इस्तमरारी बन्दोबस्त से किन-किन लाभों की आशा की गयी थी ?

१२—स्थायी प्रबन्ध का क्या परिणाम हुआ ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ७—देशी शिल्पों की अवनति

सत्रहवीं शती में भारत का **कपड़े बनाने** का **शिल्प** संसार में सर्वोत्तम था। परन्तु ईस्ट इंडिया कम्पनी के कारिन्दों के एकाधिकार और अत्याचारों से पीड़ित बहुत से भारतीय बुनकरों ने परम्परा से चला आया अपना उद्योग- धन्धा छोड़ दिया। बंगाल जैसे प्रदेश में, जो वस्त्रों का भंडार था, जुलाहों की असाधारण कमी हो गयी। इसके फलस्वरूप सूती और रेशमी शिल्प की अवनति हुई। हेस्टिंग्ज एवं कार्नवालिस दोनों ने कम्पनी के कारिन्दों के अत्याचारों की रोकथाम करने और शिल्प को पुनः जीवित करने की कोशिश की, परन्तु क्षति इतनी अधिक हो चुकी थी कि वस्त्र शिल्प अपने पहले वैभव को प्राप्त नहीं कर सका।

वस्त्र शिल्प की बरबादी का एक दूसरा कारण और था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के द्वारा सूती और रेशमी कपड़ा इंग्लैंड में पहुँचने पर वहाँ की जनता ने उसे बहुत पसन्द किया। उस समय तक वहाँ केवल ऊनी कपड़ा ही बनाया और पहना जाता था। भारत के बने वस्त्रों की बढ़ती हुई लोकप्रियता से इंग्लैंड के नेता और वस्त्रशिल्पी बड़े भयभीत हुए। उन लोगों ने कानून के द्वारा भारतीय वस्त्र का आयात रोकने के लिए १७०० ई० और १७२० ई० में दो कानून पास किये जिनमें कहा गया कि भारत से आये हुए सूती और रेशमी वस्त्र **न तो इंग्लैंड में पहने जा सकेंगे और न उनका कोई उपयोग ही किया जायगा**। तब ईस्ट इण्डिया कम्पनी वह कपड़ा यूरोप के अन्य देशों में बेचने लगी। फलतः इंग्लैंड का बाजार हाथ से जाता रहा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उस समय भारत में वस्त्रों पर **छपाई का काम** भी इतना सुन्दर होता था कि सारे संसार में उसकी धूम थी। इंग्लैड के निवासी विशेषत: स्त्रियाँ बहुत अधिक मूल्य देकर भी भारतीय छींटों को खरीदना पसन्द करती थीं। इंग्लैंड के छीपियों ने कम्पनी के डाइरेक्टरों के पास एक प्रार्थनापत्र भेजकर कई सालों के लिए इंग्लैंड में सूती छींटों का आयात ही बन्द करवा दिया (१७८० ई०)।

औद्योगिक क्रान्ति

भारत के वस्त्रशिल्प पर अंग्रेजी कारिन्दों के अत्याचारों और अंग्रेजी कानूनों से भी बड़ी चोट मशीनों से बने माल ने की। अठारहवीं शती का अन्त होने के पहले ही इंग्लैंड में अद्‌भुत आविष्कार हुए जिनके फलस्वरूप वहाँ उद्योग धन्धों में अपूर्व और आश्चर्यजनक उन्नति हुई इस उन्नति को इतिहास में 'औद्योगिक क्रान्ति' का नाम दिया गया है। इसका वर्णन अत्यन्त रोचक है।

अठारहवीं शती के पूर्वार्ध में इंग्लैंड के चरखे अथवा करघे पुराने ढंग के थे, परन्तु अठाहरवीं शती के उत्तरार्ध में वहाँ के शिल्पियों ने चरखे और करघे दोनों को उन्नत और अधिक उपयोगी बना लिया।

चरखे में क्रान्ति

एक शिल्पी ने ऐसा **चरखा** निकाला जिसमें आठ तकुए एक चक्र से चलते थे तथा कई पूनियों को चिमटों से एक ही आदमी पकड़ सकता था। इसके कुछ समय बाद एक दूसरे शिल्पी ने कातने का एक ऐसा यन्त्र बनाया जो पनचक्की की शक्ति से चलता था। तीसरे शिल्पी ने इन दोनों अविष्कारों को मिला दिया (१७७९ ई०)। अब उस देश में इतना सूत तैयार होने लगा कि हाथ के करघे इतना अधिक नहीं बुन पाते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करघे में क्रान्ति

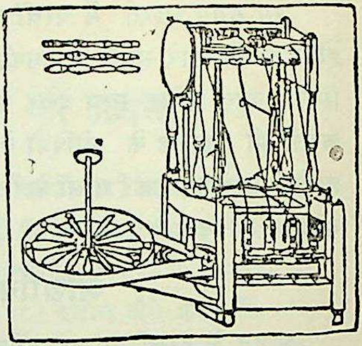
करघा (पावर लूम)

ऐसी दशा में एक शिल्पी ने ऐसा करघा (पावर लूम) बना डाला जो अश्वशक्ति से चल सके। दूसरे शिल्पी ने उसे भाप की शक्ति से चला दिया (१७८६ ई०) । इसी बीच वस्त्र-शिल्प के अन्य काम जैसे ओटना, धुनना, रंगना, छापना आदि भी यन्त्रों के द्वारा होने लगे। इस प्रकार अब वस्त्रों के बनाने के अनेक कारखाने स्थापित हो गये।

औद्योगिक क्रान्ति का प्रभाव

मशीनों के बने सस्ते माल के सामने भारत के हाथ के शिल्प क्या ठहर सकते थे ? अतः व्यापारिक ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने तैयार पक्के माल की जगह भारत से कच्चे माल अर्थात कपास को ले जाना शुरू किया। तत्पश्चात उसने मानचेस्टर के विदेशी कपड़े से बंगाल के बाजार भर दिये। इस प्रकार अठाहरवीं शती के अन्त तक भारत से कच्चे माल का निर्यात और उसमें मशीन के माल का आयात होने लगा। अंग्रेज शासकों को क्या पड़ी थी जो नये यन्त्रों को भारत में मंगवा कर इस देश के दो ढाई हजार वर्षों पुराने उद्योग-धन्धे एवं व्यवसाय की रक्षा करते ! भारत का अधिकांश भाग अब भी भारतीयों (मराठों और सिक्खों) के हाथों में था। उन्हें भी यह न सूझा कि इंग्लैंड के नये आविष्कारों का अपने देश में प्रचलन करते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१---सत्रहवीं शती में भारत में शिल्पों की क्या दशा थी ?

२---यूरोपीय व्यापारी कम्पनियां भारत से क्या-क्या माल बाहर ले जाती थीं ?

३---अंग्रेज शिल्पियों ने भारत के बने वस्त्रों का विरोध इंग्लैंड में क्यों किया ?

४---भारत के शिल्प पर औद्योगिक क्रान्ति का क्या प्रभाव पड़ा ?

५---औद्योगिक क्रान्ति का क्या अर्थ है ?

६---अठारहवीं शती में इंग्लैंड में चरखे के विषय में क्या क्रान्ति हुई ?

७---करघे के विषय में इंग्लैंड के शिल्पियों ने क्या उन्नति की ?

८---अठारहवीं शती में भारत के आयात-निर्यात में क्या परिवर्तन हो गया ?

९---कम्पनी ने अपने भारतीय राज्य में मशीनों का प्रचलन क्यों नहीं किया ?

१०--- मशीनों के आविष्कारों का भारत के उद्योग-धन्धों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

११---रिक्त स्थानों की पूर्ति करो---

सत्रहवीं शती में भारत का कपड़े का व्यापार संसार में............ था। परन्तु ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कारिन्दों के अत्याचारों से पीड़ित अनेक बुनकरों ने.........छोड़ दिया।

भारत के वस्त्रशिल्प का नाश करने के लिए १७०० ई० और १७२० ई० के बीच इंग्लैण्ड में दो कानून पास किये गये जिनमें कहा गया है कि ....।

अठारहवीं शती के उत्तरार्द्ध में इंग्लैण्ड में...............क्रान्ति हुई और.................के बने सस्ते माल के सामने.........में बने माल न ठहर सके। भारत का उद्योग नष्ट हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा अध्याय

अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना (१७९९-१८२३ ई०)

पाठ १--मराठा साम्राज्य का पराभव

पिछले एक अध्याय में तुम पढ़ चुके हो कि गवर्नर-जनरल लार्ड वेलेजली ने मैसूर के टीपू सुल्तान का अन्त कर दिया, हैदराबाद को आश्रित बना लिया, तमिलनाड पर अधिकार कर लिया और अवध के नवाब के अनेक जिले अंग्रेजी राज्य में मिला लिये।

लार्ड वेलेजली बड़ा वीर और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ था। उसने भारत की दशा को देखकर अच्छी तरह समझ लिया था कि अब भारत में अंग्रेजी सत्ता को सर्वाधीश बनाने का समय आ गया है। अतः अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए उसने भारत के कई भू-भागों को सीधे अंग्रेजी राज्य में मिला लिया और कई राज्यों से सहायक सन्धियां करके अंग्रेजों की आश्रित सेना उनके यहाँ रख दी।

भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के लिए मराठा-संघ की शक्ति को तोड़ना आवश्यक था। अतः हैदराबाद को वशीभूत और टीपू का अन्त करके वेलेजली मराठों पर चोट करने की ताक में था। उसी समय पेशवा के प्रधान मन्त्री नाना फडनीस का देहान्त हो गया। (१८०० ई०)। नाना एक कुशल राजनीतिज्ञ था। उसके मरने के साथ, जैसा कि कर्नल पामर ने कहा है, मराठा सरकार की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बुद्धिमानी का अन्त हो गया। संयोग से उसी वर्ष अर्थात १८०० ई० में गायकवाड़ गोविन्द चल बसा। उसका पुत्र आनन्द बड़ौदा की गद्दी पर बैठा, परन्तु वह दुर्बल-बुद्धि था। गद्दी पाने के कुछ समय बाद उसने अपनी रक्षा के लिए अंग्रेजी सेना बुला कर अपने राज्य में रख ली (१८०२ ई०)। इस प्रकार मराठा-संघ का एक अंग तो यों कट गया। संघ के अन्य अंगों में भी मेल न था। अतः आये दिन होने वाले षड्यंत्रों ने मराठा राजनीति को बिलकुल जर्जर कर दिया। उधर वेलेजली मराठा सरदारों में भेदनीति के बीज बो चुका था। इन सब बातों का परिणाम यह हुआ कि मराठा संघ के मुख्य स्तम्भों शिन्दे, होल्कर और पेशवा में झगड़ा हुआ। होल्कर ने पूना अर आक्रमण किया और पेशवा बाजीराव को हरा दिया। पेशवा तब पूना से भाग कर अंग्रेजों की शरण में पहुँचा और बसीन (बसई) में जाकर अंग्रेजों का 'आश्रित' सेना अपने राज्य में रखने की सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये (१८०२ ई०)। वेलेजली ने उसे अपने पिट्ठू के रूप में पूना की गद्दा पर पुनः स्थापित कर दिया। पेशवा की अधीनता एक तरफ सारे देश की अधीनता थी, क्योंकि सिद्धान्त की दृष्टि से पेशवा मराठों का अध्यक्ष और मुगल सम्राट का एकमात्र प्रतिनिधि (वकील-उल-मुतलक) था।

दूसरा अंग्रेज-मराठा युद्ध (१८०३-१८०५ ई०)

अपने पेशवा की इस अपमानजनक अधीनता से मराठा सरदार खीझ उठे। फलतः अंग्रेजों और मराठों में युद्ध हुआ। इतिहास में यह दूसरा अंग्रेज-मराठा युद्ध था। वेलेजली इस युद्ध के लिए पूर्णरूप से तैयार था। वह हैदराबाद, अवध, मैसूर और बड़ौदा के साथ सहायक सन्धियां कर चुका था, अतः उसे एक विशाल सेना जुटाने में तनिक भी देर नहीं लगी। अंग्रेजी सेनाओं ने दक्षिण एवं उत्तर में शिन्दे और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भोंसले की सेनाओं से लोहा लेना प्रारम्भ किया। होल्कर अभी युद्ध में नहीं कूदा था।

कम्पनी की सेनाओं ने शिन्दे और भोंसले की सेनाओं को परास्त कर दिया (१८०३ ई०)। इस युद्ध में मराठों ने वही भूल की जो उन्होंने ४२ वर्षों पूर्व पानीपत के मैदान में की थी। उन्होंने अपनी पुरानी छापामार रणनीति को छोड़कर पश्चिमी युद्धकला का आश्रय लिया। पश्चिमी युद्धकला में मराठे इतने कुशल नहीं थे जितने कि अंग्रेज। इनके अलावा मराठों की सेना में यूरोपीय अफसर थे जिन्होंने नाजुक घड़ी में मराठों का साथ छोड़ दिया। इस विश्वासघात से मराठों की शक्ति को बड़ा धक्का लगा; क्योंकि उन्हीं अफसरों के भरोसे पश्चिमी ढंग पर युद्ध ठाना गया था।

सन्धि के अनुसार भोंसले ने अंग्रेजों के साथ देवगांव में सन्धि करके कटक अंग्रेजों को दे दिया। कटक की प्राप्ति से बंगाल और मद्रास की प्रेसीडेंसियों का सीधा सम्बन्ध हो गया। शिन्दे को सुर्जी-अर्जन गांव में अंग्रेजों से सन्धि करनी पड़ी जिसके अनुसार उसे पेशवा और मुगल साम्राज्य से सम्बन्ध त्यागना पड़ा तथा उत्तरी दोआब, भड़ौंच और अहमदनगर के प्रदेश अंग्रेजों को सौंपने पड़े।

लार्ड वेलेजली ने मराठों की शक्ति को कुचलने का संकल्प कर लिया था। होल्कर अभी अंग्रेजों के पंजे से बचा था, अतः वेलेजली ने होल्कर के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की (१८०४ ई०)। इस युद्ध में अंग्रेजों को कई जगह हार खानी पड़ी। अतः कम्पनी वेलेजली से नाराज हो गई। अभी युद्ध चल ही रहा था कि कम्पनी के डाइरेक्टरों ने गवर्नर-जनरल वेलेजली को वापस बुला लिया (१८०५ ई०)।

अपने शासनकाल में वेलेजली ने अवध को छोड़कर वर्तमान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

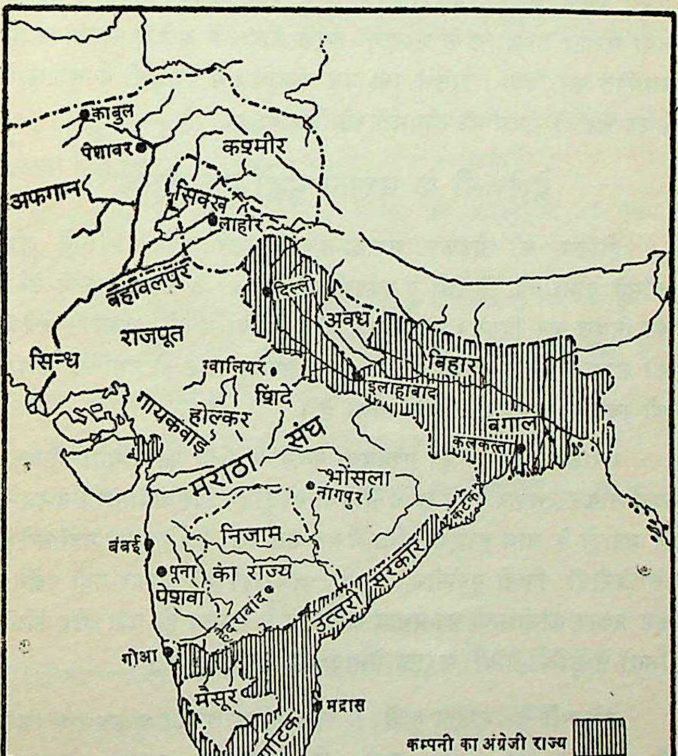

भारत (१८०५ ई०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर प्रदेश, मद्रास एवं उड़ीसा के कटक प्रदेश अंग्रेजी राज्य में मिलाये तथा मराठा साम्राज्य के अंगभंग करके भारत में अंग्रेजी साम्राज्य को स्थापित कर दिया। पिछले पृष्ठ पर मानचित्र में वेलेजली के लौटने के समय अंग्रेजी राज्य की सीमाओं को दिखाया गया है।

वेलेजली के मराठा युद्धों का महत्व

होल्कर को छोड़कर मराठा-संघ के दूसरे स्तम्भ—शिन्दे और भोंसले दोनों को वेलेजली ने कम्पनी की सेनाओं के सामने घुटने टेकने को विवश कर दिया। गायकवाड़ और पेशवा अपनी इच्छा से अंग्रेजों की शरण में पहले ही आ गये थे। इस प्रकार स्पष्ट हो गया कि मराठों की स्वतन्त्रता का अन्त होने वाला है।

मराठों ने अंग्रेजों का मुकाबला करने के लिए फ्रांसीसियों को अपने यहाँ नौकर रखकर उनसे अपने सैनिकों को ट्रेनिंग दिलवायी थी। वेलेजली ने मराठों के साथ हरएक सन्धि में यह शर्त रखी कि वे अपने यहाँ अंग्रेजों के विरोधी किसी यूरोपीय अथवा अमरीकी को नौकर नहीं रखेंगे। इस प्रकार फ्राँसीसियों का प्रभाव महाराष्ट्र से समाप्त हो गया और फ्राँसी-सियों से ट्रेनिंग पायी मराठा सेनाएं भी भंग हो गयीं।

वेलेजली के मराठा युद्धों से पहले मुगल सम्राट शाहआलम शिन्दे के वशीभूत था। इन युद्धों के फलस्वरूप मराठों की शरण छोड़कर वह अंग्रेजों के संरक्षण में आ गया। सिद्धान्तरूप से इस परिवर्तन का बड़ा महत्व है। मराठों की मुट्ठी में मुगल सम्राट की संरक्षता का अर्थ यह हुआ कि मुगल साम्राज्य का स्थान मराठा साम्राज्य ने ले लिया था। मराठों की रक्षा में रहना छोड़कर अंग्रेजों की संरक्षता में जाने का अर्थ यह हुआ कि अब मराठा साम्राज्य भी समाप्त हो गया और उसकी जगह भारत में अंग्रेजी साम्राज्य ने ले ली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१--गायकवाड़ ने कब और किस दशा में अंग्रेजी सेना अपने राज्य में रखी ?

२--पेशवा बाजीराव द्वितीय ने कब और किस परिस्थिति में अंग्रेजी 'आश्रित' सेना को अपने राज्य में रखना स्वीकार किया ?

३--पेशवा की अधीनता का भारत की राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा ?

४--दूसरे अंग्रेज-मराठा युद्ध के क्या कारण थे ? उसका विवरण दो।

५--देवगांव और सुर्जी अर्जनगाँव की सन्धियां किन-किन पक्षों में हुई ? इन सन्धियों की शर्तें क्या थीं ?

६--होल्कर और वेलेजली के अंग्रेज-मराठा युद्ध का वर्णन करो।

७--भारत में अंग्रेजी राज्य के इतिहास में वेलेजली के मराठा युद्धों का क्या महत्व है

पाठ ९--सिक्खों से समझौता, गोरखों का पराभव, मराठा शक्ति का अन्त

कम्पनी के डाइरेक्टरों ने गवर्नर-जनरल लार्ड वेलेजली को उस समय वापस बुला लिया, जब अंग्रेज यूरोप में नैपोलियन के साथ युद्धों में फँस चुके थे। उन्हें अपने सामने एक महान संघर्ष दीखने लगा था और वह अपनी सारी शक्तियाँ उसकी तैयारी में केन्द्रित करना चाहते थे। इस प्रकार सात-आठ वर्षों तक भारत में कोई बड़ा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युद्ध नहीं हुआ और अंग्रेज भारतीय राजाओं के आपसी झगड़ों में **तटस्थता की नीति** का पालन करते रहे।

सिक्ख—रणजीतसिंह

तुमने पिछले अध्याय में पढ़ा है कि वेलेजली ने अंग्रेजी साम्राज्य की सीमाएं यमुना के उस पार तक बढ़ा दी थीं। आगे सतलज पार पंजाब में **रणजीत सिंह** अपना राज्य सुसंगठित कर रहा था। १८०६ ई० में उसने सतलज पार की और पूर्व की सिक्ख रियासतों पर अधिकार कर लिया। उन रियासतों ने अंग्रेजों से रक्षा की प्रार्थना की। वे रियासतें अंग्रेजी राज्य और रणजीतसिंह के राज्य के बीच में पड़ती थीं, अतः अंग्रेजों के लिए विशेष महत्व की थीं, परन्तु तटस्थ नीति के कारण अंग्रेज रणजीत सिंह से युद्ध करना नहीं चाहते थे। रणजीतसिंह भी उनसे युद्ध के लिए इच्छुक न था। दोनों की **अमृतसर में सन्धि** हो गयी (१८०९ ई०)। रणजीतसिंह ने सतलज के पूर्व में जीते हुए प्रदेश लौटा दिए और भविष्य में सतलज पार आक्रमण न करने का वचन दिया।

रणजीतसिंह न अमृतसर सन्धि की शर्तों का जीवन भर पालन किया। भविष्य में उसने सतलज नदी के पूर्व में अपनी सेनाएं बढ़ाने का प्रयत्न न करके उनका मुख काबुल और सिन्ध की ओर फेर दिया।

रणजीतसिंह का भारत के सैनिक इतिहास में बड़ा ऊँचा स्थान है। उसके अन्दर अद्भुत सैनिक प्रतिभा थी। उसने अपनी सेना का संगठन यूरोपीयों की भाँति नवीन ढंग से किया और भारत में सिक्ख सैनिकों को यूरोपीय युद्ध कला में प्रवीण बना दिया। सिक्खों की यह प्रवीणता आगे चलकर अंग्रेजों के बड़े काम आयी। पंजाब के पराजित होने पर सिक्ख सैनिकों की सहायता से अंग्रेजों ने भारत में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

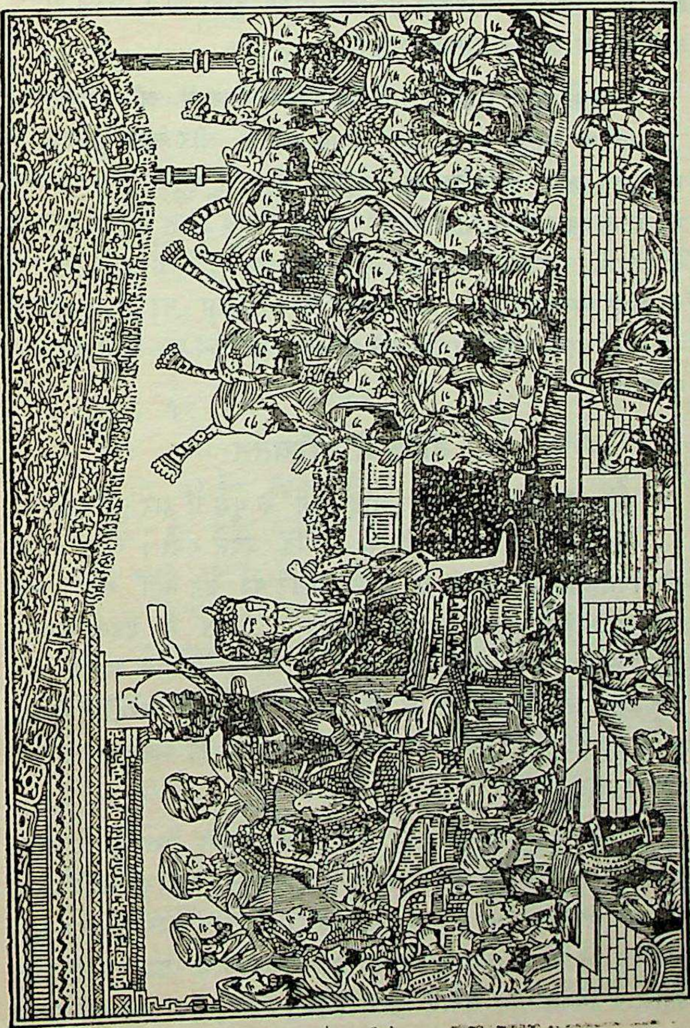

महाराजा रणजीतसिंह दरबार में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और भारत के बाहर विदेशों में अनेक विजयें प्राप्त कीं। सिक्ख सैनिक अब भी बड़े रण-कुशल माने जाते हैं।

रणजीतसिंह ने घुड़सवारों के स्थान पर तोपखाने और पैदल सेना को अधिक महत्व दिया था। उसके सैनिक और सेना पूर्णरूप से सुसज्जित और सुसंगठित थी। सैनिकों में पूरा अनुशासन था। सेना को वेतन नकद दिया जाता था और उसका प्रबन्ध सीधा केन्द्रीय सरकार के हाथ में था। रणजीतसिंह के सैनिक विधान में सामन्ती सेनाओं का कोई स्थान नहीं था। इस प्रकार जो दुर्बलता मराठों के सैनिक संगठन में पायी जाती थी, सिक्खों का सैनिक संगठन उन दोषों से सर्वथा मुक्त था।

नीति में परिवर्तन

यूरोप में नैपोलियन की लाइपजिग के युद्ध में हार हुई (१८१३ ई०)। इससे यूरोप में सैनिक स्थिति बदल गयी। अब अंग्रेजों को नैपोलियन की शक्ति से किसी प्रकार का डर नहीं रहा। उसी साल **लार्ड हेस्टिंग्ज** (१८१३-२३ ई०) भारत में गवर्नर-जनरल होकर आया। उसने देखा कि अंग्रेजों की तटस्थ नीति के कारण उनके शत्रु बलशाली होते जा रहे थे और अंग्रेजी सत्ता को भारतीयों से भय उत्पन्न हो गया था। उसने अब तटस्थता की नीति का पालन करना ठीक नहीं समझा।

गोरखा युद्ध—गोरखों का नेपाल का राज्य भारत के उत्तर में अंग्रेजी साम्राज्य से लगा हुआ था। गोरखपुर, चम्पारन आदि प्रदेशों के कब्जे के विषय में नेपाल और अंग्रेजों के बीच झगड़ा था। लार्ड हेस्टिंग्ज ने गवर्नर-जनरल के पद को संभालने के बाद सबसे पहले नेपाल के विरुद्ध पाँच सेनाएं भेजीं (१८१४ ई०)। उसकी कुछ सेनाएं तो हार कर लौट आयीं, परन्तु एक सेना विजय करती हुई काठमाण्डू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के पास जा पहुँची। तब नेपाल दरबार ने **सुगौल की सन्धि** स्वीकार की और उसे **गढ़वाल, कुमायूँ एवं तराई का बहुत सा भाग अंग्रेजों** को देना पड़ा। (१८१६ई०) इस विजय से ही वर्तमान उत्तर प्रदेश के **नैनीताल, अल्मोड़ा** आदि पहाड़ी स्थानों पर अंग्रेजों का अधिकार हुआ।

पिण्डारियों का दमन—कम्पनी की सरकार के तटस्थ रहने के जमाने में मध्य भारत में पिण्डारी लुटेरों के अनेक दल, जो हथियारों से लैस थे, बड़े प्रबल हो गये थे। कहते हैं कि मराठा सरदारों शिन्दे और होल्कर से इनकी गुप्त सन्धियाँ थीं। आवश्यकता पड़ने पर वे अंग्रेजों के विरुद्ध मराठों की सहायता को तैयार थे। लार्ड हेस्टिग्ज ने १ लाख १३ हजार फौजियों को चार दलों में बाँट कर पिण्डारियों को घेर लिया और कई युद्धों में उन्हें पूर्णरूप से परास्त करके उनकी शक्ति का अन्त कर दिया (१८१८ ई०)। परन्तु हेस्टिग्ज का असली मुकाबला मराठों से हुआ।

लार्ड हेस्टिग्ज गवर्नर-जनरल
(१८१३-२३ ई०)

मराठों से अन्तिम युद्ध—(१८१७ - १८१८ ई०) वेलेजली के समय में अंग्रेजी सेनाओं से परास्त होने के पश्चात मराठों ने अपनी शक्ति का पुन: संगठन कर लिया था। वेलेजली ने उन्हें परास्त तो कर दिया था, परन्तु वह उनका पूर्ण दमन नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर सका था। पेशवा, जिसने वेलेजली से आश्रित सन्धि करली थी, अपने अपमान से बड़ा लज्जित था और सन्धि तोड़ने की चिन्ता में था। अन्य मराठा सरदार—शिन्दे, होल्कर, भोंसले भी अपने पेशवा को अंग्रेजों के अधीन देखकर अत्यन्त क्षुब्ध थे और उसके विरोध में योजनाएं बना रहे थे, यद्यपि उनमें परस्पर द्वेष और कलह पहले जैसा ही था। लार्ड हेस्टिंग्ज ने मराठों को कुचलने में उनके घर की आपस की फूट का लाभ उठाया। १८१६ ई० में भोंसले सेनापति रघुजी की मृत्यु हुई। उसका पुत्र रोगी था, अतः उसके संरक्षक पद के लिए दो दलों में झगड़ा हुआ। गवर्नर जनरल लार्ड हेस्टिंग्ज ने एक दल का साथ दिया और उस दल के नेता अप्पा साहब ने अंग्रेजों से आश्रित सन्धि कर ली (१८१६ ई०)। पेशवा पहले वेलेजली के समय में ही सन्धि कर चुका था। परन्तु हेस्टिंग्ज इन सन्धियों से ही सन्तुष्ट न था। वह तो मराठों को अच्छी तरह से कुचल कर उनके संघ-साम्राज्य को मिटाना और मराठों को अंग्रेजों के सीधे अधिकार में लाना चाहता था। अतः अंग्रेजों और मराठों का अन्तिम युद्ध १८१७-१८ ई० में हुआ।

इस युद्ध में पेशवा, भोंसले और होल्कर बुरी तरह हारे। शिन्दे और गायकवाड़ ने अंग्रेजों से युद्ध नहीं किया था, परन्तु इन्हें भी नवीन सन्धियाँ करनी पड़ीं। इन सन्धियों के फलस्वरूप जो इलाके मराठों से लिये गये थे, वे पीछे दिये हुए १८०५ ई० के वेलेजली के और १८२३ई० के लार्ड हेस्टिंग्ज के नक्शों की तुलना करने से स्पष्ट हो जायेंगे।

लार्ड हेस्टिंग्ज के समय के अंग्रेज-मराठा युद्ध का परिणाम यह हुआ कि **पेशवाई का अन्त हो गया** और बाजीराव द्वितीय को पेंशन देकर कानपुर के समीप बिठूर भेज दिया गया। शिन्दे, होल्कर और भोंसले की स्वतन्त्र सत्ताएं समाप्त हो गयीं और उनके राज्य अंग्रेजी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

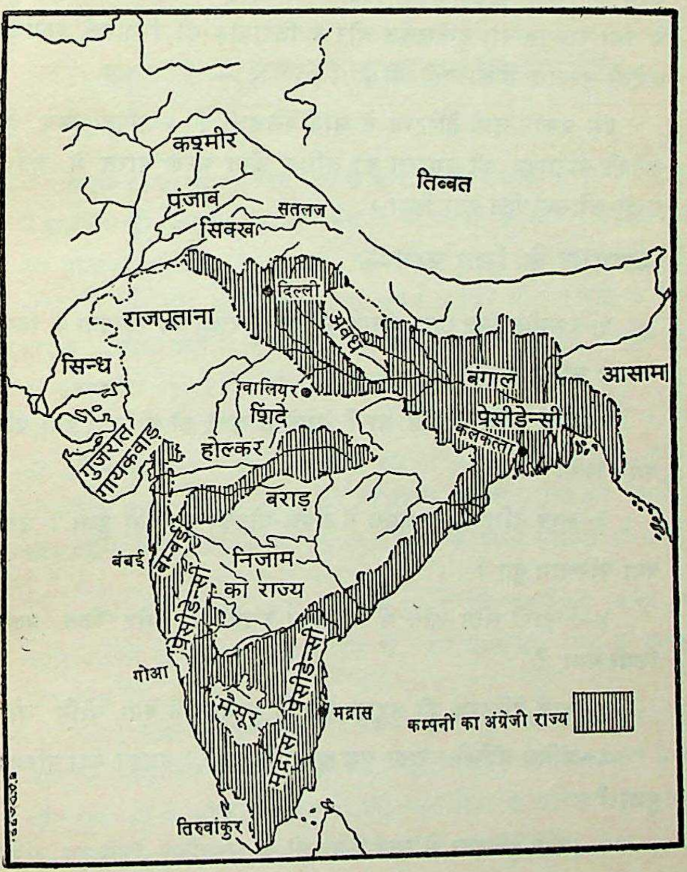

भारतवर्ष (१८२३ ई०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कम्पनी के अधीन हो गये। अब सिक्खों को छोड़कर अंग्रेजों का सामना करने का किसी में दम न था, क्योंकि मराठे पूर्णरूप से परास्त हो चुके थे तथा राजपूताना, बुन्देलखंड और काठियावाड़ की रियासतें स्वयंमेव अंग्रेजी संरक्षण में आ गयी थीं।

इस प्रकार लार्ड हेस्टिंग्ज ने लार्ड वेलेजली के स्थापित किये हुए अंग्रेजी साम्राज्य की इमारत को अधिक ऊँचा करके भारत में अंग्रेजी सत्ता को सर्वाधीश बना दिया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—रणजीत सिंह द्वारा पंजाब में सिक्ख राज्य की स्थापना के विषय में क्या जानते हो ?

२—लार्ड हेस्टिंग्ज कौन था ? उसने कम्पनी की नीति में क्या परिवर्तन किया ?

३--लार्ड हेस्टिंग्ज के समय में अंग्रेज-गोरखा युद्ध क्यों हुआ ? उसके क्या परिणाम हुए ?

४—पिंडारी लोग कौन थे ? उनका दमन कब और किस प्रकार किया गया ?

५—लार्ड हेस्टिंग्ज की मराठा-संघ के सम्बन्ध में क्या नीति थी ?

६—अंतिम अंग्रेजी-मराठा युद्ध का वर्णन करो। उसका क्या परिणाम हुआ ?

७--'लार्ड हेस्टिंग्ज ने लार्ड वेलेजली के स्थापित किये हुए अंग्रेजी साम्राज्य की इमारत को अधिक ऊँचा करके भारत में अंग्रेजी सत्ता को सर्वाधीश बना दिया।' उदाहरण देकर इस कथन को सिद्ध करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३—मराठों के पतन के कारण

मुगल साम्राज्य का पतन होने के बाद मराठा संघ का साम्राज्य भारत में स्थापित हो गया था, परन्तु अंग्रजों की शक्ति के सामने मराठा-संघ का साम्राज्य अधिक काल तक नहीं टिक सका। वारेन हेस्टिंग्ज, लार्ड वेलेजली और लार्ड हेस्टिंग्ज के समय अंग्रेजों और मराठों के बीच करीब चालीस वर्षों में कुल मिलाकर चार भीषण युद्ध हुए। पहले युद्ध के फलस्वरूप १७८२ ई० में कम्पनी को काई विशेष लाभ नहीं हुआ था, परन्तु चौथे युद्ध के फलस्वरूप १८१६ ई० तक कम्पनी ने मराठों की शक्ति का पूरी तरह से सर्वनाश कर दिया। इस प्रकार पेशवा बाजीराव प्रथम (१७२०ई०) की साम्राज्य-साधना करीब सौ वर्षों के बाद पेशवा बाजीराव द्वितीय (१८१८ ई०) के हाथों समाप्त हो गयी।

आगे की भारत की इतिहास-धारा का अवलोकन करने के पहले मराठों के पतन के क्या कारण थे, इस बात पर विचार करना आवश्यक है—

(१) छत्रपति शिवाजी और पेशवा बाजीराव प्रथम ने मराठों में राष्ट्रीय एकता का संचार किया था। सारे मराठा सरदार और सेनापति एक छत्र के नीचे एक सूत्र में बँधे, एक नेता के आदेश का पालन करते थे। पेशवा बालाजीराव अपने अधीन सरदारों जैसे होल्कर और शिन्दे को पूर्णरूप से अपने वश में न रख सका। इसका यह फल हुआ कि मराठों में एकता की जगह **अनेकता आ गयी**। एक मराठा साम्राज्य की जगह अनेक मराठा सामन्तों का साम्राज्य बन गया। अब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसमें न तो एक केन्द्रीय शासन-प्रबन्ध रह गया, न एक कोष और न एक सेना। तुमने पढ़ा है कि हरएक सरदार अपनी इच्छानुसार सन्धि, युद्ध अथवा राज्य का विस्तार करने लगा था।

एकता के अभाव के कारण मराठा-संघ के सदस्य अंग्रेजों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाने में प्रायः असफल रहे। तुम पढ़ चुके हो कि शिन्दे और होल्कर के आपस के लड़ाई-झगड़े और ईर्ष्या से तंग आकर उनके पेशवा ने अंग्रेजों की शरण ले ली तथा अंग्रेजों को मराठा सरदारों में परस्पर फूट पैदा करने में कुछ कठिनाई नहीं हुई। इस स्थिति में अवसर मिलते ही उन्होंने एक-एक करके सबको परास्त कर दिया।

(२) शिवाजी ने हिन्दू धर्म की रक्षा और बाजीराव ने हिन्दू-पद पादशाही को आदर्श बनाकर मराठों में उत्साह और ऊँची उमंगें पैदा की थीं, किन्तु बालाजीराव के समय में मराठों के सामने वे आदर्श न रहे। तुम पढ़ ही चुके हो कि मराठा सरदारों ने उत्तर भारत में राजपूत राजाओं के साथ दुर्व्यवहार करके उन्हें अपना शत्रु बना लिया और मराठा सेनाओं ने खुलेआम लूटखसोट मचाकर साधारण जनता की सहानुभूति भी खो दी।

अपने सामने किसी ऊँचे आदर्श के न होने तथा लूट खसोट से मालामाल हो जाने पर मराठा सैनिकों का चरित्र भी भ्रष्ट हो गया। उनके अन्दर विलासिता आ गयी और अनुशासन ढीला पड़ गया। ऐसी अवस्था में अब्दाली के सामने पानीपत के युद्ध में पराजय (१७६१ ई०) का होना कुछ आश्चर्य की बात नहीं हुई।

पानीपत के बाद पेशवा माधवराव (१७६१-१७७२ ई०) ने मराठा सरदारों को वश में करने तथा नाना फडनीस (मृत्यु १८०० ई०) ने भारतीय शक्तियों को मिला कर अंग्रजों से भारत को बचाने के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिए प्रयत्न किये, परन्तु उनके मरने पर कोई **ऐसा नेता नहीं पैदा हुआ** जो कूटनीति और युद्धों में अंग्रेजों से लोहा ले सकता।

(३) मराठे अपने राज्यों के अन्दर सुदृढ़ शासन के अभाव और सैनिक संगठन की कमजोरी के कारण भी अंग्रेजों के मुकाबले में सफल न हो सके। मराठों ने मध्य अथवा उत्तर भारत में जो प्रदेश जीते, उनमें उत्तम शासन का कोई प्रबन्ध नहीं किया और न कृषि या व्यापार की उन्नति पर ध्यान दिया। उन्होंने लूटखसोट को अपने शासन का आधार बनाया। चौथ और सरदेशमुखी ही उनकी आय के प्रधान साधन बने रहे। इसके फलस्वरूप **न तो मराठा साम्राज्य की आर्थिक स्थिति दृढ़ हो पायी और न उनका शासन लोकप्रिय बन सका।**

अपने सैनिक संगठन में उन्होंने अंग्रेजों की नकल जरूर की, परन्तु अपने सैनिकों की ट्रेनिंग के लिए वे विदेशियों पर निर्भर रहे जिन्होंने नाजुक घड़ियों में उनके साथ विश्वासघात किया। अंग्रेजों के मुकाबले मराठों के पास **शस्त्रों की भी कमी** थी। गोला बारूद के युद्धों में मुकाबला करने के लिए आवश्यक था कि मराठे तोपों के बनाने और चलाने की कला में स्वयं कुशलता प्राप्त करते, परन्तु मराठे इस ओर से भी उदासीन और विदेशियों पर अवलम्बित रहे।

(४) मराठों की अपेक्षा अंग्रेजों ने अपने शासन प्रबन्ध में अधिक होशियारी दिखलायी। अंग्रेजों का **गुप्तचर विभाग** इतनी चतुरता से काम करता था कि उसके द्वारा उन्हें मराठों की सेना, उनके परस्पर के कलह व भेदभाव आदि सारी बातों की सूचना मिलती रहती थी। इसके विपरीत मराठों को अंग्रेजों की गतिविधि का पता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
नहीं होता था। अतः मराठों की त्रुटियों का पता लगाने के बाद उन पर चोट करना अंग्रेजों के लिए सदा आसान होता रहा।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—भारत के इतिहास में छत्रपति शिवाजी और पेशवा बाजीराव प्रथम का क्या स्थान है ?

२—बालाजीराव के समय में मराठों में क्या दुर्बलता आ गयी ?

३—अंग्रेज मराठों को परास्त करने में क्यों सफल हुए ?

४—मराठों के पतन के कारणों पर नीचे लिखी बातों को ध्यान में रखते हुए एक लेख लिखो :—

(क) आदर्श की कमी।

(ख) संगठन का अभाव।

(ग) शासन की दुर्बलता।

(घ) सेना का परावलम्बन।

५—कौन से सनों में निम्नांकित घटनाएं हुईं।

सन् १७६१, १७७२, १८००, १८१८,।

घटनाएं:—

(क) पेशवा बाजीराव द्वितीय की पेंशन।

(ख) पेशवा माधवराव की मृत्यु।

(ग) नाना फडनीस की मृत्यु।

(घ) पानीपत का तीसरा युद्ध।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा अध्याय

अंग्रेजी साम्राज्य का चौमुखा विस्तार (१८२३-१८५६ई०)

पाठ १—पूर्व और पश्चिम में विस्तार

भारत में लार्ड हेस्टिंग्ज द्वारा निर्मित अंग्रेजी सामाज्य के पूर्वी छोर पर आसाम और बरमा के प्रदेश तथा पश्चिमी सीमा पर पंजाब और उसके आगे अफगानिस्तान के प्रदेश थे ।

पहला आंग्ल-बरमी युद्ध (१८२४-२६ई०)

अठारहवीं शती के समाप्त होने के पहले ही बरमा में तिब्बती-चीनी नस्ल की एक जाति ने पूरे बरमा देश में अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया था । १८२२ ई० तक ये बरमी लोग मणिपुर (आसाम) को जीतकर कछार को जीतन चले । इस बार अंग्रेजों ने उनका विरोध किया और कछार को अपने संरक्षण में ले लिया । चूंकि कछार अंग्रेजी और बरमी राज्यों के बीच में पड़ता था, अतः अंग्रेज उसे बरमी अधिकार से बचाना चाहते थे । अंग्रेजों के इस काम से बरमी सरकार बहुत बिगड़ी ।

उसी समय संघर्ष का एक दूसरा कारण पैदा हो गया । चटगांव के दक्षिण में एक द्वीप पर बरमी सरकार ने कब्जा करना चाहा । अंग्रेजों ने देखा कि उससे बंगाल की सीमा अरक्षित हो जायगी । अतः भारत के अंग्रेजी गवर्नर-जनरल लार्ड एमहर्स्ट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

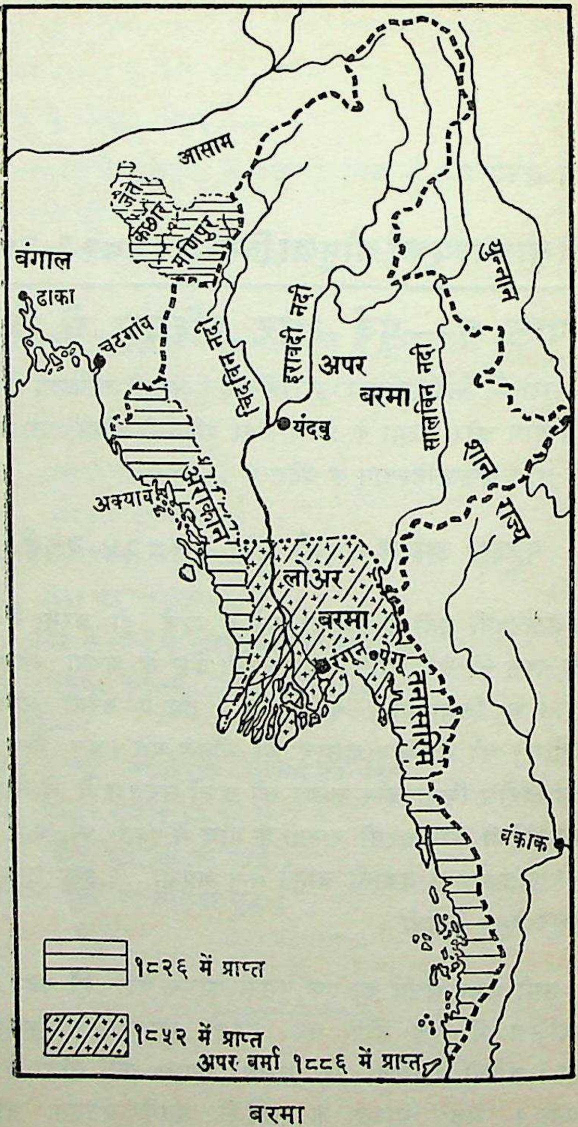

बरमा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१८२३-२८ ई०) ने उसका विरोध किया और उस द्वीप की रक्षा के लिए कुछ अंग्रेज सैनिक वहाँ भेज दिये। बरमियों ने उन्हें मार भगाया। इसके बाद पुन: अंग्रेजों ने द्वीप पर पूरा अधिकार करके बरमा के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया (१८२४ ई०)। युद्ध दो वर्षों तक चला। बरमियों ने हारकर **यन्दबू में सन्धि** कर ली। इससे **असम, अराकान** और **तनासरिम** अंग्रेजों को मिले और भारत के अंग्रेजी सामाज्य में मिला लिये गये (१८२६ ई०)। इसके अतिरिक्त यह भी तय पाया कि भविष्य में बरमी दरबार में एक अंग्रेजी रेजीडेंट रहा करेगा। उसके बाद **कछार** के राजा की मृत्यु से उसका राज्य भी अंग्रेजी अधिकार में आ गया (१८३० ई०)। पाँच वर्षों के बाद जैन्ते परगने भी ले लिये गये। इस प्रकार **असम** प्रदेश और **बरमा के कुछ भाग** अंग्रेजी साम्राज्य के अंग बन गये।

दूसरा आंग्ल-बरमी युद्ध (१८५२ ई०)

अब बरमा सरकार के दरबार में अंग्रेज रेजीडेंट रहने लगा था और अंग्रेज व्यापारियों को अनेक सुविधाएं प्राप्त हो गयी थीं। बरमी सरकार को न तो रेजीडेंट की गतिविधि पसन्द थी और न अंग्रेज व्यापारियों की सुविधाएं। अत: बरमी सरकार ने कठोरता का व्यवहार करना आरम्भ किया। गवर्नर-जनरल लार्ड डलहौजी ने बरमा पर पुन: आक्रमण कर दिया और बरमी सेना को परास्त करके **पेगू प्रदेश** पर अधिकार कर उसे अंग्रेजी सामाज्य में मिला लिया (१८५२ ई०)। इस प्रकार पेगू प्रदेश को लेकर बंगाल की खाड़ी के समूचे पूर्वी तट पर अंग्रेजी राज्य कायम हो गया।

सिक्खों से सम्बन्ध

पश्चिमी सीमा पर पंजाब में महाराजा रणजीतसिंह का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

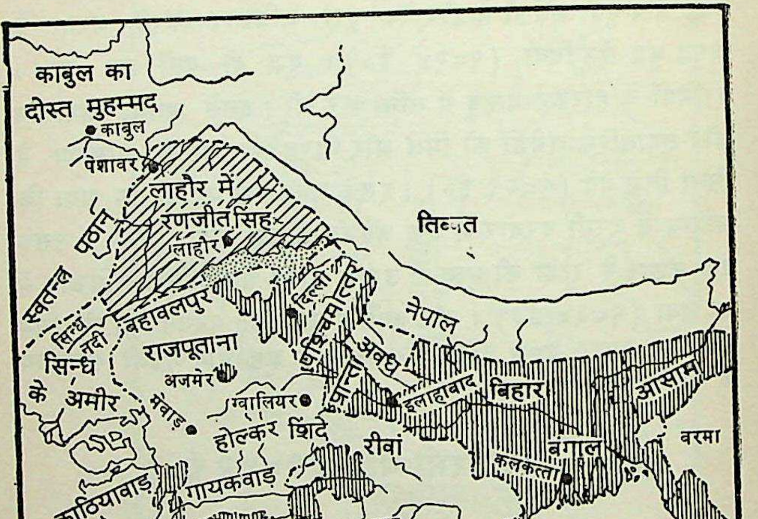

भारत (१८३६ ई०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिक्ख राज्य था और उसके बाद अफगानिस्तान । रणजीतसिंह ने अंग्रेजों से अमृतसर में सन्धि करके वचन दिया था कि वह भविष्य में सतलज पार

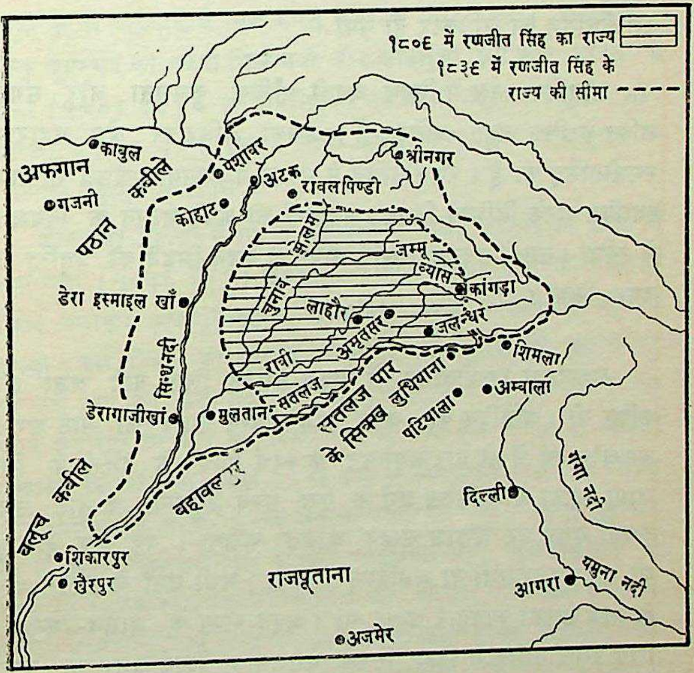

सिक्ख राज्य

आक्रमण नहीं करेगा । जन्म भर उसने अपने वचन को निभाया और अंग्रेजों से उसकी मैत्री बनी रही ।

तुमने पीछे पढ़ा है कि पूर्व में सिक्ख राज्य की सतलज तक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की सीमा से संतुष्ट होकर महाराजा रणजीतसिंह ने पश्चिम की ओर अपने राज्य का विस्तार किया। उसने अटक, कश्मीर, डेरा-गाजी खाँ, डेरा-इस्माइल खाँ और पेशावर विजय किये। इस प्रकार खैबर दर्रे तक रणजीतसिंह का अधिकार हो गया।

आधुनिक काल में सिक्ख अपनी सैनिक कुशलता और संगठन शक्ति के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। इसका अधिकतर श्रेय महाराजा रणजीतसिंह का है। रणजीतसिंह ने पंजाब में अपना एकछत्र साम्राज्य स्थापित करके विभिन्न सिक्ख सरदारों को अपने शासन के नियन्त्रण में रक्खा। उनकी उद्दंडता और आपस में लड़ने-भिड़ने की प्रवृत्ति का दमन किया।

महाराजा रणजीतसिंह में सिक्ख धर्म के लिए बड़ी श्रद्धा और भक्ति थी। प्रतिदिन वह अपने सामने 'ग्रन्थ साहब' का पाठ कराता था और वर्ष में दो बार अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के दर्शनों के लिए जाया करता था। सिक्ख धर्म के एक सच्चे अनुयायी के नाते उसने अपनी मुहर पर 'अकाल साहब' अंकित कराया। यह सब होते हुए भी वह कट्टरपन्थी या असहिष्णु नहीं था। सभी धर्मों के मानने वालों के साथ उसका व्यवहार उदार था। अपने राज्य के शासन-प्रबन्ध के लिए रणजीतसिंह ने हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, ईसाई सभा का नौकर रखा। राजा दीनानाथ उसके अर्थ-मन्त्री और फाखरी अजीजुद्दीन विदेश-मन्त्री थे। लगभग बीस यूरोपियन भी सेना और शासन में ऊँचे पदों पर काम करते थे।

१८३९ ई० में महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु हो गयी। यदि उसके उत्तराधिकारी उसके समान योग्य और बलवान होते, तो सम्भवत पश्चिमी भारत का इतिहास कुछ और होता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहला आंग्ल-अफगान-युद्ध (१८३८-४२ ई०)

उन दिनों **अफगानिस्तान** की गद्दी के लिए **गृहकलह** मचा था। गद्दी के दो दावेदार थे, एक **दोस्त मुहम्मद** और दूसरा **शाहशुजा**। दोस्त मुहम्मद को गद्दी मिल गयी और शाहशुजा हार कर भारत में आया (१८०९ ई०)। रणजीतसिंह ने उसे अपने यहाँ शरण दी और सहायता देने का वचन दिया। तभी रणजीतसिंह को शाहशुजा से विख्यात **कोहनूर हीरा** मिला।

शाहशुजा सिक्खों से यथेष्ट सहायता न पाकर अंग्रेजों की शरण में चला गया (१८१६ ई०)। अंग्रेजों ने उसका स्वागत किया आर उसको साधन बनाकर अफगानिस्तान में अपना प्रभुत्व जमाने की योजना बनायी। इस योजना का एक विशेष कारण था। यूरोप में अंग्रेजों का शत्रु रूस उन दिनों बड़ी तेजी से मध्य एशिया में अपने साम्राज्य का प्रसार कर रहा था और अंग्रेजों का भय था कि रूस भारत के अंग्रेजी साम्राज्य पर भी चोट करेगा। ऐसी दशा में भारत की रक्षा के लिए अफगानिस्तान में अंग्रेजी प्रभाव जमाना आवश्यक था। **दोस्त मुहम्मद रूस के साथ मिला था**, अतः अंग्रेजों, शाहशुजा और रणजीतसिंह में सन्धि हुई जिसमें शाहशुजा को काबुल की गद्दी पर बिठाना तय पाया। काबुल पर अंग्रेजों ने आक्रमण किया और दोस्त मुहम्मद को परास्त कर कलकत्ता भेज दिया (१८३८ ई०)। शाहशुजा काबुल का अमीर बनाया गया। १८३९ ई० में रणजीतसिंह की मृत्यु हो गयी।

अपने अमीर शाहशुजा को अंग्रेजों की कठपुतली बना देखकर अफगानिस्तान की जनता ने विद्रोह कर दिया। दोस्त मुहम्मद का पुत्र **अकबरखाँ** उनका नेता था। अंग्रेज बुरी तरह हारे और अपमान-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्ण सन्धि करने के बाद भारत लौटने को विवश हुए। लौटती यात्रा में शत्रुओं के प्रतिरोध के कारण अंग्रेजों की १६,००० की सेना में केवल १ घायल आदमी डाक्टर ब्राइडन बचा। उसने जलालाबाद पहुँचकर संहार की करुण कथा सुनायी (१८४२ ई०)। फलतः गवर्नर-जनरल आकलैंड, जिसकी अदूरदर्शी नीति के कारण यह दुर्दशा हुई थी, इंग्लैंड वापस बुला लिया गया। शाहशुजा एक अफगान की गोली से मारा गया। आकलैंड के स्थान पर **लार्ड एलेनबरा** (१८४२-४४) भारत का गवर्नर-जनरल बनकर यहाँ आया।

अफगानिस्तान का अमीर
दोस्त मुहम्मद

आंग्ल-अफगान युद्ध का अन्त

एलेनबरा ने नयी सेनाएं अफगानिस्तान में भेजीं। उन्होंने अकबरखाँ को परास्त कर काबुल में प्रवेश किया। उस सेना ने वहाँ की राजधानी काबुल के सुन्दर बाजार को लूटकर जला दिया और विशाल भवनों को नष्ट कर दिया। अपने पूर्व संहार का बदला लेने के बाद वह अंग्रजी सेना लौट आयी। एलेनबरा की आज्ञा से अंग्रेज महमूद गजनवी के मकबरे से वे किवाड़ उखाड़ लाये जो सोमनाथ मन्दिर के समझे जाते थे। वास्तव में वे किवाड़ उस मन्दिर के न थे और वे अब आगरे के किले में पड़े हैं।

एलेनबरा ने चुपचाप दोस्त मुहम्मद को कैद से छोड़ दिया और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काबुल की गद्दी पुनः दोस्त मुहम्मद ने प्राप्त की (१८४३ ई०)। इस प्रकार पश्चिम की ओर प्रसार में अंग्रेज सफल नहीं हो सके।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—लार्ड हेस्टिंग्ज के समय भारतीय अंग्रेजी साम्राज्य की पूर्वी तथा पश्चिमी सीमाओं पर कौन से प्रदेश थे ? उनमें किसके राज्य थे ?

२— प्रथम आंग्ल-बरमी युद्ध का क्या कारण था ?

३—पहला आंग्ल-अफगान युद्ध कब और क्यों हुआ ?

४— शाहशुजा कौन था ? उसके विषय में क्या जानते हो ?

५—लार्ड आकलैंड के समय में अफगानिस्तान में अंग्रेजी सेना की क्या दुर्दशा हुई ? इस दुर्दशा का कारण बताओ।

६— पहले आंग्ल- अफगान युद्ध का अन्त किस प्रकार हुआ ?

७—लार्ड एलेनबरा ने अफगानिस्तान के मामले को किस तरह निपटाया ?

८— अंग्रेज अफगानिस्तान को वश में क्यों नहीं कर सके ?

९—रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :—

अंग्रेजों से अमृतसर में सन्धि के बाद रणजीत सिंह ने पूर्व में सतलज तक अपने राज्य की सीमा से सन्तुष्ट रहकर पश्चिम की ओर बढ़ना शुरू किया। उसने,……,और…… विजय किये। इस प्रकार…दर्रे तक उसका अधिकार हो गया। सभी धर्मों के लोग उनके यहाँ सरकारी कर्मचारी थे… उसके अर्थ-मंत्री और…… विदेश-मंत्री थे। अनेक यूरोपियन……और… हैं ऊँचे पदों पर काम करते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—सिन्ध पर अधिकार और पंजाब में युद्ध

पश्चिम की ओर पंजाब और अफगानिस्तान में अपनी दाल नहीं गलती देखकर अंग्रेजी सरकार ने पंजाब के दक्षिण- पश्चिम में सिन्ध की ओर ध्यान दिया। यह प्रदेश अंग्रेजों के भारतीय साम्राज्य के पश्चिमी सीमान्त पर स्थित था और रूसी शत्रु गजनी और कन्दहार होते हुए सिन्ध के मार्ग से ब्रिटिश साम्राज्य पर चोट कर सकते थे। कन्दहार से क्वेटा को आने के लिए पहाड़ी द्वार बोलन घाट (दर्रा) है जो सिन्ध में है। भारत की सुरक्षा के लिए शत्रु को वहीं घाट पर रोकने के लिए उसे अपने अधिकार में रखना आवश्यक था, अतः सिन्ध पर अंग्रेजों के दांत पहले से ही लगे थे।

सिन्ध पर अधिकार (१८४३)

अफगानों से युद्ध के समय अंग्रेजी सेनाएं सिन्ध को आधार बनाकर लड़ी थीं। सिन्ध के अमीरों में विरोध करने की शक्ति न थी। अफगानों से मात खाकर अंग्रेजों ने सिन्ध में षड्यन्त्र शुरू किया। अमीर घबराये और उन्होंने अंग्रेज प्रतिनिधि से हैदराबाद छोड़ने के लिए कहा। उसके इनकार करने पर अमीरों की सेना ने रेजीडेंसी पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेज तो ऐसे अवसर की ताक ही में थे। सिन्ध के विरुद्ध तुरन्त युद्ध छेड़ दिया। अंग्रेज सेनापति **नैपियर** ने अमीरों को दो युद्धों में हराया। उनकी हिम्मत टूट गयी। प्रतिरोध समाप्त हो गया। एलेनबरा ने **पूरे सिन्ध को अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाने का एलान कर** दिया (१८४३ ई०)। सिन्ध पर अधिकार इतिहास के पन्नों में अंग्रेजों की **धींगामुश्ती** का नमूना बना रहेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी सरकार ने सिन्ध के अमीरों के साथ जो अनुचित और अमानुषिक बर्ताव किया, उसकी विद्वानों ने बड़ी निन्दा की है। स्वयं सिन्ध-विजेता सेनापति नेपियर ने अपनी डायरी में यह स्वीकार किया है कि 'सिन्ध पर अपना आधिपत्य जमाने का हमारा कोई अधिकार न था। हमने यह दुष्टतापूर्ण कार्य किया, क्योंकि हमें इससे लाभ पहुँचता था।' तत्कालीन एक अन्य अंग्रेज जेम्स आउटरम ने भी इस सारे कार्य को अनुचित और निन्दनीय ठहराया है। सेनापति नेपियर को हैदराबाद (सिन्ध) की लूट में सत्तर हजार पौंड अर्थात करीब साढ़े बारह लाख रुपये मिले, परन्तु आउटरम ने लूट का एक पैसा भी छूने से इनकार कर दिया। सिन्ध-विजय की घोर निन्दा करते हुए प्रसिद्ध विद्वान हेनरी पांटिजर ने तो यह लिखा है कि 'मेरे विचार में हम चाहे जितने तर्क क्यों न उपस्थित करें, सिन्ध के अमीरों के साथ हमारे व्यवहार से जो कलंक हमारी ईमानदारी और प्रतिष्ठा को लगा है, वह किसी प्रकार नहीं धुल सकता।'

पहला आंग्ल-सिक्ख युद्ध----(१८४५-४६ ई०)

अब पंजाब के सिक्ख राज्य की पारी आयी। रणजीतसिंह के मरने के बाद पंजाब में अव्यवस्था फैल गयी थी। खालसा (सिक्ख सेना) के प्रमुख सरदारों में आपस में इस विषय पर मतभेद हो गया कि लाहौर के सिंहासन पर कौन बैठे। एक दल एक पुत्र का पक्ष लेकर उसे गद्‌दी पर बिठाता, तो दूसरा दल उसके पक्षपातियों की हत्या करके दूसरे पुत्र को गद्‌दी पर बिठाता। षड्‌यन्त्र और हत्याओं का यह क्रम करीब ६ वर्षों तक चलता रहा। इस बीच में युद्ध प्रिय सिक्ख सेना की शक्ति बहुत बढ़ गयी और वह उच्छृंखल हो उठी। उधर सिक्ख जनता विश्वास करने लगी कि इन षड्‌यन्त्रों में अंग्रेजों का हाथ है। अतः जनमत धीरे-धीरे अंग्रेजों के विरुद्ध हो गया (१८४५ ई०)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लाहौर की गद्दी उस समय पाँच वर्षों के एक बालक दिलीपसिंह को मिली और उसकी माता महारानी जिन्दाँ उनकी संरक्षिका बनायी

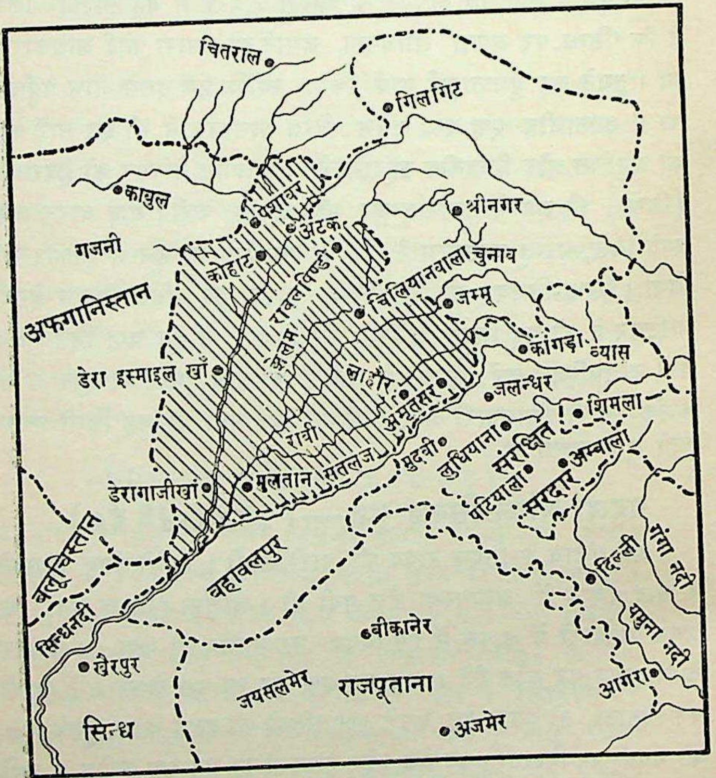

लाहौर सन्धि के बाद सिक्ख राज्य (१८४६ ई०)

गयी। महारानी ने सोचा कि सेना पर तभी काबू पाया जा सकता है जब उसकी शक्ति कम हो जाय। इसकी युक्ति यह सोची गयी कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिक्ख सेना को अंग्रेजों से भिड़ा दिया जाय। ऐसा करने से यदि सिक्ख सेना की जीत हो जाती तो उसका ध्यान सिक्ख राज्य के विस्तार की ओर लग जाता। हार हो जाने पर तो उसकी शक्ति का कम हो जाना निश्चित ही था। अनेक सिक्ख सरदार भी अपने स्वार्थ के लिए सिक्ख राज्य में अंग्रेजों के हस्तक्षेप के इच्छुक थे। इस प्रकार वे लोग अपनी जायदादों में स्थिर होना चाहते थे। उनके सामने सतलज के पूर्व के सिक्ख सरदारों के उदाहरण थे जो अंग्रेजों के संरक्षण में अपनी जायदादों में पहले से ही पक्के हो चुके थे।

सिक्ख दरबार और सरदार दोनों ने ही सिक्ख सेना को सतलज पार बढ़ने की प्रेरणा दी। वे स्वयं ही सेना के नेता भी बने। सेना उनके बहकाने में आ गयी। अंग्रेजों के साथ सिक्ख सेनाओं के कई युद्ध हुए जिनमें अपने नेताओं के हाथों से धोखा खाने पर भी सेना में अनुपम साहस एवं वीरता का प्रदर्शन किया, पर अन्त में विजय अंग्रेजों की होनी ही थी। सिक्ख दरबार ने अंग्रेजों से सन्धि कर ली। सेना ने भी यह स्वीकृति दे दी कि वह लाहौर में सिक्ख राज्य को कायम रखते हुए चाहे जैसी सन्धि कर सकता है (मार्च, १८४६ ई०)।

गवर्नर जनरल हार्डिंग्ज (१८४४-४८ ई०) ने स्वयं आंग्ल-सिक्ख युद्ध का संचालन किया था। उसने सन्धि के सम्बन्ध में भी बड़ी चतुराई से काम लिया।

लाहौर की सन्धि के अनुसार सतलज और व्यास के बीच का जलन्धर दोआब और हरजाने का १ करोड़ ५० लाख रु० अंग्रेजों को मिलना निश्चित हुआ। दरबार के कोष में केवल ५० लाख रु० था। शेष १ करोड़ की जगह केवल ७५ लाख लेकर अंग्रेजों ने सिक्ख राज्य का कश्मीर प्रान्त दरबार के मन्त्री गुलाबसिंह को बेच दिया और उसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसका महाराजा बनाया। इस प्रकार सिक्ख राज्य का विस्तार भी कम हो गया और अंग्रेजों के आश्रित महाराजा गुलाबसिंह की कश्मीर में एक नयी रियासत बन गयी।

अब अंग्रेजों का मित्र लालसिंह सिक्ख दरबार का मन्त्री बना। उसने दिलीपसिंह के बालिग होने तक अंग्रेजी सेना पंजाब में रख ली, जिसके व्यय के लिए सिक्ख दरबार ने २२ लाख रुपये देने का वचन दिया। शासन का काम चलाने के लिए ८ सरदारों की एक कौंसिल बनायी गयी, जिसका प्रधान अंग्रेज रेजीडेंट हेनरी लारेन्स था (दिसम्बर, १८४६ ई०)। उसे ही अब पंजाब का वास्तविक शासक समझना चाहिये। इस प्रकार लार्ड हार्डिंग्ज के समय पंजाब में भी अंग्रेजों की प्रभुता स्थापित हो गयी।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—अंग्रजों ने सिन्ध पर कब और कैसे अधिकार किया ?

२—रणजीतसिंह की मृत्यु के बाद सिक्ख राज्य की क्या दशा हुई ?

३—लाहौर की गद्दी किसे मिली ? उसकी आयु कितनी थी ? शासन का काम किसके हाथ में रहा ?

४—रानी जिन्दाँ कौन थी ? उसने सिक्ख सेना की शक्ति को तोड़ने के लिए क्या उपाय किया ?

५—सिक्ख सरदार अंग्रेजों का हस्तक्षेप क्यों चाहते थे ?

६—पहला आंग्ल-सिक्ख युद्ध कब और क्यों हुआ ?

७—पहले सिक्ख युद्ध का क्या परिणाम हुआ ?

८—कश्मीर रियासत का निर्माण कब और किस प्रकार हुआ ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३—पंजाब पर अधिकार तथा डाक्ट्रिन आफ लैप्स

लाहौर की सन्धि के बाद पंजाब के शासन की जो व्यवस्था बनी, उससे सिक्ख कदापि संतुष्ट न थे । वे अपने को अंग्रेजों से कम रणकुशल नहीं समझते थे, अतः अपने देश में अंग्रेजों की प्रभुता वह सहन न कर सके । उधर अंग्रेज रेजीडेंट हेनरी लारेंस ने सिक्ख शासन में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया था, क्योंकि वह सिक्खों की शेष स्वाधीनता का भी अंत करने पर तुला था । ऐसी दशा में युद्ध होना ही था ।

यूद्ध का आरम्भ मुलतान के शासक मूलराज के कारण हुआ । मुलतान सिक्ख राज्य का एक प्रान्त था। उसका सूबेदार मूलराज लाहौर के सिक्ख दरबार को यथेष्ट भेंट तथा कर न दे सका था। अतः अंग्रेजी रेजीडेंट ने मूलराज के स्थान पर अपने एक पिट्ठू को मुलतान का शासक नियुक्त किया और उसके साथ दो अंग्रेज अफसर मूलराज से शासन का प्रभार लेने के लिए भेजे । इस पर वहां की फौज बिगड़ गयी और उसने अंग्रेज अफसरों को मार डाला । धीरे-धीरे विरोध की अग्नि सारे पंजाब में भड़कने लगी । अतः लाहौर दरबार की ओर से जो सिक्ख सेना मूलराज के विरुद्ध भेजी गयी, वह भी उसी से जा मिली और उस विरोधाग्नि ने स्वातन्त्र्य-संग्राम का रूप ले लिया (१८४८ ई०) ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा आंग्ल-सिक्ख युद्ध (१८४८–४९ ई०)

उसी समय भारत में एक अद्भुत प्रतिभा एवं शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति लार्ड डलहौजी गवर्नर-जनरल (१८४८-५६ ई०) बनाया गया। आते ही उसने युद्ध की घोषणा कर दी। अंग्रेजी सेनापति गफ सिक्खों से लड़ने के लिए आगे बढ़ा। चिलायनवाला में सिक्ख सेनापति शेरसिंह ने उसे हरा दिया। इस स्वतन्त्रता युद्ध में काबुल के दोस्त मुहम्मद ने शेरसिंह को सहायता देने का वचन दिया था एवं कश्मीर का गुलाबसिंह भी उसकी मदद करने के विचार में था, परन्तु इन सब शक्तियों के मिलने के पहले ही गुजरात में शेरसिंह की हार हुई। लार्ड डलहौजी ने पंजाब पर अधिकार कर लिया (१८४९ ई०) और उसने तीन अफसरों का एक बोर्ड पंजाब के शासन के लिए नियत किया।

डलहौजी

(गवर्नर-जनरल १८४८-५६ ई०)

इस आंग्ल-सिक्ख युद्ध में एक अनहोनी बात यह हुई कि लाहौर दरबार अन्त तक अंग्रेज रेजीडेंट के वश में रहा। उसने अपने भाइयों का साथ न दिया। अंग्रेजों ने महारानी जिन्दाँ को पहले ही कैद करके वाराणसी भेज दिया था और बालक दिलीपसिंह रेजीडेंट के हाथ में था।

डलहौजी ने पंजाब को कुछ समय बाद अकेले जान लारेंस की अध्यक्षता में चीफ कमिश्नर का प्रान्त बना दिया और पंजाबियों को

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नि:शस्त्र करके शक्तिहीन कर दिया। सिक्खों की पराजय के पश्चात भारत में अब कोई ऐसी राजशक्ति न बची जो अंग्रेजों को आँख दिखा सकती। अंग्रेजों के सीधे अधिकार से जो देशी राज्य बचे थे, उनमें उन्हीं के खर्चे पर अंग्रेजों की आश्रित सेनाएं तैनात थीं। सारा भारतवर्ष अंग्रेजों के अधीन हो गया था।

डाक्ट्रिन आफ लैप्स

लार्ड डलहौजी उग्र साम्राज्यवादी था। उसने बिना युद्ध के देशी राज्यों को हड़पने के लिए भी एक नीति निकाली थी जो डाक्ट्रिन आफ लैप्स अर्थात जब्ती का सिद्धान्त कहलाता है। इसका अभिप्राय यह था कि यदि किसी देशी नरेश के पुत्र न होता, तो उसे गोद लेने की आज्ञा न दी जाती एवं उसकी मृत्यु के बाद उसकी रियासत जब्त कर ली जाती। इस नीति के अधीन **सतारा, सम्भलपुर, झाँसी और नागपुर** अंग्रेजी राज्य में मिला लिये गये तथा बाजीराव द्वितीय के **मरने** (१८५१ ई०) पर उसकी पेंशन उसके दत्तक पुत्र नाना साहब को नहीं दी गयी।

लार्ड डलहौजी ने जब्ती के सिद्धान्त के अलावा अन्य साधनों का प्रयोग भी देशी राज्यों पर अधिकार करने के लिए किया। उसने निजाम से **बराड़** प्रदेश आश्रित सेना के व्यय और ऋण के बदले में लेकर अंग्रेजी राज्य में मिला लिया तथा नवाब वाजिदअलीशाह के कथित कुशासन से प्रजा को बचाने के बहाने **अवध छीन लिया** और नवाब को कलकत्ते में नजरबन्द कर दिया (१८५६ ई०)।

१८५६ ई० में लार्ड डलहौजी इंग्लैंड लौट गया। इतिहासकारों ने उसकी नीति की कड़ी आलोचना की है, परन्तु भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के निर्माण करने वालों में उसका अत्यन्त ऊँचा स्थान है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

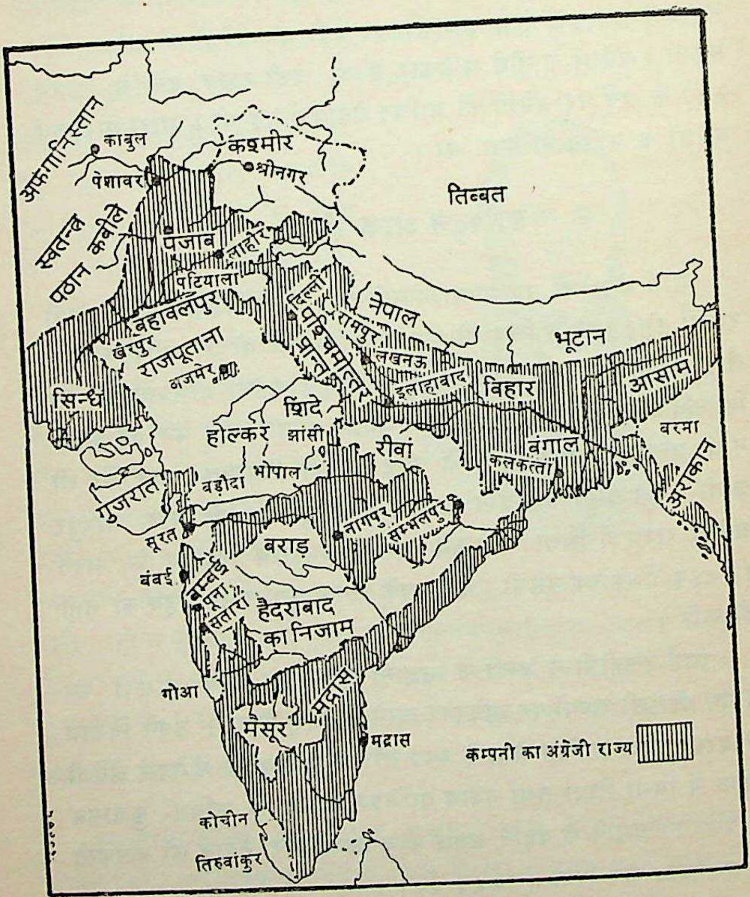

डलहौजी के शासनान्त के समय का भारत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिस कार्य का १७५७ ई० में क्लाइव ने श्रीगणेश किया था और जो सौ वर्षों तक निरन्तर जारी रहा उसकी पूर्ति १८५३ ई० तक लार्ड डलहौजी ने कर दी ।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—दूसरा आँग्ल-सिक्ख युद्ध कब और किस कारण हुआ ?

२—लार्ड डलहौजी कौन था ? उसने सिक्खों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा क्यों की ?

३—दूसरे आंग्ल-सिक्ख युद्ध की प्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन करो ।

४—दूसरे आंग्ल-सिक्ख युद्ध में लाहौर के सिक्ख दरबार का क्या रुख रहा ?

५—दूसरे आंग्ल-सिक्ख युद्ध का क्या परिणाम हुआ ?

६—पंजाब कब और किस प्रकार अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाया गया ?

७—डलहौजी ने पंजाबियों को किस प्रकार शक्तिहीन कर दिया ?

८—डाक्ट्रिन आफ लैप्स का क्या अभिप्राय था ?

९—डाक्ट्रिन आफ लैप्स के अनुसार डलहौजी ने भारत के कौन-कौन से भूभाग अंग्रेजी राज्य में मिला लिए ?

१०—डलहौजी ने बराड़ और अवध को किस प्रकार अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाया ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ४—समाज सुधार और अंग्रेजी शिक्षा

भारत में अंग्रेजी साम्राज्य का आधार दृढ़ होते ही उस समय इंग्लैंड में प्रचलित उदार आन्दोलनों का लाभ इस देश को भी हुआ। इसका सबसे अच्छा उदाहरण तुम्हें लार्ड **विलियम बेंटिक** (१८२८-३५ ई०) के शासन-काल के सुधारों में मिलेगा। बेंटिक यहाँ लार्ड एमहर्स्ट के बाद १८२८ ई० में गवर्नर-जनरल होकर आया था। उन दिनों

विलियम बेंटिक
(गवर्नर-जनरल १८२८-३५ ई०)

इंग्लैंड में कई जननेता ऐसे हुए जो बलवानों के विरुद्ध निर्बलों का पक्ष लेकर उनके अधिकारों की रक्षा का प्रयत्न कर रहे थे। बेंटिक उनके उदार और सुधारवादी विचारों का कट्टर पक्षपाती और समर्थक था। जब वह भारत में आया, तब उसे इस देश की स्थिति अपने विचारों के अनुकूल दिखायी दी। लार्ड वेलेजली और लार्ड हेस्टिंग्ज के समय भारत के प्रमुख देशी राज्यों का बल टूट चुका था और जरूरत थी कि नयी विजयों के पहले अब तक जीते हुए साम्राज्य का संगठन किया जाय। फलतः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बेंटिक ने शासन में अनेक सुधार किये और अपना ध्यान भारतीय जनता में फैली हुई कुरीतियों के दूर करने की ओर लगाया। इसके लिए भारत के इतिहास में उसका नाम अमर हो गया है।

सामाजिक सुधार

सती प्रथा को रोकना—हिन्दू स्त्रियां प्राचीनकाल से ही पतिव्रत धर्म को सर्वोपरि समझती रही हैं। प्रेम और श्रद्धा के वशीभूत अनेक स्त्रियाँ अपने पति की मृत्यु पर उसके शव के साथ स्वयं भी जल

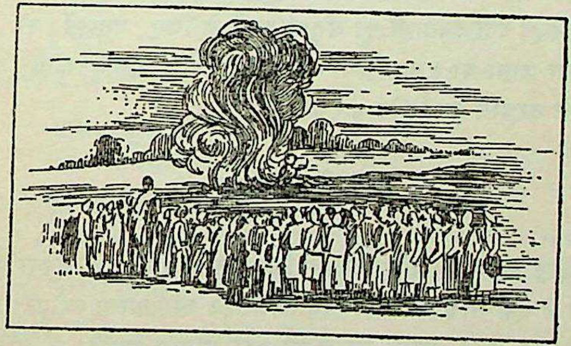

सती की क्रूर प्रथा का एक दृश्य

मरती थीं। कालान्तर में यह बात एक प्रथा सी बन गयी और उसने अत्यन्त भयानक रूप धारण कर लिया। यदि कोई स्त्री मृत पति के साथ न जलती, तो समाज उसे कलंकित समझता। भस्म होने के लिए अनिच्छुक स्त्रियों का कभी-कभी बलात जलने को विवश किया जाता था। अकबर एवं पेशवा ने अपने शासनकाल में इस प्रथा को बन्द करने के प्रयत्न किये। कम्पनी भी इस प्रथा को रोकना चाहती थी, अतः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बेंटिक इंग्लैंड से ही उसका अन्त करने का निश्चय करके आया। भारत के प्रसिद्ध सुधारवादी नेता राजा राममोहन राय ने उसे सहायता का वचन दिया। १८२९ ई० में सती प्रथा अवैध एवं दण्डनीय करार दे दी गयी।

बालहत्या को रोकना—राजपूतों में प्रायः कन्याओं के कारण लड़ाई झगड़े हो जाते थे। उनसे बचने के लिए अनेक राजपूत अपनी नवजात बच्चियों का प्रायः बध कर डालते थे। कालान्तर में बालहत्या की प्रथा पड़ गयी। बेंटिक ने इस कुप्रथा को मिटाने के लिए बालहत्या का निषेध कर दिया।

नरबलि को रोकना—भारत के कुछ भागों में विशेषतः मद्रास में कहीं-कहीं देवी-देवताओं को संतुष्ट करने के लिए मनुष्यों को बलि कर दिया जाता था। यह प्रथा कैसी क्रूर और मानवताहीन थी! बेंटिक ने नरबलि का निषेध कर दिया।

अंग्रेजी शिक्षा

बेंटिक को अपने शासनकाल में शिक्षा के प्रश्न को हल करना पड़ा। कम्पनी ने एक लाख रुपये प्रतिवर्ष शिक्षा पर व्यय करना स्वीकार किया था (१८१३ ई०), परन्तु शिक्षा की कोई योजना सामने न होने के कारण कई वर्षों तक वह रकम व्यय नहीं हो सकी। तत्पश्चात् एक जन-शिक्षा समिति बनाई गयी (१८२३ ई०) और उसने कलकत्ता में संस्कृत कालेज स्थापित करने की योजना बनायी।

उस समय बंगाल में अनेक शिक्षित भारतवासी अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य विज्ञान की शिक्षा के पक्षपाती थे। राजा राममोहन राय इस प्रकार के विचारकों के नेता थे। उस समय कलकत्ता में हिन्दू कालेज खोला गया जिसमें पश्चिमी साहित्य, कला

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एवं विज्ञान के पढ़ाने का प्रवन्ध किया गया। इसके अतिरिक्त कई अंग्रेज पादरियों ने भी अंग्रेजी शिक्षा शुरू कर दी थी।

प्रसिद्ध सुधारक नेता
राजा राममोहन राय

अंग्रेजी शिक्षा के विषय में उस समय अंग्रेजों में दो पार्टियाँ थीं। एक पार्टी राज्य की ओर से संस्कृत अरबी, फारसी आदि के अध्ययन की पक्षपाती थी। दूसरी पार्टी, जिसका नेता मैकाले था, अंग्रेजी शिक्षा की समर्थक थी। राजा राममोहन राय भी इसी पक्ष में थे। मैकाले पूर्वी साहित्य को तुच्छ समझता था। वह भारत में शिक्षित लोगों का एक ऐसा वर्ग पैदा करना चाहता था जो रंग में चाहे काला हो, पर भाषा, विचार, मनोवृत्ति, वेश-भूषा एवं रहन-सहन में अंग्रेजों के सदृश हो।

दोनों पार्टियों में बड़ा वाद-विवाद रहा। अन्त में मैकाले के मत की विजय हुई और १८३५ ई० में गवर्नर-जनरल विलियम बेंटिक की कौंसिल ने एक प्रस्ताव के द्वारा निश्चय किया कि भविष्य में सरकार का रुपया अंग्रेजी साहित्य और पश्चिमी विज्ञान की शिक्षा पर ही व्यय होगा। अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव का जो चित्र मैकाले ने खींचा था वह सत्य हुआ। आरम्भ में जिन भारतीयों ने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की वे अंग्रेजी बोलने, अंग्रेजों के समान खाने-पीने एवं अंग्रेजी ढंग से रहने-सहने में एक अपूर्व गर्व का अनुभव करने लगे। इससे अंग्रेजी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फैशन चला और अंग्रेजी माल की खपत बढ़ी तथा अंग्रेजों को शासन का काम चलाने के लिए सस्ते वेतन पर शिक्षित नवयुवक मिलने लगे। भविष्य में अंग्रेजी शिक्षा से जिस राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ, उसके उदय होने में अभी देर थी।

बेंटिक द्वारा जिस अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति का प्रारम्भ हुआ, बंगाल ने उसकी उन्नति की ओर विशेष प्रयत्न किया। हार्डिग्ज के समय में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने शिक्षा-प्रसार के लिए बड़ा प्रयत्न किया। डलहौजी के शासनकाल में इंग्लैंड में बोर्ड आफ कन्ट्रोल के प्रधान **चार्ल्स वुड ने शिक्षा सम्बन्धी एक आदेशपत्र** भारत को भेजा जिसमें हरएक प्रांत में शिक्षा विभाग खोलने, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास जैसे प्रमुख नगरों में विश्वविद्यालय बनाने एवं हर जिले में सरकारी स्कूल खोलने का विधान था। विश्वविद्यालय तो १८५६ ई० के बाद स्थापित हुए, पर डलहौजी के समय में जिलों में सरकारी स्कूल खोले गये तथा अन्य स्कूलों व कालेजों को सरकारी सहायता दी गयी।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—'सती प्रथा' का क्या अर्थ है? इस प्रथा का आरम्भ किस प्रकार हुआ? इस प्रथा में क्या दोष थे?

२—सती प्रथा को रोकने के लिए किस-किस ने प्रयत्न किये?

३—अंग्रेजी राज्य में कब और किसके समय में सती प्रथा को अवैध और दण्डनीय करार दिया गया?

४—भारत में 'बालहत्या' और 'नरबलि' की प्रथाएं किस प्रकार चल पड़ीं? अंग्रेजी राज्य में किसने इन कुरीतियों को रोका?

५—भारत में अंग्रेजी शिक्षा का आरम्भ कैसे हुआ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६—मैकाले कौन था ? वह अंग्रेजी शिक्षा के पक्ष में क्यों था ?

७—राजा राममोहन राय अंग्रेजी शिक्षा के पक्षपाती क्यों थे ?

८—अंग्रेजी सरकार की ओर से किसके समय में अंग्रेजी शिक्षा के पक्ष में फैसला किया गया ?

९—अंग्रेजी शिक्षा से क्या लाभ और हानियाँ हुईं ?

१०—चार्ल्स वुड के शिक्षा सम्बन्धी आदेश-पत्र के विषय में क्या जानते हो ?

११—रिक्त स्थानों की पूर्ति करो ।

(क) जिस कार्य का············ई० में क्लाइव ने श्रीगणेश किया था,·········ई० तक लार्ड डलहौजी ने उसकी पूर्ति कर दी ।

(ख) मैकाले···········को तुच्छ समझता था और अंग्रेजी का पक्षपाती था । वह भारत में एक ऐसा वर्ग पैदा करना चाहता था जो रंग में चाहे काला हो पर······,······,······और········में अंग्रेजों के सदृश हो ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ५—सार्वजनिक निर्माण विभाग तथा वैज्ञानिक आविष्कारों का उपयोग

डलहौजी के शासनकाल में अनेक ऐसे कार्य किये गये जिनसे देश का कायाकल्प हो गया। उनकी महत्ता का अनुभव करने के लिए तुम देश की उस अवस्था की कल्पना करो, यदि यहाँ से रेलों अथवा तारों को उठा लिया जाय।

रेल व तार

कहा जाता हैं कि डलडौजी का उद्‌देश्य रेल और तार की व्यवस्था से कम्पनी के राज्य को स्थायी और दृढ़ करना था। सैनिक दृष्टि से रेल और तार दोनों का बड़ा महत्व था। रेलों के द्वारा सेनाएँ देश के एक भाग से दूसरे भाग को तेज चाल से भेजी जा सकती थीं। तारों के द्वारा समाचारों को शीघ्र भेजने की सुविधा हो गयी थी। रेल और तार की स्थापना से अंग्रेज पूँजीपतियों को मुनाफा कमाने का एक नया मैदान मिल गया। रेलों के निर्माण के लिए अंग्रेजी कम्पनियों को ठेके दिये गये जिनमें सरकार ने उनसे ठहराव किया कि उनको पूँजी पर ५% से जितना कम लाभ होगा उतना सरकार भरेगी। फलतः १८५८ ई० तक सात अंग्रेजी कम्पनियाँ भारत में खुल गयीं। उन्हें रेलों, तारों और बड़ी सड़कों के बनाने के ठेके दिये गये जिससे उन्हें लाखों रुपये का लाभ हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रसंग में एक बात ध्यान में रखने योग्य है। डलहौजी या अन्य साम्राज्यवादी अंग्रेजों का रेल व तार की व्यवस्था से चाहे जो उद्देश्य रहा हो, भारतवासियों को उनसे अपूर्व लाभ पहुँचा । यात्रा, व्यापार आदि की सुविधाएं हो गयीं और चारों दिशाओं के देशवासियों को एक दूसरे से मिलने-जुलने के अधिक अवसर प्राप्त हुए ।

डाक की व्यवस्था

डलहौजी के शासन के शुरू में डाक की व्यवस्था बड़ी दोषपूर्ण थी । देश में महसूल की दर एक नहीं थी और महसूल पत्र पानेवालों से लिया जाता था । परिणाम यह होता था कि बहुत से डाकखानेवाले कुछ अधिक पैसा पाये बिना पत्र देते ही न थे । डलहौजी ने इन दोषों को दूर करने के लिए टिकट चलाये और सारे देश के लिए महसूल की एक दर निश्चित की । आधा तोला तक वजन वाले पत्र दो पैसे का टिकट लगाने पर देश में जहाँ चाहे वहाँ भेजे जा सकते थे । इस प्रकार की व्यवस्था से जन-साधारण को जो सुख हुआ उसका अनुमान तुम सहज में कर सकते हो ।

सार्वजनिक निर्माण विभाग

अभी तक सरकारी इमारतें, सड़कें, पुल आदि बनवाने का काम सेना के बोर्ड द्वारा हुआ करता था । डलहौजी ने उनके लिए नया विभाग खोला जो **पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट** के नाम से प्रसिद्ध हुआ । इसका अर्थ सार्वजनिक निर्माण विभाग है । इस विभाग का अध्यक्ष चीफ इंजीनियर बनाया गया एवं उसकी सहायता के लिए अन्य इंजी-नियर नियुक्त किये गये । उस समय ये सारे अफसर इंग्लैंड से बुलाये गये थे । गंगा की नहर और ग्रांड ट्रंक रोड का निर्माण उनकी देखरेख में हुआ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतिहास में लार्ड डलहौजी का महत्व

तुमने पीछे एक पाठ में डलहौजी के डाक्ट्रिन आफ लैप्स का वर्णन पढ़ते हुए भारतीय राजाओं और नवाबों के साथ उसके कठोर व्यवहार का अवलोकन किया है। इस नीति के कारण उसने अपने देश ब्रिटेन की चाहे जितनी सेवा की हो, भारतवासी उसकी निन्दा करते हैं। भारतीयों के लिए तो उसकी महानता भारत में सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना एवं वैज्ञानिक आविष्कारों के उपयोग के कारण मानी जाती है। इस दृष्टि से डलहौजी को आधुनिक भारत का बनाने वाला समझा जाता है। उसके सुधार के कामों रेल, तार, डाक, सार्वजनिक निर्माण विभाग, स्कूलों, कालेजों एवं विश्वविद्यालयों की व्यवस्था आदि ने इस देश को नवीनता का रूप दिया। कम्पनी के किसी दूसरे गवर्नर-जनरल ने इस प्रकार के जनहित के कामों को नहीं किया था।

कुछ इतिहास के विद्वानों के मत के अनुसार लार्ड डलहौजी के सुधारों का उद्देश्य भी अंग्रेजी साम्राज्य को ही भारत में दृढ़ करना था। डा० ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है कि 'उसमें भारतीय जनता के प्रति हितैषिता की भावना न थी। रेल, तार, डाकखाना, शिक्षा आदि के विभागों की जो नयी व्यवस्था की गयी उससे अप्रत्यक्ष रूप से भारतवासियों को अवश्य लाभ हुआ, परन्तु उसका मुख्य लक्ष्य अंग्रेजी यातायात को सुविधाजनक बनाना एवं अंग्रेजी शासन को लोकप्रिय दिखाने का स्वाँग रचना था।'

अभ्यास के लिए प्रश्न--

१—रेलों की व्यवस्था भारत में कब की गयी ? इससे देश को क्या हानि अथवा लाभ हुआ ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२—भारत में तार भेजने का काम कब शुरू हुआ ? इससे देश को क्या हानि-लाभ हुए ?

३—भारत में डलहौजी ने डाक की क्या व्यवस्था की ?

४—भारत में सार्वजनिक निर्माण विभाग (पी० डब्लू० डी०) कब खोला गया ?

५—इतिहास में लार्ड डलहौजी का क्या महत्व है ?

६—डाक्टर ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है कि 'डलहौजी में भारतीय जनता के प्रति हितैषिता की भावना न थी। रेल, तार, डाकखाना, शिक्षा आदि के विभागों की जो नयी व्यवस्था की गयी उससे अप्रत्यक्ष रूप से भारतवासियों को अवश्य लाभ हुआ, परन्तु उसका मुख्य लक्ष्य अंग्रेजी यातायात को सुविधाजनक बनाना एवं अंग्रेजी शासन को लोकप्रिय दिखाने का स्वाँग रचना था।' क्या तुम इस मत से सहमत हो ? क्यों ?

अपने अध्यापक की सहायता से इस विषय पर अपनी स्कूल सभा में वाद-विवाद करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महानक्रान्ति-स्वाधीनता का पहला संग्राम (१८५७-५८ई०)

पाठ १—क्रान्ति के कारण

तुम पिछले पाठों में अंग्रेजी राज्य की नींव, निर्माण एवं सम्पूर्ति का इतिहास पढ़ चुके हो। नींव क्लाइव ने डाली। वारेन हेस्टिंग्ज ने उसे दृढ़ किया। नींव पर भवन-निर्माण का काम वेलेजली, हेस्टिंग्ज और हार्डिंग्ज ने किया तथा उसकी सम्पूर्ति डलहौजी ने की। परन्तु इससे यह न समझ लेना चाहिए कि भारतीयों में अंग्रेजों के प्रति विरोध की भावना खत्म हो गयी थी। भारत के प्रत्येक भाग के किसी न किसी कोने में अब भी स्वाभिमान के अंकुर विद्यमान थे। इन्ही अंकुरों ने मिलकर सन् ५७ में अंग्रेजों के विरुद्ध एक विशाल रूप धारण कर लिया।

क्रान्ति के प्रारम्भिक नेता

अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति के लिए संगठन करना है—सबसे पहले यह संकल्प सम्भवत: **नानासाहब** ने किया जो बिठूर में महाराष्ट्र के निर्वासित पेशवा बाजीराव द्वितीय के गोद लिए पुत्र थे और जिन्हें पेशवा के मरने पर डलहौजी ने पेंशन से वंचित कर दिया था। नानासाहब ने अपने वकील अजीमुल्ला को पेंशन के सम्बन्ध में इंग्लैंड भेजा। वहाँ सतारा के राजा के वकील रंगो बापूजी से उसकी भेंट हुई जो अपने राजा की वकालत करने इंग्लैंड गया था। दोनों ही इंग्लैंड में न्याय पाने में असफल रहे। फलत: दोनों ने अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी भावी योजना के विषय में आपस में परामर्श किया और अंग्रेजों की सैनिक शक्ति को जाँच लिया। इसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिए उस समय अवसर भी अच्छा था, क्योंकि अंग्रेज रूस के साथ क्रीमिया युद्ध (१८५४-५६ ई०) में फँसे थे।

नाना साहब

रंगो बापूजी तो सतारा लौट आया और वहाँ पहुँचकर उसने दक्षिण भारत के सरदारों और जनता को अंग्रेजों के विरुद्ध भड़काया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अजीमुल्ला रूस, मिस्र, इटली, टर्की आदि देशों में घूमता बिठूर लौटा। अब नानासाहब और अजीमुल्ला दोनों क्रान्ति का संगठन करने में लग गये। उन्होंने अपना लक्ष्य मुगल सम्राट बहादुरशाह के नेतृत्व में अंग्रेजों को भारत से निकालना बनाया। सम्राट और सम्राज्ञी (बेगम जीनत महल) नानासाहब से सहमत थे, **अतः उनके लाल किले** और दिल्ली नगर में गुप्त सभाएं होने लगीं। कलकत्ते **में** अवध का पदच्युत नवाब **वाजिद अलीशाह** और उसका मन्त्री **अली नकी खाँ भी गुप्त** रीति से योजना में सम्मिलित हो गये।

बहादुरशाह

तुमने पढ़ा है कि अंग्रेजी सेनाएं उस समय रूस के विरुद्ध **क्रीमिया युद्ध** (१८५४–५६ ई०) में फँसी थीं और **क्रान्ति** के लिए अवसर भी अच्छा था। अतः क्रान्ति के नेताओं ने अंग्रेजों के विरुद्ध प्रचार शुरू किया। अली नकी खाँ के आदमी साधुओं और फकीरों का वेश बनाकर कलकत्ते से चले और उत्तर भारत की हरएक फौजी छावनी में क्रान्ति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का प्रचार करने लगे। इन प्रचारकों में फैजाबाद का मौलवी अहमद शाह आगे चलकर क्रान्ति का प्रभावशाली नेता बन गया।

क्रान्ति का जनता में स्वागत

क्रान्ति के प्रचारकों ने अपना काम केवल सैनिकों तक ही सीमित नहीं रखा, वरन् अनेक सरकारी कर्मचारियों, पुलिस थानों एवं अंग्रेजों के बावर्चियों व भिश्तियों तक को अपने रंग में रँग लिया। उन्हें अपने प्रचार में बड़ी सफलता मिली, क्योंकि भारत की जनता में पहले ही से अंग्रेजों के प्रति विरोध के भाव विद्यमान थे।

भारत के लोग अंग्रेजी साम्राज्य की रीतिनीति से बड़े असन्तुष्ट थे। डलहौजी के साम्राज्यवाद ने राजाओं, रानियों, नवाबों, बेगमों आदि भारतीय सत्ताधारियों व सामन्तों पर चोट करके उन्हें विरुद्ध बना लिया था। भारत के व्यापारी और कारीगर अपने व्यापार और शिल्प की दुर्दशा से दुखी थे। देश का धन तेजी से इंग्लैंड जाता देख कर मध्य वर्ग भी चिन्तित था। विदेशी शिक्षा और पाश्चात्य सभ्यता के द्वार' भारतीय परम्पराओं पर आघात तथा

बेगम जीनत महल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईसाई पादरियों के प्रति सरकार के पक्षपात से जनसाधारण की धर्म-भावना को चोट पहुँची थी। अतः क्रान्ति के सन्देश का सर्वत्र स्वागत किया गया और उसके गुप्त प्रचार में सभी वर्गों ने सहयोग दिया।

क्रान्ति का संगठन

इस प्रकार अब अंग्रेजों के विरुद्ध वातावरण तैयार हो गया, तब

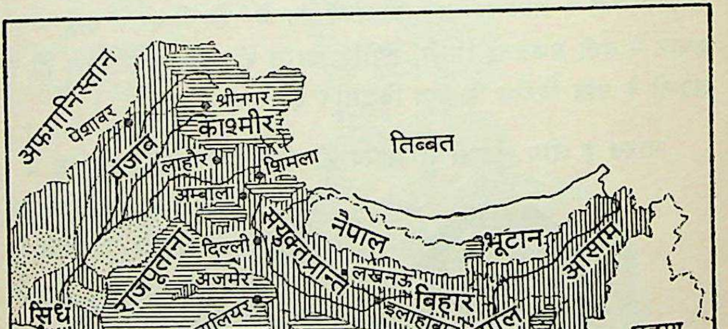

भारत (१८५७ ई०)

नानासाहब और अजीमुल्ला ने क्रान्ति को संगठित करने के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीर्थयात्रा के बहाने भारत में भ्रमण किया । **कमल का फूल** और **चपाती** क्रान्ति के चिह्न नियत किये गये एवं उन्हें क्रमशः सेना और गाँवों में घुमाया गया । इन **चिह्न** का अभिप्राय क्या था ? इस विषय में विद्वानों का मतभेद है । मालूम होता है कि कमल का फूल भारत की लक्ष्मी का प्रतीक था । सेना को समझाया गया कि क्रान्ति का उद्देश्य भारत की लक्ष्मी की रक्षा है । गाँवों में चपाती घुमाने का अभिप्राय ग्रामवासियों को यह सुझाना था कि पेट की रोटी के लिए अंग्रेजों को भारत से निकालना आवश्यक है ।

क्रान्ति के नेताओं का प्रभाव भारतीय सैनिकों पर जादू की तरह से हुआ । अंग्रेजों ने इस देश को भारतीय सैनिकों के बल से जीता था, लेकिन वेतन, भत्ते, पदोन्नति आदि में भारतीय सैनिकों और अंग्रेज सैनिकों में बड़ा भेद-भाव बरता जाता था । अंग्रेज अफसर उनके साथ दुर्व्यवहार करते थे। परेड के अवसर पर अपशब्द कहना तथा युद्धभूमि में उन्हें आगे कर देना मामूली बातें थीं । फलतः अपना अपमान और भीषण संहार सैनिकों को खलने लगा था । ऐसी अवस्था में जब उनके कानों में क्रान्ति के ये शब्द पड़ें कि भाइयों ! तुम खुद ही विदेशी तलवार को अपने कलेजे में भोंक रहे हो, तब सैनिकों में विद्रोह के लिए कानाफूसी होने लगी । उन्हीं दिनों सेना में **चर्बी से सने कारतूस** प्रयोग में आये थे, चलाने के पूर्व जिनके सिरों को दाँतों से काटना पड़ता था । सेना में यह अफवाह फैल गयी कि कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी मिली है अतः सेना के क्रोध की अग्नि भड़क उठी ।

क्रान्ति की योजना की रूपरेखा

क्रान्ति के नेताओं ने **३१ मई, १८५७ ई० को सारे देश में एक साथ क्रान्ति के प्रहार की योजना बनाई थी** । उनका कार्य-क्रम यह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था—यूरोपीय अफसरों का बध, जेलों को तोड़कर बंदियों की मुक्ति, सरकारी खजानों पर कब्जा, रेलों और तारों का नाश तथा किलों व अस्त्रागारों पर अधिकार। योजना की यह सारी रूपरेखा इतनी बुद्धिमानी और सावधानी से बनायी गयी थी कि अंग्रेजों को तनिक भी पता न चला। उस समय अंग्रेजी शासन के विरुद्ध असन्तोष इतना बढ़ गया था कि भारतीय सैनिक विरोध के लिए उतावले से हो गये। उन्होंने बंगाल की बारकपुर छावनी में विद्रोह कर दिया। वे ३१ मई तक न ठहरे। दो महीने पहले २९ मार्च को ही वहाँ की सेना के एक सैनिक ने तीन अंग्रेज अफसरों को मार डाला। राजनेताओं ने बड़ी कोशिश की थी कि सेना नियत तिथि से पहले विद्रोह न करे, परन्तु उनके प्रयत्न सफल नहीं हुए।

अभ्यास के लिए प्रश्न-—

१—भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के लिए कौन-कौन अंग्रेज अफसर प्रसिद्ध हैं ?

२—सन्'५७ की क्रान्ति का विचार पहले किसके हृदय में पैदा हुआ?

३—क्रान्ति के लिए प्रचार किस प्रकार किया गया ?

४—भारत के लोग अंग्रेजी साम्राज्य की राजनीति से क्यों असंतुष्ट थे?

५—क्रान्ति के नेताओं के प्रचार का सेना पर क्या प्रभाव हुआ ? क्यों ?

६—'चर्बी से सने कारतूस' क्या थे ? उनके प्रयोग से सेना में असन्तोष क्यों पैदा हुआ ?

७—क्रान्ति की योजना की रूपरेखा का वर्णन करो ?

८—बारकपुर छावनी के सैनिक क्या गलती कर बैठे ?

९—निम्नलिखित व्यक्तियों के विषय में क्या जानते हो :—
(क) अजीमुल्ला (ख) रंगो बापूजी (ग) अली नकी खां (घ) मौलवी अहमदशाह।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—स्वाधीनता संग्राम की मुख्य घटनाएं

संग्राम का आरम्भ

चर्बी से सने कारतूसों के कारण सेना में बड़ी बेचैनी थी। उनका उपयोग सबसे पहले बारकपुर की छावनी में हुआ। वहाँ सैनिकों ने कारतूसों के प्रयोग से इनकार कर दिया। २६ मार्च को मंगल पाँडे ने परेड से निकल अपने साथियों को धर्म-युद्ध के लिए पुकारा। उसे पकड़ने के लिए जो अफसर आगे आया, मंगल पांडे ने उसको ढेर कर दिया। तब मंगल पांडे को बन्दी बनाकर राजद्रोह के अभियोग में अंग्रेजी सरकार ने उसे फाँसी दे दी (८ अप्रैल) एवं बारकपुर की पल्टन तोड़ दी।

बारकपुर की घटना के बाद **मेरठ** में भी वही हाल हुआ। कारतूसों के प्रयोग से इनकार करने वाले सैनिकों को दण्ड के रूप में दस-दस वर्षों की सजाएं दी गयीं। इससे सैनिकों और नगर के लोगों में क्रोधाग्नि जल उठी। उन लोगों ने बन्दीगृह को तोड़कर बन्दियों की बेड़ियाँ काट डालीं, तथा जहाँ कहीं कोई अंग्रेज दिखायी दिया वहीं उसे मार डाला (१० मई)। क्रान्ति शुरू हो गयी। अब क्रान्तिकारी **दिल्ली** की ओर बढ़े। वहाँ दिल्ली के क्रान्तिकारी उनसे आ मिले। दिल्ली में उस समय नाममात्र को अंग्रेज सैनिक थे। उनका अन्त करके क्रान्तिकारी लाल किले में पहुँचे और सम्राट बहादुरशाह से कहा कि हमारा नेतृत्व कीजिए। उसने देखा कि अब ३१ मई तक रुके रहना सम्भव नहीं, अतः स्वाधीनता की घोषणा कर दी। किले के पास शस्त्रागार पर जब क्रान्तिकारियों ने कब्जा करने का प्रयत्न किया, तब उसके संरक्षकों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ने उसमें आग लगा दी। अतः शस्त्र क्रान्तिकारियों को न मिल सके, पर दिल्ली पूर्णरूप से स्वाधीन हो गयी और दिल्ली से अंग्रेजी राज्य के सब चिह्न मिट गये। **लाल किले पर बहादुरशाह की हरी पताका फहराने लगी।**

क्रान्ति का व्यापक रूप

मेरठ पल्टन की उतावली से क्रान्ति के नेताओं की योजनाएं गड़बड़ा गयीं। अंग्रेज सचेत हो गये और जहाँ- जहाँ हो सका, वहाँ उन्होंने देशी सेनाओं से हथियार रखवा लिये। पंजाब की कई सेनाओं की यही दुर्दशा हुई।

गवर्नर-जनरल **लार्ड केनिंग** ने क्रान्तिकारियों द्वारा दिल्ली की विजय का समाचार सुनते ही जंगी लाट को दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए भेजा और सारे देश में अपने गुप्तचरों के द्वारा क्रान्तिकारियों की गति-विधि का पता लगाया। उसने क्रान्तिकारियों में फूट डालने के प्रयत्न किये और देशी राजाओं को अपनी ओर मिलाने के लिए उन्हें तरह-तरह के प्रलोभन दिये।

जंगी लाट शिमला से अम्बाला होते हुए दिल्ली को रवाना हुआ। वहाँ उसकी मदद के लिए **पटियाला, नाभा** और **जींद** के राजाओं ने **अपनी सिक्ख सेनाएँ** दीं। ये राजे रणजीतसिंह के समय से ही अंग्रेजों की शरण में थे और आंग्ल-सिक्ख युद्धों में भी अपने भाइयों के विरुद्ध लड़े थे। सिक्ख सेना के साथ अंग्रेजी सेना दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए बढ़ी (३० जून)। उधर ३१ मई से लेकर १० जून तक **रुहेलखण्ड,** दोआब और **अवध** में सेना और जनता ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वाधीनता की घोषणा करके बहादुरशाह की हरी पताका अपने वहाँ फहरा दी थी ।

इस प्रसंग में देशी राजाओं के नाम बहादुरशाह का एक पत्र पढ़ने योग्य है। उसने लिखा था कि "मेरी यह दिली तमन्ना है कि जिस जरिये और जिस कीमत पर भी हो फिरंगियों को हिन्दुस्तान से बाहर निकाल दिया जाय। मेरी यह जबरदस्त ख्वाहिश है कि तमाम हिन्दुस्तान को फिरंगियों से आजाद किया जाय। लेकिन इस मकसद को हासिल करने के लिए जो इनकलाबी जंग शुरू कर दिया गया है वह उस वक्त तक फतेहयाब नहीं हो सकता जब तक कोई ऐसा शख्स, जो इस तमाम तहरीक के बोझ को अपने ऊपर उठा सके, जो कौम की मुख्तलिफ ताकतों को एक धागे में पिरो कर अपने को तमाम कौम का नुमाइन्दा कह सके, मैदान में आकर इस अजीमुश्शान कोशिश की बागडोर अपने हाथों में न ले ले। अपने पाक वतन से फिरंगियों को निकाल देने के बाद मुगल खानदान के जाती फायदे के लिए हिन्दुस्तान पर हुकूमत करने की मेरी जरा भी ख्वाहिश नहीं है। अगर आप मेरे सब सरदार दुश्मन को निकालने की गरज से अपनी तलवार खींचने के लिए तैयार हों, तो मैं इसके लिए राजी हूँ कि हिन्दुस्तान पर हुकूमत करने के अपने खानदान के तमाम शाही अख्तियारात और पुश्तैनी हुकूक अपने सरदारों की एक ऐसी कौंसिल के हाथ में सौंप दूँ जो इस काम के लिए मुन्तखिब हो जाय।"

कानपुर के अंग्रेजों ने किले में शरण ली। नानासाहब ने उसका घेरा डाल दिया। **लखनऊ** में अंग्रेज लोग रेजीडेंसी में बन्द होकर अपनी रक्षा का प्रयत्न करने लगे। अवध के क्रान्तिकारियों ने रेजीडेंसी को घेर लिया। फैजाबाद का मौलवी अहमदशाह उनका नेता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। इस प्रसंग में एक बात विशेषरूप से उल्लेखनीय है कि क्रान्ति के नेताओं ने जगह-जगह व्यक्तिगत रूप से अंग्रेज परिवारों को अपने घरों में शरण दी एवं उन्हें लखनऊ या वाराणसी सुरक्षित पहुँचा दिया।

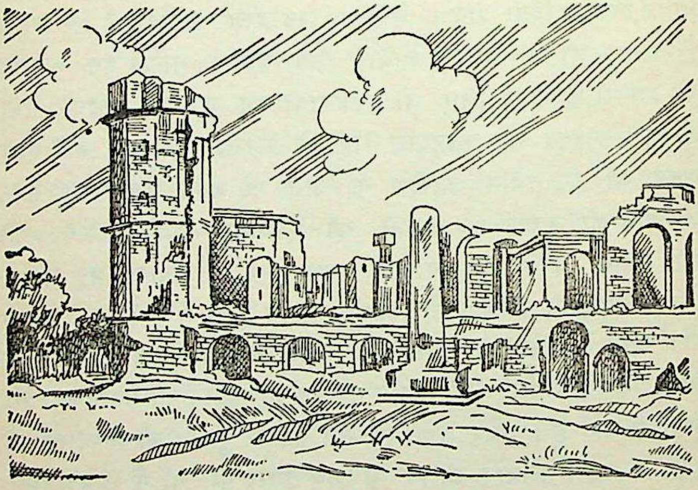

लखनऊ की रेजीडेंसी

बंगाल में क्रान्ति का संगठन दोआब की भाँति मजबूत न था। दूसरे बारकपुर की घटना से सरकार चौकन्नी हो गयी थी। उसने वाजिदअलीशाह और अली नकी खाँ को किले में बन्दी बना लिया (१५ जून)। बिहार में जगदीशपुर के वृद्ध राजा कुँवर सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध तलवार खींची। **राजस्थान** में अनेक राजपूत राजे चुप रहे, पर नसीराबाद (अजमेर) की पल्टन ने विद्रोह किया और दिल्ली की ओर चल दी। **बुन्देलखण्ड** में झाँसी की रानी और बांदा के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
नवाब ने योजना के अनुसार ठीक समय पर **युद्ध** छेड़ा । **पंजाब** में जलन्धर की पुरविया सेना ने विद्रोह करके लुधियाना ले लिया और फिर दिल्ली की ओर चल दी । सिक्ख पिछली हारों से साहसहीन हो चुके थे और उनके सरदार पहले से अंग्रेजों के हिमायती थे । उन्होंने अंग्रेजों का साथ दिया । दक्षिण में क्रान्ति की आग विशेषरूप से नहीं सुलगी, क्योंकि क्रान्ति के नेता वहाँ अभी संगठन नहीं कर पाये थे । अतः रंगो बापूजी को भागना और उसके पुत्र को फाँसी पर झूलना पड़ा ।

प्रतिक्रिया

ऊपर तुम अंग्रेजी सरकार के जंगी लाट के विषय में पढ़ चुके हो कि उसे सिक्खों की सहायता मिल गयी थी और वह दिल्ली के पास जा पहुँचा था । वहाँ एक गोरखा पल्टन भी उससे आ मिली और दिल्ली को क्रान्तिकारियों से छीनने के लिए वहाँ भीषण युद्ध होने लगा ।

कानपुर में नाना साहब के मुकाबले के लिए वाराणसी से **सेनापति नील** की अंग्रेजी सेना चल चुकी थी । नील मार्ग में इलाहाबाद नगर पर अधिकार करता रह गया, अतः समय पर न पहुँच सका । कानपुर के अंग्रेजों ने निराश होकर अस्त्र-शस्त्र रख दिये । नानासाहब ने उन्हें इलाहाबाद पहुँचाने का प्रबन्ध किया । परन्तु जब वे लोग नावों में सवार हुए, तब उत्तेजित भीड़ ने गोलियाँ चला दीं क्योंकि नील ने इलाहाबाद में जनता पर ऐसे बर्बर अत्याचार किये थे कि कानपुर में लोगों के हृदयों में प्रतिहिंसा की आग धू-धू जल रही थी । बड़ी मुश्किल से स्त्रियाँ और बच्चे बचाये जा सके । उन्हें किले में नजरबन्द रखा गया । परन्तु उत्तेजित सिपाहियों ने जब यह देखा कि वे लोग चुपके-चुपके इलाहाबाद को समाचार भेजते हैं, तब नाना से पूछे विना उनको मार कर कुएँ में फेंक दिया । कुछ अंग्रेज इतिहास-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कारों ने इस हत्या में नानासाहब का हाथ बताया है जो आधुनिक खोजों से गलत साबित होता है। कानपुर में अंग्रेजों का सफाया होने के बाद वहाँ नानासाहब का पूर्ण प्रभुत्व हो गया। अब नाना ने पेशवा पद ग्रहण किया।

अभ्यास के लिए प्रश्न----

१—सन् '५७ का स्वतन्त्रता-संग्राम मेरठ में किस प्रकार आरम्भ हुआ?

२—सन् '५७ में दिल्ली में क्रान्तिकारियों का अधिकार किस प्रकार हुआ?

३—कानपुर में सन् '५७ की क्रान्ति किस प्रकार आरम्भ हुई?

४—कानपुर में अंग्रेजों की हत्या का क्या कारण था?

५—सन् '५७ के स्वाधीनता-संग्राम में किन प्रान्तों ने विशेष भाग लिया?

६—सन् '५७ में सिक्खों ने क्रान्तिकारियों का विरोध क्यों किया?

पाठ ३—क्रान्ति की विफलता और शासन में परिवर्तन

नानासाहब की विफलता

अंग्रेजों के इलाहाबाद पर अधिकार होने के बाद गवर्नर-जनरल केनिंग ने उस नगर को सैनिक कार्यक्रम का केन्द्र बनाया। वहाँ से उसने दो बड़ी सेनाओं के साथ हैवलाक को कानपुर की ओर रवाना किया। कानपुर में नानासाहब की हार हुई (१७ जुलाई, सन् ५७)। परन्तु जब हैवलाक लखनऊ बचाने के लिए गया, तब नानासाहब ने बिठूर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ले लिया । हैवलाक फिर लौटा और नाना की सेना को देखकर घबरा गया । उसने कलकत्ता को मदद के लिए लिखा ।

जब कानपुर में यह अवस्था थी, दिल्ली में अंग्रेजी सेना ने सिक्ख और गोरखों की मदद से क्रान्तिकारियों को हराकर सम्राट बहादुरशाह के पुत्रों को गोली से उड़ा दिया और सम्राट को देश-निकाला देकर रंगन भेज दिया था । दिल्ली के पतन से क्रान्ति को बड़ा धक्का पहुँचा ।

अब इंग्लैंड से नयी सेनाएं भी कलकत्ता और बम्बई पहुँच गयीं । कलकत्ते से सेनापति कैम्पबेल ने आकर स्थानीय अंग्रेजी सेना को मदद दी और लखनऊ में रेजीडेंसी को बचाया एवँ कानपुर पर अधिकार किया । नाना और तात्या टोपे हार गये । हार के बाद तात्या टोपे ग्वालियर पहुँचा और नाना उत्तर भारत में रहा । तत्पश्चात गोरखों की मदद से अंग्रेजों ने लखनऊ ले लिया (मार्च, १८५८ ई०) । लखनऊ के पतन से यद्यपि क्रान्तिकारी नेता घबरा गये, पर उन्होंने हिम्मत न हारी । अब उन्होंने अपनी युद्ध शैली बदल दी । खुले मैदान में युद्ध करने के बजाय छापामार युद्धों का आश्रय लेकर लड़ना आरम्भ किया ।

कानपुर के नानासाहब और लखनऊ के मौ० अहमदशाह शाहजहाँपुर आये । अंग्रेज उनके पीछे थे । वहाँ कई दिन तक युद्ध हुआ, परन्तु क्रान्तिकारी हारे । मौ० अहमद शाह वहाँ से बच निकला और पुनः अवध पहुँचा । वहाँ पावन के राजा के भाई ने उसकी हत्या करके (५ जून, १८५८ ई०) उसका सिर अंग्रेजों को पहुँचा दिया ।

देशभक्त मौ० अहमदशाह की हत्या से अवध में पुनः क्रान्ति की अग्नि प्रज्वलित हो गयी । नानासाहब तथा अन्य नेता वहाँ एकत्र होकर युद्ध करने लगे । जनता ने भी उनका साथ दिया । दिसम्बर, १८५८ में अवध के पदच्युत नवाब वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल की भी पराजय हो गयी और लखनऊ में पुनः स्थापित नवाबी सरकार का अन्त हो गया । पर अभी उसके युद्ध मंत्री राजा जयलालसिंह जीवित थे, उन्होंने हार नहीं मानी । अवध की समतल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भूमि छापामार युद्ध के उपयुक्त न थी, अतः नानासाहब की पुनः हार हुई और वह एवं उसके साथ के कुछ अन्य नेता नेपाल भाग गये। वहाँ उनका क्या हुआ, यह नहीं मालूम। अक्तूबर १८५९ को राजा जयलाल सिंह को अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया। उनका स्मारक लखनऊ में हजरत गंज के समीप चीनी बाजार फाटक के सामने बना है।

लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे की विफलता

डलहौजी ने **झांसी** के राजा की मृत्यु के बाद उसकी **विधवा** रानी लक्ष्मीबाई के गोद लिये पुत्र को गद्दी नहीं दी थी। लक्ष्मीबाई अंग्रेजों के इस अन्याय से क्षुब्ध थी। उसने बड़ी वीरता और योग्यता से मध्य भारत में क्रान्ति का नेतृत्व किया और अन्त तक अंग्रेजों से लड़ती रहीं। उसका मुकाबला करने के लिए झाँसी की ओर वह सेना बढ़ी, जो सेनापति **ह्यूरोज** की अध्यक्षता में इंग्लैंड से आकर बम्बई में उतरी थी। लक्ष्मीबाई ने युद्ध की पूरी तैयारी कर ली थी। उसकी सहायता के लिए ग्वालियर से **तात्या टोपे** रवाना हुआ परन्तु, झाँसी में रानी से मिलने के पहले ही ह्यूरोज ने उसे हरा दिया। झाँसी में भीषण युद्ध हुआ। जब ह्यूरोज की कुछ न चली, तब उसने छल-कपट से काम कर झाँसी के कुछ विश्वासघातियों को अपनी ओर मिलाया। उन्होंने किले का एक फाटक खोल दिया। अंग्रेजी सेना किले में घुस पड़ी, परन्तु लक्ष्मीबाई अपने दत्तक पुत्र को कमर में बाँध अंग्रेजी सेना को चीरती हुई निकल गयी और **कालपी** पहुँची (अप्रैल, १८५८ ई०)। कालपी में क्रान्ति के अन्य नेता—तात्या टोपे, नवाब, बाँदा आदि युद्ध के लिए एकत्र हो गये। ह्यूरोज ने कालपी पर भी अधिकार कर लिया, (मई, १८५८ ई०), परन्तु लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे हाथ न आये। वे ग्वालियर पहुँचे। ग्वालियर का शिन्दे अंग्रेजों का मित्र था, परन्तु सेना ने क्रान्ति के नेताओं का साथ दिया और रानी लक्ष्मीबाई ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

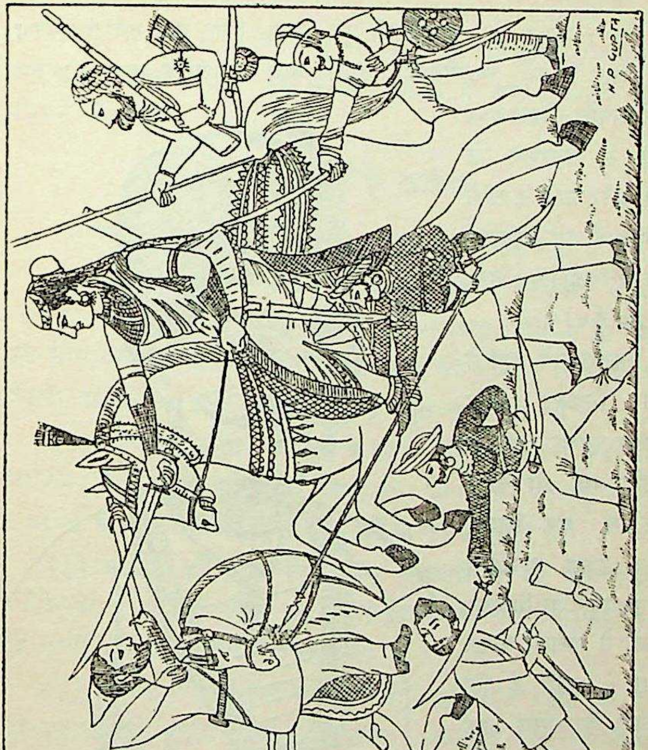

रणक्षेत्र में लक्ष्मीबाई (एक समकालीन चित्र से)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ह्यूरोज ने ग्वालियर को घेरा। पहले दिन तो उसकी हार हुई, परन्तु अगले दिन अंग्रजों की एक अन्य सेना आ गयी। भीषण युद्ध हुआ जिसमें लक्ष्मीबाई मारी गयी। उनके शव को एक विश्वासपात्र नौकर गुप्त रीति से बचाकर ले आया और उसी ने रानी लक्ष्मीबाई का अंत्येष्टि संस्कार किया (१८ जून, १८५८ ई०)।

क्रान्ति का वीर सेनापति तात्या टोपे

तात्या टोपे वहाँ से भाग निकला और नागपुर पहुँचा। अंग्रेजों ने उसे वहाँ भी चारों ओर से घेर लिया, परन्तु पकड़ न सके। वह उदयपुर जा निकला। अंग्रेजों ने उसका पीछा किया। कहते हैं कि अलवर के पास एक विश्वासघाती ने आधी रात को उसे पकड़वा दिया (७ अप्रैल, १८५९ ई०)। अंग्रेजों ने देशभक्त तात्या टोपे को फांसी पर लटका दिया।

इस प्रकार पेशवा के पुत्र नानासाहब ने जिस महान क्रान्ति का बीड़ा उठाया था, उसके सेनापति तात्या टोपे ने अन्त तक उसकी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाज रखी। उसके प्राणदण्ड के समय तक प्राय: सभी क्रान्तिकारी नेता मारे जा चुके थे या विवश होकर अपने देश को छोड़कर बाहर चले गये थे। स्वतन्त्रता का पहला संग्राम समाप्त हो गया। महान क्रान्ति विफल हो गयी।

विफलता के कारण

क्रान्ति की विफलता के कारण बताना कुछ कठिन नहीं है।

(१) **क्रान्ति की योजना गुप्त न रह सकी।** निश्चित तिथि के पहले क्रान्ति के आरम्भ हो जाने के भीषण परिणाम हुए—न तो देश में एक साथ विस्फोट हो पाया जैसी कि योजना थी और न देशव्यापी पूरी तैयारी हो पायी। उलटे अंग्रेज समय से पहले सचेत हो गये।

(२) **राष्ट्रीय एकता का अभाव रहा।** अनेक देशी राजाओं जैसे ग्वालियर के शिन्दे व नेपाल के राणा तथा सिक्ख एवं गोरखा सेनाओं ने क्रान्ति में भाग लेना तो दूर, उल्टे अंग्रेजों की सहायता की।

(३) **अंग्रेजों की कूटनीति अनेक देशवासियों को विश्वासघात** के लिए प्रेरित करने में सफल हुई जिसके फलस्वरूप कई नेता पकड़े गये एवं झांसी जैसे किले हाथ से निकल गये।

(४) **क्रान्ति ने कोई ऐसा सर्वमान्य नेता नहीं पैदा किया** जो सेना संचालन की एक सूत्रता स्थापित कर सकता। बहादुर शाह नेता घोषित किया गया अवश्य, परन्तु वह बहुत बूढ़ा और बेअसर था। एक सर्वमान्य नेता के अभाव में क्रान्ति के विभिन्न मोर्चों में एकसूत्रता और सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाया।

(५) **स्वतंत्रता का युद्ध इतना लम्बा हो गया** कि इंग्लैंड से नयी सेनाएं और नये योग्य सेनापतियों को आने का अवसर मिल गया।

शासन में परिवर्तन

भारत की क्रान्ति से इंग्लैंड के राजनीतिज्ञों का ध्यान भारत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की ओर आकृष्ट हुआ। वे लोग जान गये कि अब भारत में राज्य करना कम्पनी के वश का काम नहीं है। अतः शासन-सत्ता कम्पनी के हाथों से ले ली गयी। अब भारत **ब्रिटिश पार्लमिंट** के अधीन हो गया। इसके लिए पार्लमिंट ने 'एक्ट फार दि बेटर गवर्मेंट आफ इण्डिया' नाम का कानून पास करके गवर्नर-जनरल को **वायसराय** अर्थात् इंग्लैंड के राजा का राज-प्रतिनिधि बनाया तथा बोर्ड आफ कंट्रोल और डाइरेक्टरों के स्थान पर **सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इंडिया** (भारत के लिए राज्य सचिव) नियत किया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—नानासाहब और अंग्रेजों के युद्ध का वर्णन करो।

२—दिल्ली का पतन किस प्रकार हुआ? उसका क्रान्ति की प्रगति पर क्या प्रभाव पड़ा?

३—लखनऊ पर अंग्रेजों के अधिकार से क्राति के युद्ध पर क्या प्रभाव पड़ा?

४—नानासाहब को अवध के युद्ध में सफलता क्यों नहीं मिली?

५—तात्या टोपे के विषय में क्या जानते हो? उसने सन् ५७' के स्वाधीनता संग्राम में क्या वीरता दिखायी?

६—रानी लक्ष्मीबाई कौन थी? उसने क्रान्ति में क्यों भाग लिया?

७—क्रान्ति की विफलता के मुख्य कारण क्या थे? क्रान्ति के बाद भारत के शासन-विधान में क्या परिवर्तन हुए?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ४ —महारानी विक्टोरिया का घोषणा-पत्र

कम्पनी के हाथों से शासन-सत्ता जिस समय पार्लमेंट के हाथ में गयी, उस समय इंग्लैंड में महारानी विक्टोरिया का राज्य था। यह संयोग की ही बात है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना एक महारानी (एलीजेबेथ) के शासन-काल में हुई थी और करीब ढाई सौ वर्षों के बाद उसकी समाप्ति भी एक दूसरी महारानी (विक्टोरिया) के राज्य काल में हुई।

बड़े नगरों में स्थित अजायबघरों में तुमने महारानी विक्टोरिया की पत्थर की मूर्तियाँ देखी होंगी जो नगरों के बड़े पार्कों में स्थापित थीं। अब भी कहीं-कहीं तुमने किसी भवन या वाटिका का नाम विक्टोरिया के नाम पर रखा सुना होगा। भारत के इतिहास में महारानी विक्टोरिया का बड़ा नाम है। उसकी नीति दया, उदारता और सहानुभूति से पूर्ण थी। इसी कारण हमारे बड़े-बूढ़े भारतवासी अब तक मलका को श्रद्धा और कृतज्ञता के साथ याद करते हैं।

महारानी विक्टोरिया

शासन के हस्तान्तरण के समय महारानी विक्टोरिया की आज्ञा से एक घोषणा-पत्र भारतीय राजाओं और जनता के लिए तैयार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया गया जिसे प्रयाग में बड़ी धमधाम के साथ एक दरबार करके प्रथम वायसराय लार्ड केनिंग ने पढ़कर सुनाया (१ नवम्बर, १८५८ ई०)। घोषणा-पत्र में महारानी ने लिम्नलिखित शासन-नीति घोषित की थी:—

(१) **राज्यविस्तार की इच्छा का अन्त**—घोषणा-पत्र में विक्टोरिया ने विश्वास दिलाया कि इस समय भारत में हमारा जितना राज्य है, हम उसे और अधिक बढ़ाना नहीं चाहते।

(२) **राजाओं के अधिकारों की रक्षा**—विक्टोरिया ने देशी राजाओं के साथ कम्पनी की सन्धियों की रक्षा और वचनों के पालन का विश्वास दिलाते हुए कहा कि हम देशी राजाओं के अधिकारों, प्रतिष्ठा और मान-मर्यादा का अपने अधिकारों, प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा के समान आदर करेंगे।

(३) **प्रजापालन की प्रतिज्ञा**—विक्टोरिया ने अपनी घोषणा में वचन दिया कि हम जिस प्रकार अपने अन्य प्रजाजनों के प्रति कर्तव्य-पालन के लिए प्रतिज्ञा-बद्ध हैं, उसी प्रकार हम भारतवासियों के प्रति भी अपने कर्तव्यपालन के लिए प्रतिज्ञा-बद्ध रहेंगे। "सर्व-शक्तिमान परमात्मा के अनुग्रह से हम उन प्रतिज्ञाओं का निष्ठा और ईमानदारी से पालन करेंगे।"

(४) **धर्म के विषय में सहिष्णुता**—भारतवासियों के प्रति धार्मिक सहिष्णुता की नीति का पालन करने का विश्वास दिलाने के लिए विक्टोरिया ने कहा कि ईसाइ धर्म की सत्यता पर निर्भर रहते हुए और धर्म से प्राप्त शान्ति को कृतज्ञता के साथ स्वीकार करते हुए भी हम स्पष्ट रूप से घोषित करते हैं कि हमें अपना ईसाइ धर्म प्रजा से मनवाने की न तो कामना है और न अधिकार। हम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपना राजसंकल्प और हार्दिक इच्छा प्रकट करते हैं कि कोई व्यक्ति अपने धार्मिक विश्वास अथवा धार्मिक रीति-रिवाज के कारण न तो उपकृत किया जायगा और न पीड़ित या परेशान। सब लोगों की समान और निष्पक्ष रूप से कानून द्वारा रक्षा की जायगी।

महारानी विक्टोरिया ने अपने अधीन शासन-कर्मचारियों को आज्ञा दी कि वे हमारे किसी प्रजाजन के धार्मिक विश्वास या उपासना में हस्तक्षेप न करें अन्यथा वे हमारी अत्यन्त अप्रसन्नता के पात्र होंगे।

(५) **नौकरी के समान अवसर—** विक्टोरिया ने अपना संकल्प प्रकट किया कि हम यथासम्भव अपनी प्रजा के सब धर्मों और वर्गों के लोगों को निष्पक्षरूप से उनकी शिक्षा, योग्यता और कार्यक्षमता के अनुरूप सरकारी नौकरी में प्रविष्ट करेंगे।

(६) **सम्पत्ति अधिकार की रक्षा—** विक्टोरिया ने अपने घोषणा-पत्र में स्वीकार किया कि भारतीयों ने जो भूमि अपने पूर्वजों से प्राप्त की है, उसके लिए उसके अन्दर जो ममता है, उसे हम जानते और मानते हैं। हम उनके अधिकारों की रक्षा करना चाहते हैं, परन्तु उन्हें राज्य को न्यायानुकूल टैक्स देना होगा। हमारी इच्छा है कि कानून बनाते और उसे क्रियान्वित करते समय प्राचीन स्वत्वों एवं रीति-रिवाजों कायथायोग्य ध्यान रखा जाय।

(७) **विद्रोहियों को क्षमा—** विक्टोरिया ने विद्रोहियों की भर्त्सना करते हुए उन लोगों को क्षमा प्रदान की जिन्होंने किसी अंग्रेज का बध नहीं किया था। हत्या के अपराधियों के विषय में जांच पड़ताल करने का आश्वासन दिया गया।

(८) **भारतीयों के कल्याण की इच्छा—** विक्टोरिया ने अपने घोषणा-पत्र में अपनी हार्दिक ईच्छा इस प्रकार व्यक्त की कि जब ईश्वर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के वरदान से आन्तरिक शान्ति पुनः स्थापित हो जायेगी, तब हम देश के उद्योगों को प्रोत्साहित करेंगे, जनोपयोगी कार्यों और अभ्युत्थान की ओर ध्यान देंगे तथा समस्त भारतीय प्रजाजन के लिए शासन का संचालन करेंगे। हम समझेंगे कि भारतीयों की समृद्धि में हमारी शक्ति है, उनके सन्तोष में हमारी सुरक्षा है और उनकी कृतज्ञता में हमारा सर्वोत्तम पुरस्कार है (in their prosperity will be our strength, in their contentment our security and in their gratitude our best reward.)

घोषणा-पत्र को समाप्त करते हुए महारानी विक्टोरिया ने अन्तिम वाक्य में विनती की कि हे बलरूप भगवन, हमें एवं हमारे अधीन अधिकारियों को प्रजा-हित की हमारी इच्छा को कार्यान्वित करने के लिए बल प्रदान करो।

महारानी विक्टोरिया के घोषणा-पत्र में जिन भावों को प्रकट किया गया था, वे भारत के इतिहास में सदा अमर रहेंगे। यह बात दूसरी है कि ब्रिटिश पार्लमिंट के मंत्रियों अथवा भारत के अंग्रेज अधिकारियों ने उनका यथेष्ट पालन नहीं किया, परन्तु इसमें संदेह नहीं कि उक्त घोषणा-पत्र का प्रभाव भारतीय जनता पर बहुत अच्छा पड़ा। वह बड़ी हर्षित हुई और उसे ऐसा दिखायी पड़ा मानों भारत में एक नवीन युग का प्रादुर्भाव हो गया हो। घोषणा के पश्चात भारतमें ब्रिटिश पार्लमिंट का प्रत्यक्ष शासन शुरू हो गया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१– महारानी विक्टोरिया कौन थी ? उनका भारत के साथ क्या सम्बन्ध है ?

२– भारत के इतिहास में महारानी विक्टोरिया का क्या महत्व है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३– महारानी विक्टोरिया के घोषणा-पत्र की मुख्य बातें क्या थीं ?

४– विक्टोरिया के घोषणा-पत्र में ऐसी कौन सी बातें थीं जिनमें कम्पनी की शासन-नीति को उलटा गया हो ?

५– सिद्ध करो कि महारानी विक्टोरिया के घोषणा-पत्र में जिन भावों को प्रकट किया गया था वे भारत के इतिहास में सदा अमर रहेंगे ।

६– रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:–

(क) ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना·················नाम की एक महारानी के समय में हुई थी। संयोग से उसकी समाप्ति भी········ नाम की एक महारानी के समय में हुई।

(ख) महारानी विक्टोरिया की घोषणा (··············ई०) के पश्चात भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की जगह ···········का प्रत्यक्ष शासन स्थापित हो गया ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठा अध्याय

भारत में ब्रिटिश पार्लमिंट का राज्य (१८५८-१९०५ई०)

पाठ १--- अफगानिस्तान के साथ सम्बन्ध

भारत में ब्रिटिश पार्लमिंट का राज्य होने के बाद अब भारत सरकार की राजनीति इंग्लैंड की राजनीति का अनुसरण करने लगी। व्यापारी कम्पनी के समय जो आर्थिक लाभ व हानि का विचार था, वह अब उतना न रहा।

यूरोप महाद्वीप में उस समय इंग्लैंड और रूस में शत्रुता थी, क्योंकि इंग्लैंड ने रूस को टर्की पर अधिकार करने एवं भूमध्य सागर की ओर नहीं बढ़ने दिया था। अतः रूस ने पूर्व की ओर मध्य एशिया में अपने राज्य का विस्तार करना शुरू किया। रूस के विस्तार के कारण ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य तथा रूसी एशियाई साम्राज्य के बीच में केवल अफगानिस्तान का राज्य रह गया। अतः इंग्लैंड और रूस दोनों ही अफगानिस्तान में अपना प्रभाव कायम करने का प्रयत्न करने लगे।

उस समय अफगानिस्तान की आन्तरिक राजनीति बड़ी डावाँडोल थी। अतः इंग्लैंड और रूस दोनों को ही हस्तक्षेप का अवसर मिल गया १८६३ ई० में अमीर दोस्त मोहम्मद के मरने पर उसका पुत्र **शेरअली** गद्दी पर बैठा, परन्तु उसके दूसरे ११ भाइयों ने उसका विरोध किया। दोनों दलों ने भारत सरकार से सहायता माँगी, पर गवर्नर-जनरल लारेंस (१८६४-६९ई०) ने उस झगड़े में दखल नहीं दिया। इंग्लैंड

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के राजनीतिज्ञों ने लारेंस की इस प्रकार की अकमंण्यता की नीति का समर्थन नहीं किया।

१८७६ ई० में **लिटन** वायसराय बन कर आया। वह कलकत्ते से सीधे अम्बाला आया और उसने शेरअलीके पास संदेश भेजा कि वह काबुल में अंग्रेज रेजीडेंट रखे। उधर रूस ने भी उसी प्रकार की माँग की और अमीर को अपने राज्य में रूसी दूत रखने के लिए विवश कर दिया। लिटन ने दूत को रवाना करके शेरअली से पुनः उसे अपनी राजधानी में रखने का अनुरोध किया। जब अंग्रेजी दूत को खैबर के घाट में घुसने की आज्ञा न मिली, तब लिटन ने युद्ध की घोषणा कर दी (१८७८ ई०)। यह दूसरा अफगान युद्ध था।

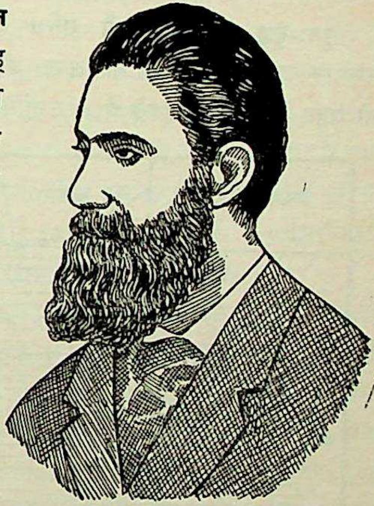

वायसराय लिटन (१८७६-८० ई०)

दूसरा आंग्ल-अफगान युद्ध (१८७८-१८८०)

अंग्रेजी सेनाएं तीन घाटों खैबर, कुर्रम और बोलन से होकर बढ़ीं। शेरअली घबरा गया। उसने रूस से मदद माँगी। सहायता न मिलने पर वह अपना देश छोड़कर तुर्किस्तान भाग गया और वहीं उसकी मृत्यु हो गयी। गद्दी पर उसका पुत्र **याकूबखाँ** बैठा। उसने अंग्रेजों से **गन्दमक में सन्धि** करके अपनी विदेशी नीति अंग्रेजों को सौंप दी (१८७९ ई०)। काबुल में अंग्रेज रेजीडेंट और अन्य महत्वपूर्ण नगरों में अंग्रेज कारिन्दे रखे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गये और यह निश्चय हुआ कि कुछ अंग्रेजी सेना जाड़े तक कन्दहार में ठहरेगी। अग्रेजों ने अमीर को ६ लाख रुपये वार्षिक देने का वचन दिया।

पुनः युद्ध :—गन्दमक की सन्धि शीघ्र ही भंग हो गयी, क्योंकि अफगान अपनी स्वतन्त्रता का अन्त और अपने देश में विदेशी सेना को सहन नहीं कर सकते थे। उन्होंने रेजीडेंट को मार डाला।

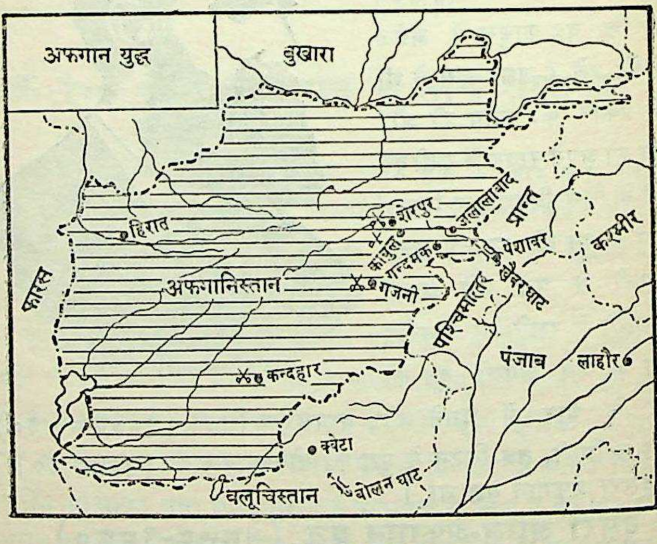

अफगान युद्ध

हत्यारे को दण्ड देने के लिए जनरल राबर्ट्स अफगानिस्तान पहुँचा और उसने काबुल एवं कन्दहार पर कब्जा कर लिया। याकूबखाँ ने डर कर आत्मसमर्पण कर दिया। पेंशन देकर उसे देहरादून भेज दिया गया। बाद को वहीं याकूबखाँ की मृत्यु हुई। अफगानिस्तान का राज्य दोस्त मुहम्मद के भतीजे **अब्दुर्रहमान** को मिल गया। उसने अंग्रेजों से सन्धि कर ली (१८८० ई०)। परन्तु अभी पूरा अफगानिस्तान अब्दुर्रहमान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
के अधिकार में नहीं आया था। शेरअली के पुत्र ने उसका विरोध किया। अब्दुर्रहमान की प्रार्थना पर राबर्ट्स फिर अफगानिस्तान पहुँचा, तब कहीं विरोधी पराजित हुआ और पूरा अफगानिस्तान अब्दुर्रहमान के अधिकार में आया। अंग्रेजी सेना अफगानिस्तान से लौट आयी (१८८१ ई०)।

रूसी-अफगानी सीमा-निर्धारण—१८८४ ई० में रूस और अफगानिस्तान में सीमा के विषय में झगड़ा हुआ। अंग्रेजों ने अमीर अब्दुर्रहमान से पूछा कि क्या अंग्रेजी सेना भेजी जाय। उसने इसे पसन्द नहीं किया। रूसी जहाँ तक अपनी सीमा समझते थे, अमीर ने उसे स्वीकार कर लिया। इस प्रकार रूस और अमीर की बुद्धिमानी से अफगानिस्तान रूस और इंग्लैंड के बीच का रणक्षेत्र बनने से बच गया।

अफगानी-अंग्रेजी सीमा-निर्धारण—अंग्रेज भारतीय साम्राज्य की पश्चिमोत्तर सीमा की सुरक्षा के लिए खैबर रेलवे बनाना चाहते थे। अमीर सहमत नहीं हुआ, क्योंकि उसकी धरती का कुछ भाग उसके हाथों से जाता रहता। सम्भव था कि दोनों दलों में संघर्ष हो जाता, पर दोनों ने उदारता से काम लिया और अंग्रेजी व अफगानी राज्यों के बीच सीमा निर्धारित कर ली (१८९३ ई०)। यह सीमा ड्यूरंड रेखा के नाम से प्रसिद्ध है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—क्या कारण था कि उन्नीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में रूस और इंग्लैंड दोनों अफगानिस्तान में अपना प्रभाव जमाना चाहते थे ?

२—दूसरे आँग्ल-अफगान युद्ध के क्या कारण थे ?

३—गन्दमक की सन्धि के विषय में क्या जानते हो ? यह क्यों भंग हुई ?

४—अब्दुर्रहमान अफगानिस्तान का अमीर कैसे बना ? अंग्रेजों के साथ उसकी सन्धि का वर्णन करो ?

५—ड्यूरंड रेखा क्या है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—सीमान्तों पर अग्रसर नीति

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की पश्चिमी और पूरबी सीमाओं पर पहाड़ी प्रदेश थे जिनमें अनेक छोटी-छोटी पर लड़ाकू और स्वातन्त्र्य प्रेमी जातियां निवास करती थीं। उनको वश में रखना ब्रिटिश साम्राज्य की शान्ति और सुरक्षा के लिए आवश्यक था। अतः अंग्रेजी सेनाएं सीमान्त प्रदेशों में तैनात की गयीं और अवसर मिलते ही सीमान्त जातियों को बन्धन में जकड़ा गया।

पश्चिमोत्तर

पश्चिमोत्तर में ड्यूरंड रेखा से भारत व अफगानिस्तान की सीमा निर्धारित होने के कारण सीमान्त की कुछ जातियां अंग्रेजों के प्रभाव-क्षेत्र में आ गयीं। अमीर ने १८लाख रुपये के बदले चमन, वजीरिस्तान,अफरीदी प्रदेश, कुर्रम, स्वात आदि प्रदेशों से अपना अधिकार छोड़ दिया।

आंग्ल-अफगान समझौते से दोनों देशों में पुनः मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो गये और अफगानिस्तान के अमीर को बड़ा हर्ष और सन्तोष हुआ। ड्यूरंड मिशन के कार्यों की आलोचना करते हुए उसने कहा था कि "अब मैं सर्वथा संतुष्ट हूँ कि मैंने अंग्रेजों से मित्रता करके जो कुछ खोया था उससे अधिक प्राप्त कर लिया। सर मार्टिमर ड्यूरंड के मिशन ने मेरी क्षतिपूर्ति करके समस्या को सुलझा दिया है। मैं इन बातों को केवल यह प्रकट करने के लिए लिख रहा हूँ कि यद्यपि इंग्लड अफगानिस्तान के किसी भाग पर अधिकार करना नहीं चाहता, तथापि वह उसे प्राप्त करने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देता। इस मित्र से मैंने रूस की अपेक्षा अधिक प्राप्त कर लिया है।"

अमीर के इस कथन से स्पष्ट है कि भारत सरकार के साथ समझौते से वह संतुष्ट हो गया था, परन्तु वह सीमान्त के स्वतन्त्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पठानों की ओर से कोई गारंटी नहीं दे सकता था। यह देखकर कि अंग्रेजों ने स्वतंत्र क्षेत्र में रेल के स्टेशन कायम कर लिये हैं, उसने भविष्यवाणी की थी कि कबाइली प्रान्त में किसी न किसी दिन युद्ध अवश्य होगा। उसकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।

१८९५ ई० में **चितराल में उपद्रव** हो गया। ड्यूरंड समझौते के अनुसार यह क्षेत्र अंग्रेजी प्रभाव में था। अतः अंग्रेज प्रतिनिधि वहाँ भेजा गया। उसे उपद्रवियों ने घेर लिया। तब अंग्रेजी सेना भेजी गयी। उसने उपद्रव शान्त किया। चितराल ने अपनी विदेशी नीति और सीमा की रक्षा का भार भारत सरकार को सौंप दिया। भारत सरकार ने चितराल से अंग्रेजी राज्य तक एक सड़क बनवायी और गिलगित में अंग्रेज अफसर को बिठा दिया। उसके पहले भारत सरकार ने पश्चिमोत्तर सीमान्त के एक अन्य प्रदेश में रेलपथ बोलन घाट के पार कोइटा और चमन तक पहुँचा दिया था। इन सब कार्यों से सीमान्त जातियों में अशान्ति फैल गयी (१८९७ ई०)। स्थान-स्थान पर विद्रोह हुए। अंग्रेजों से स्वातियों और अफरीदियों के भीषण युद्ध हुए, पर अफरीदी पूर्णतया दबे नहीं। अतः वायसराय **लार्ड कर्जन ने अंग्रेजी सीमान्त नीति में परिवर्तन किया**। उसने खैबर, कुर्रम और वजीरिस्तान से धीरे-धीरे अपनी सेनाएं तो लौटा लीं, पर उनकी जगह स्थानीय पठानों के **लश्कर** खड़े किए और इस प्रकार प्रचुर धन और विविध प्रलोभन देकर सीमान्त जातियों पर उन्हीं लोगों के द्वारा अपना प्रभुत्व स्थापित किया।

कबाइली क्षेत्रों से जो सेनाएँ हटायी गयीं, उन्हें कबाइली क्षेत्रों की सीमा पर स्थापित कन्टून्मेंटों (छावनियों) में रखा गया जिससे आवश्यकतानुसार उनका शीघ्र उपयोग किया जा सके। लार्ड कर्जन के पूर्व पंजाब के लेफ्टिनेंट-गवर्नर पर पश्चिमोत्तर सीमा के जिलों के नियन्त्रण का भार था। भारत सरकार का सीधा नियन्त्रण न था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अतः हरएक प्रशासन-कारवाई पंजाब सरकार के माध्यम द्वारा करनी पड़ती थी। इससे बड़ा विलम्ब हो जाता था। लार्ड कर्जन ने १६०१ ई० में एक पृथक **पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त** बनाकर उसका शासन चीफ कमिश्नर को सौंप दिया। वह वहाँ के शासन के लिए सीधा भारत सरकार के प्रति उत्तरदायी था।

पूर्वोत्तर

पूर्वोत्तर में उत्तरी ब्रह्मा पर अंग्रेजी अधिकार (१८८६ ई०) के बाद लूशाई-चिन प्रदेश चारों ओर से घिर गये। वहाँ मणिपुर तथा लूशाई में विद्रोह हुए जिनको दबाकर लूशाइयों को निःशस्त्र कर दिया गया (१८६२ ई०)। मणिपुर को अंग्रेजी राज्य में सम्मिलित न करके वहाँ के राजवंश के एक अल्पायु बालक को गद्दी पर बिठा दिया गया एवं उसकी सहायता के लिए ब्रिटिश पोलिटिकल एजेंट को रख दिया गया।

पार्लमिंट के शासन-काल में सीमान्तों पर बरती गयी नीति से प्रकट होता है कि अब अंग्रेजों ने कम्पनी काल की देशी राज्यों को हड़प लेने की नीति को छोड़ दिया और उसके स्थान पर आन्तरिक उपद्रव एवं कुशासन में हस्तक्षेप करके सुव्यवस्था स्थापित करना अपना लक्ष्य बनाया। भारत के देशी राज्यों के प्रति भी ब्रिटिश पार्लमिंट ने अपनी नीति बदल दी। उनको अंग्रेजी राज्य में मिलाने की अपेक्षा वहाँ के देशी राजाओं को ही कायम रखकर उन्हें शासन-प्रबन्ध की सुव्यवस्था करने में मदद दी।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१---भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की पश्चिमोत्तर और पूर्वोत्तर सीमाओं की भौगोलिक दशा के विषय में क्या जानते हो?

२--अंग्रेजों ने सीमान्त प्रदेशों पर अपना प्रभाव जमाने की आवश्यकता क्यों समझी?

३--चितराल कहां है? चितराल में उपद्रव कब और क्यों हुआ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४—पश्चिमोत्तर में उपद्रव की रोकथाम करने के लिए वायसराय लार्ड कर्जन ने क्या प्रबन्ध किया ?

५—मणिपुर और लूशाई में बिद्रोहों को दबाकर क्या प्रबन्ध किया गया ?

६—देशी राज्यों के सम्बन्ध में ब्रिटिश पार्लमेंट और कम्पनी की नीति में क्या अन्तर था ?

पाठ ३—धर्म, समाज व राजनीति में नवजीवन

तुम पीछे पढ़ चुके हो कि अंग्रेजी शिक्षा से भारत को क्या लाभ होंगे, इस बात को बंगाल के नेता राजा राममोहन राय ने बहुत पहले ही समझ लिया था। इसी कारण वह अंग्रेजी शिक्षा के बड़े पक्षपाती थे। उनकी बात सच्ची हुई। अनेक अंग्रेजी शिक्षित लोगों ने धर्म-सुधार, समाज-सुधार एवं राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लेकर भारत में नयी जागृति का युग ला दिया। उस युग में नव-जागरण की ऐसी धारा बही कि सारा भारत चौंक पड़ा।

भारत में प्राचीनकाल से ही धर्म को सब बातों से अधिक महत्व दिया जाता है, अतः जागरण की बेला में अनेक धर्म सुधार और धर्म-प्रचार के आन्दोलन चले। उनके प्रवर्तक और समर्थक अंग्रेजी से पूर्णरूप से परिचित एवं सर्वथा अपरिचित दोनों प्रकार के भारतीय थे। अंग्रेजी से परिचित नेताओं में राजा राममोहन राय, सर सैयद अहमद खाँ, महादेव गोविन्द रानाडे, स्वामी विवेकानन्द एवं एनी बीसेंट सरीखे महान व्यक्तियों तथा अंग्रेजी से सर्वथा अपरिचित नेताओं में स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं रामकृष्ण परमहंस सरीखे महात्माओं के नाम तुम जानते हो। धर्म-सुधार के जिन आन्दोलनों को इन नेताओं ने जन्म दिया उनको जानना आवश्यक है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१) ब्राह्म समाज

राजा राममोहन राय ने ईश्वर में विश्वास रखने एवं मूर्तिपूजा का विरोध करने वालों के लिए एक **'ब्राह्म सभा'** खोली (१८२८ ई०)। उनकी मृत्यु के बाद ब्राह्म सभा के समान **'ब्राह्म समाज'** की स्थापना महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर (रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता) ने की। जब केशवचन्द्र सेन इसमें सम्मिलित हुए (१८५७ ई०), तब ब्राह्म समाज में बड़ी स्फूर्ति आ गयी और ब्राह्म समाज की शाखायें बंगाल के बाहर पंजाब, उत्तर प्रदेश व मद्रास में भी खुल गयीं। केशवचन्द्र सेन आधुनिकता के बड़े पक्षपाती एवं अन्तर्जातीय विवाह और विधवा विवाह के बड़े समर्थक थे। देवेन्द्रनाथ टैगोर और केशवचन्द्र सेन के मतभेद के कारण ब्राह्म समाज दो दलों में विभक्त हो गया---पहला 'आदि ब्राह्म समाज' और दूसरा 'साधारण ब्राह्म समाज'। साधारण ब्राह्म समाज वाले आधुनिकता में एक कदम आगे बढ़े थे। वे लोग स्त्री-पुरुषों की समान शिक्षा एवं समान अधिकार के समर्थक और पर्दा प्रथा के विरोधी थे।

साधारण ब्राह्म समाज के प्रचार से बंगाल में अनेक सामाजिक सुधार हुए जैसे बाल-विवाह एवं बहुविवाह का विरोध,विधवा विवाह का समर्थन, परस्पर खानपान के भेदभाव का विनाश, स्त्री शिक्षा आदि। इस प्रकार के समाज-सुधार ने भविष्य में राष्ट्रीय आन्दोलन को बड़ी सहायता पहुँचायी।

(२) प्रार्थना समाज

राजा राममोहन राय के धर्म एवं समाज-सुधार के आन्दोलन का प्रभाव महाराष्ट्र पर भी पड़ा। वहाँ **प्रार्थना समाज** की स्थापना हुई जिसने अछूतोद्धार, जातिपाँत के भेदभाव का विरोध, अन्तर्जातीय विवाह व खानपान, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह आदि का समर्थन करके हिन्दू समाज की कुरीतियों को दूर करने में योग दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३) आर्य समाज

आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती, (१८२४–१८८३ ई०) गुजराती थे, परन्तु उनका कार्य-क्षेत्र अधिकतर उत्तरी भारत रहा। उनके उपदेशों से हिन्दुओं में अपूर्व जागृति उत्पन्न हुई।

स्वामी दयानन्द ने वेदशास्त्रों के प्रमाण देकर मूर्तिपूजा का खण्डन, ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना का मण्डन, समाज में ऊँच-नीच के भेदभाव का विरोध एवं अछूतोद्धार, देशविदेश की यात्रा, विधवा विवाह आदि बातों का समर्थन किया।

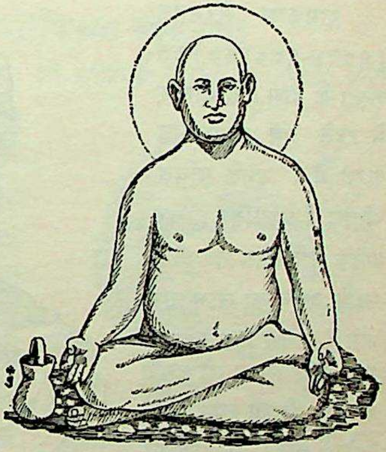

आर्य समाज के प्रवर्तक
स्वामी दयानन्द सरस्वती

उनकी मातृभाषा गुजराती थी, पर उन्होंने **हिन्दी को महत्व** देकर उसमें अनेक ग्रन्थ लिखे जिनमें 'सत्यार्थ प्रकाश' मुख्य है। उनका वेद-भाष्य भारत की किसी लोक-भाषा में वेदों का सबसे पहला अनुवाद है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने **आर्य समाज** स्थापित किया और उसके द्वार मनुष्य मात्र के लिए खोल दिये। कोई भी मनुष्य शुद्धि द्वारा हिन्दू बन सकता और आर्य समाज में प्रवेश कर सकता है। स्वामी जी ने आर्य समाज को संसार का उपकार करने एवं देश-विदेश में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए प्रेरणा दी। उनके प्रचार से हिन्दुओं के विचारों में क्रान्ति हुई और राष्ट्रीयता के भावों को बल मिला। सत्यार्थ प्रकाश में लिखे उनके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ये शब्द कि 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है' भारत के राष्ट्रीय इतिहास में सुवर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है।

(४) रामकृष्ण मिशन

रामकृष्ण परमहंस (१८३४-१८८६ई०) कलकत्ता के पास एक मन्दिर में रहते एवं योगसाधन करते थे। उनके पवित्र जीवन से प्रभावित होकर अनेक सुशिक्षित नवयुवक उनके दर्शन का लाभ पाने लगे। उनमें एक नरेन्द्रनाथ दत्त भी थे जो उनके अनन्य शिष्य बन गये और बाद में स्वामी विवेकानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए।

रामकृष्ण मिशन के संस्थापक
स्वामी विवेकानन्द

रामकृष्ण परमहंस ईश्वर की एकता और अध्यात्मवाद का उपदेश देते थे। वह कहते थे कि सब धर्म व सम्प्रदाय आधाररूप से एक हैं। उनके शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने जब अपने गुरु का संदेश अमेरिका की विश्व धर्म परिषद को सुनाया (१८९३ ई०), तब पाश्चात्य जगत को भारत का अध्यात्मवाद बहुत अच्छा लगा। उनके अध्यात्मवाद में जनसेवा और राष्ट्रसेवा की भावनाएँ सम्मिलित थीं। अतः उनके स्थापित किये हुए रामकृष्ण **मिशन** ने अनेक अस्पताल, स्कूल आदि खोले **और** पढ़े लिखे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लोगों में परोपकार की भावना पैदा की। स्वामी विवेकानन्द समझते थे कि भौतिक सुखों के पीछे दौड़ती हुई दुनिया को भारत के आध्यात्मिक ज्ञान से सच्ची शान्ति प्राप्त करनी चाहिए तथा आध्यात्मिक ज्ञान के गुरु भारत को पश्चिम के भौतिक ज्ञान से अपनी दरिद्रता दूर करनी चाहिए।

(५) थियोसोफिकल सोसायटी

इस सोसायटी की स्थापना तो अमेरिका में हुई थी, परन्तु इसके संस्थापकों को भारत ने विशेष-रूप से आकर्षित किया (१८८६ ई०)। बाद को श्रीमती एनी बीसेंट ने इस सोसायटी का संचालन करते हुए इस देश की बड़ी सेवा की। उसने भारतीयों को अपने धर्म, सभ्यता एवं संस्कृति पर गर्व करने की प्रेरणा दी और राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रमुख भाग लिया। एक बार एनी बीसेंट भारत की राष्ट्रीय महासभा (इण्डियन नेशनल कांग्रेस) की अध्यक्षा भी चुनी गयीं। वाराणसी का सेन्ट्रल हिन्दू कालेज उन्हीं ने स्थापित किया था जिसे बाद को पं० मदनमोहन मालवीय ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बना दिया।

श्रीमती एनी बीसेंट

(६) अलीगढ़ आन्दोलन

उपरिलिखित आन्दोलनों ने जिस प्रकार हिन्दुओं में नयी जागृति उत्पन्न की, मुसलमानों में उसी प्रकार की जागृति सर सैयद अहमद

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खाँ ने पैदा की। उन्होंने अलीगढ़ में एंग्लो-ओरियंटल कालेज भी खोला (१८७५ ई०) जो बाद में मुस्लिम विश्वविद्यालय हो गया।

इन आन्दोलनों से भारत के सभी धर्मों के मानने वालों में धर्म-सुधार एवं समाज-सुधार की लगन पैदा हुई और भारत में नवजीवन आया।

सर सैयद अहमद खाँ

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—ब्राह्म सभा, ब्राह्म समाज तथा साधारण ब्राह्म समाज के विषय में क्या जानते हो ?

२—ब्राह्म समाज आन्दोलन से देश को क्या लाभ हुआ ?

३—रामकृष्ण मिशन की स्थापना किसने की ? रामकृष्ण मिशन ने जनता की क्या सेवाएँ की हैं ?

४ स्वामी विवेकानन्द के विषय में क्या जानते हो ? विदेशों में भारत का मान उन्होंने किस प्रकार बढ़ाया ?

५—आर्य समाज के विषय में क्या जानते हो ?

६—स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत की क्या सेवा की ?

७—थियोसोफिकल सोसायटी क्या है ? एनीबीसेंट द्वारा सोसायटी के संचालन से भारत को क्या लाभ हुआ ?

८—निम्नलिखित के विषयों में क्या जानते हो :—

(क) केशवचन्द्र सेन। (ख) रामकृष्ण परमहंस। (ग) सर सैयद अहमद खाँ। (घ) पं० मदनमोहन मालवीय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ४—भारतीय राष्ट्रीय महासभा (इण्डियन नेशनल कांग्रेस)

सन्' ५७ की क्रान्ति के पश्चात जब भारत का शासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथों से निकलकर ब्रिटिश पार्लमिंट के हाथों में पहुँचा, तब शासन के कामों में भारतीयों से सहयोग की नीति पर अमल किया जाने लगा। इसके अतिरिक्त वायसराय ने यह इच्छा प्रकट की कि भारतीयों की कोई ऐसी सभा बननी चाहिए जिसके द्वारा उनकी इच्छाओं और कठिनाइयों का ज्ञान सरकार को हो सके। उस समय कुछ अंग्रेज अधिकारी भी ऐसी सभा बनाने के पक्ष में थे।

अत: एक अवकाश प्राप्त अंग्रेज अफसर ह्यूम ने वायसराय की अनुमति प्राप्त करके **२८ दिसम्बर, १८८५ ई० को बम्बई में इण्डियन नेशनल काँग्रेस** नाम की राष्ट्रीय महासभा स्थापित की। एक बंगाली बैरिस्टर उमेशचन्द्र बनर्जी उसके सभापति बनाये गये। उस समय की कांग्रेस के नेता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और दादाभाई नौरोजी बड़े प्रसिद्ध हैं। इस प्रसंग में यह याद रखना आवश्यक है कि अपने जीवन के आरम्भिक काल में कांग्रेस आजकल की तरह जनता की प्रतिनिधि नहीं थी। उस समय केवल अंग्रेजी पढ़े-लिखे कुछ लोग एकत्र होकर व्याख्यान देते, प्रस्ताव पास करते और सरकार की सेवा में भेजने के लिए निवेदनपत्र तैयार करते थे। इसी कारण उस समय ब्रिटिश राज्य के प्रतिनिधि वायसराय को कांग्रेस से कोई विरोध न था। इसके दूसरे कलकत्ता अधिवेशन के समय तो वायसराय ने कांग्रेस सदस्यों को भोज पर बुलाया और तीसरे मद्रास अधिवेशन के अवसर पर मद्रास के गवर्नर ने भी कांग्रेस सदस्यों को भोज दिया। परन्तु धीरे-धीरे जब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कांग्रेस की मांग बढ़ने लगी, तब सरकार सशंक हो गयी और उसने कांग्रेस के चौथे इलाहाबाद अधिवेशन के समय उसके कामों में अनेक प्रकार की बाधाएं डालीं (१८८८ ई०)। उसके कुछ समय बाद सरकार ने अपने कर्मचारियों को कांग्रेस में जाने की बिलकुल मनाही कर दी (१८६० ई०)। परन्तु इस प्रकार ज्यों-ज्यों सरकार का रुख कठोर होता गया, त्यों-त्यों काँग्रेस की लोक-प्रतिष्ठा बढ़ती गयी।

शुरू से ही सरकार ने कांग्रेस के प्रस्तावों पर उचित ध्यान नहीं दिया था, अतः जनमत का जोर सरकार पर डालने के लिए कांग्रेस के आरम्भिक नेताओं ने अपनी एक प्रतिनिधि संस्था लन्दन में भी खोली (१८८८ ई०)। उस संस्था ने इंग्लैंड के विविध भागों में व्याख्यान कराकर और पर्चे बांटकर कांग्रेस की मांगों की सच्चाई का प्रचार किया। इंग्लैंड में कांग्रेस के प्रचार के कारण कई अंग्रेज नेताओं की सहानुभूति भारत को प्राप्त हो गयी। उनमें पार्लमिंट के सदस्य ब्रैडला का नाम उल्लेखनीय है। वह कांग्रेस के पाचवें अधिवेशन में शरीक भी हुए। उन्होंने भारतीय नेताओं से मिलकर विधान सभाओं के सुधार के लिए एक बिल भी तैयार किया और उसे पार्लमिंट में पेश भी किया (१८६० ई०)।

कांग्रेस में उग्र दल

जब सरकार की उपेक्षा से कांग्रेस के सदस्यों में निराशा की भावनाएं बढ़ने लगीं, तब उनमें से कुछ सदस्य वर्ष प्रति वर्ष प्रस्ताव पास करने और सरकार के पास विवेदन-पत्रों के भेजने को व्यर्थ समझने लगे। उनका ऐसा विश्वास हो गया कि सुधार और अधिकार शब्दों से ही नहीं, वरन् कार्यों से मिलेंगे। इस दल के नेता बाल गंगाधर तिलक थे। उनके नेतृत्व में महाराष्ट्र भारत में राष्ट्रीय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आन्दोलन का अग्रणी बन गया। तिलक ने गणपति और शिवाजी उत्सवों की परम्परा डालकर एवं अपने समाचार-पत्र 'केसरी' में लेख देकर जन-समूह में आत्मावलम्बन और उग्र राष्ट्रीयता की लहर दौड़ा दी। उनके व्याख्यानों और प्रचार का अन्य प्रान्तों पर प्रभाव हुआ, एवं कांग्रेस में उग्र दल जोर पकड़ने लगा।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

बंग-भंग—बंगालियों की राष्ट्रीयता को दवाने के लिए वायसराय लार्ड कर्जन ने बंगाल के दो टुकड़े किये (१६०५ ई०)। बंगाल ने उसका घोर विरोध किया। सर्वसाधारण लोग भी **विदेशी माल का वहिष्कार** एवं **स्वदेशी माल को स्वीकार** करके अपना रोष प्रकट करने लगे। सारे देश ने इस आन्दोलन में बंगाल का साथ दिया। महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक एवं पंजाब के लाला लाजपतराय भी बंगाल के नेताओं—विपिनचन्द्र पाल एवं अरविन्द घोष से एकमत हो गये। उन्होंने भारत में घूम-घूम कर स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार व विदेशी वस्तुओं का वहिष्कार कराया तथा अंग्रेजी सरकार के विरोध को अपना ध्येय बना लिया।

उस समय के राष्ट्रीय आन्दोलन को बाहर की एक घटना से बड़ा प्रोत्साहन मिला। १६०४ ई० में यूरोप का एक विशाल देश रूस एशिया के एक छोटे से देश **जापान से युद्ध में हार** गया। जापान की जीत से **एशिया** निवासियों, विशेषकर भारतवासियों के हृदयों से यूरोपियों की श्रेष्ठता का सिक्का उठ गया और जनता उग्र नेताओं के पीछे चल पड़ी। १६०५ ई० में जो कांग्रेस का वाराणसी में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिवेशन हुआ, उसमें स्पष्ट रूप से दो विचार धाराएं दिखायी दीं—एक गोपालकृष्ण गोखले, फीरोजशाह मेहता और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी जैसे वैधानिक आन्दोलन-कर्ताओं की, तथा दूसरी बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत-राय और विपिनचन्द्र पाल जैसे उग्र आन्दोलन-कर्ताओं की। पहली विचार-धारा के नेता **'नरम दल'** वाले, तथा दूसरी विचारधारा के नेता **'गरम दल'** वाले कहलाये। कांग्रेस में अभी तक बहुमत तो नरम दल का ही था, परन्तु गरम दल भी सुसंगठित हो गया। दोनों दलों के नेताओं में इतना अधिक मतभेद हो गया कि समझौता असम्भव दिखाई देने लगा। जनता गरम दल की ओर थी।

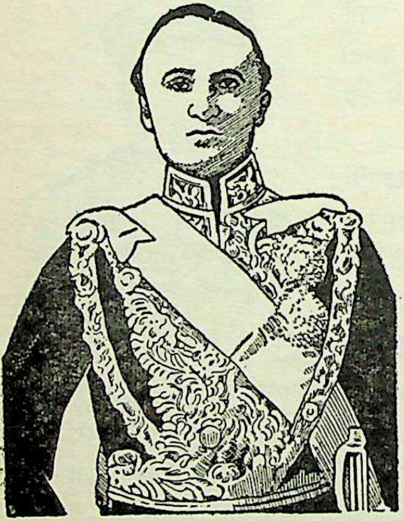

लार्ड कर्जन

क्रान्तिकारी दल—१९०५ ई० में भारत में क्रान्तिकारी दल का भी जन्म हुआ। उसके जन्म के कारण वही थे जो उग्र दल की उत्पत्ति के कारण थे। अन्तर यह था कि क्रान्तिकारी लोग उग्र दल से भी आगे थे और अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए हिंसात्मक कामों को करने के लिए तैयार थे। ये लोग सरकार की गोलियों का जवाब बम के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोलों से देने का इरादा रखते थे। इन लोगों ने बंगाल के विभिन्न भागों में क्रान्तिकारी गुप्त समितियों को स्थापित करना शुरू कर दिया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१— कांग्रेस का जन्म कब और किस अभिप्राय से हुआ ?

२—आरम्भ में कांग्रेस के प्रति सरकार का क्या रुख रहा ?

३—कांग्रेस ने अपनी शाखा लन्दन में क्यों खोली ? उससे क्या लाभ हुआ ?

४—कांग्रेस में उग्र दल कब और क्यों पैदा हुआ ?

५—बाल गंगाधर तिलक ने महाराष्ट्र में किस प्रकार उग्र राष्ट्रीयता का प्रचार किया ?

६—'बंग-भंग' क्या था ? उसका प्रभाव भारत की राजनीति पर क्या हुआ ?

७—रूस-जापान युद्ध कब हुआ ? उसका प्रभाव भारत पर क्या पड़ा ?

८—'नरम दल' और 'गरम दल' से क्या अभिप्राय समझा जाता था ? इन दलों के प्रमुख नेताओं के नाम बताओ।

९—निम्नलिखित के विषय में क्या जानते हो :—

(क) ह्यूम (ख) सुरेन्द्रनाथ बनर्जी (ग) फीरोजशाह मेहता (घ) विपिनचन्द्र पाल (ङ) लाला लाजपत राय (च) अरविन्द घोष।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सातवां अध्याय

भारत में ब्रिटिश पार्लमिंट का राज्य (१६०५-१६४७ ई०)

पाठ १---अफगानिस्तान, फारस और तिब्बत से सम्बन्ध

भारत की पश्चिमी सीमा के पार अफगानिस्तान एवं फारस से तथा उत्तरी सीमा के पार तिब्बत से सम्पर्क और मैत्रीपूर्ण राजनीतिक सम्बन्ध भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए आवश्यक थे।

(१) अफगानिस्तान से सम्बन्ध

अफगानिस्तान से सम्बन्ध तय करने में ब्रिटिश पार्लमिंट के सामने दो बातें थीं—पहली बात रूस की वे राजनीतिक एवं व्यापारिक कारवाइयां थीं जो उसने फारस की खाड़ी एवं मध्य एशिया में फैला रखी थीं। दूसरी बात यह थी कि प्रथम विश्वयुद्ध (१६१४-१८ ई०) के समय इंग्लैंड के शत्रु देशों—जर्मनी, आस्ट्रिया और टर्की के राजदूत काबुल में अपनी राजनीतिक चालें चल रहे थे। उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी।

तुम पढ़ चुके हो कि वायसराय कर्जन की अफगानिस्तान के अमीर अब्दुर्रहमान के साथ मैत्रीपूर्ण सन्धि हो गयी थी (१६०१ ई०)। उसके उत्तराधिकारी **हबीबुल्ला** पर रूसियों का प्रभाव पड़ा और उसने अंग्रेजों से 'हिज मेजेस्टी' के पद की मान्यता चाही। कर्जन के जाने के बाद जब अमीर की इच्छा पूरी हो गयी, तब उसने भी पुरानी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन्धि मान ली (१६०५ ई०)। इसके दो-एक वर्षों बाद इंग्लैंड और रूस में भी समझौता हो गया। उसके अनुसार रूस ने अफगानिस्तान को अपने प्रभाव क्षेत्र से बाहर मान लिया। अमीर हबीबुल्ला खाँ दोनों देशों के षड्यन्त्रों से बच गया।

तीसरा अफगान युद्ध—प्रथम विश्वयुद्ध के समय अमीर ने तटस्थता की नीति का पालन किया, परन्तु अफगानों में ब्रिटिश-विरोधी दल जोर पकड़ गया। अतः हबीबुल्ला की हत्या की गयी (१६१६ ई०)। उसके बाद राजगद्दी के लिए थोड़े से संघर्ष के बाद **अमानुल्ला** अमीर बना। उसने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। अंग्रेजों ने जलालाबाद और काबुल पर बम गिराये तथा खैबर एवं चमन की ओर से अफगानिस्तान पर चढ़ाई की। अमानुल्ला ने सन्धि करनी चाही और युद्ध बन्द हो गया। दो वर्षों के बाद सन्धि हो गयी (१६२१ ई०)। ब्रिटिश सरकार ने अफगानिस्तान की स्वतन्त्रता को मानकर उसके विदेशी मामलों में हस्तक्षेप न करने का वचन दिया। काबुल और लन्दन में एक दूसरे के राजदूत रहने लगे। इसके बाद बिटिश साम्राज्य और अफगानिस्तान में मैत्री बनी रही।

अमानुल्ला को अपने देश में चैन नहीं मिला। अफगानिस्तान में उसने पश्चिमी ढंग के अनेक सुधार किये, जिन्हें अफगानों ने पसन्द नहीं किया। गृह-युद्ध के फलस्वरूप अमानुल्ला को राजगद्दी से हाथ धोने पड़े (१६२६) और **बच्चा सक्का** नाम का एक भिश्ती का पुत्र बादशाह बन बैठा। अंग्रेज तटस्थ बने तमाशा देखते रहे। गृह-युद्ध छिड़ने पर उन्होंने ब्रिटिश भारतीय प्रजा के लोगों एवं अपने राजदूत को हवाई जहाज के द्वारा अवश्य भारत लौटा लिया।

अन्त में अफगानों के गृहकलह को मिटाकर जनरल मुहम्मद नादिरखां ने शान्ति स्थापित की और सार्वजनिक इच्छा से नादिरशाह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बादशाह बना। सुधार उसने भी किये, पर शनैः शनैः। अपने व्यक्तिगत विद्वेष के कारण एक अफगान ने नादिरशाह को गोली मार दी, परन्तु इससे कोई गड़बड़ी नहीं फैली। शान्ति से उसका पुत्र **मुहम्मद जहीरशाह** गद्दी पर बैठा (१६३३ ई०)। ब्रिटिश सरकार के साथ अपने पिता के समान उसने घनिष्ठ मित्रता के सम्बन्ध बनाये रखे। द्वितीय विश्वयुद्ध (१६३६-४५ ई०) के काल में भी ये मैत्री सम्बन्ध कायम रहे।

(२) फारस से सम्बन्ध

बलूचिस्तान के पश्चिम में फारस देश है। भारत में अंग्रेजी राज्य के लिए फारस के समुद्रतट का विशेष महत्त्व था। कारण कि वह इंग्लैंड और भारत के व्यापारिक समुद्री मार्ग पर पड़ता था। अंग्रेजी व्यापार की सुरक्षा के लिए यह परमावश्यक था कि फारस की खाड़ी और फारस का समुद्रतट अंग्रेजों के राजनीतिक प्रभाव के अन्तर्गत बना रहे। अतः उन्नीसवीं शती में अंग्रेजों ने शनैः शनैः शान्तिपूर्वक वहाँ अपना पूर्ण प्रभाव जमा लिया। यह बात यूरोप के अन्य राष्ट्रों को बहुत खटकी और १८६८ ई० में एक फ्रांसीसी कूटनीतिज्ञ ने अपनी विधान-सभा में यह कहा कि अंग्रेजों का अकेले फारस की खाड़ी में शान्ति रखने का अधिकार यूरोप की किसी शक्ति ने कभी स्वीकार नहीं किया है और न उस अधिकार को स्वीकार किया है जो इंग्लैंड फारस, अरब एवं टर्की के शासकों के आपसी झगड़ों के निर्णय में प्रयुक्त करता है। अतः बीसवीं शती के प्रारम्भ होने से पहले ही फ्रांस, टर्की, जर्मनी और रूस फारस की खाड़ी और अरब सागर के समुद्र तटों के विषय में अपनी राजनीतिक दिलचस्पी प्रकट करने लगे।

उन्नीसवीं शती के अन्तिम दशक में फारस की खाड़ी के प्रवेशद्वार पर स्थित ओमान देश के सुल्तान से अंग्रेजों ने एक गुप्त सन्धि के द्वारा यह बचन ले लिया कि वह किसी यूरोपीय शक्ति को अपने राज्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में कोई स्थान नहीं देगा, पर १८९८ ई० में उसने वहाँ फ्रांसीसियों को अपने जहाजों के लिए कोयला पानी लेने का स्टेशन बनाने और उसकी किलाबन्दी करने का अधिकार दे दिया। जब लार्ड कर्जन ने इस समाचार को सुना, तब उससे न रहा गया। उसने कलकत्ते से जंगी जहाजी बेड़े का एक दस्ता उधर भेजा। इस दस्ते ने ओमान के सुल्तान से कहा कि यदि फ्रांसीसियों के अधिकार समाप्त नहीं किये गये, तो हम तुम्हारे राजमहल को तोपों से उड़ा देंगे। सुल्तान भयभीत हो गया और उसने फ्रांसीसियों को दिये हुए अधिकारों को वापस ले लिया।

फारस की खाड़ी के सिरे पर कुवेत नामक एक बन्दरगाह है जिस पर टर्की अपना अधिकार स्थापित करना चाहता था, परन्तु अंग्रेजी सरकार ने १८९९ ई० में वहाँ के शेख से एक समझौता करके उसको यह बात मानने के लिए मजबूर किया कि वह किसी भी विदेशी शक्ति को किसी प्रकार की सुविधा न देगा। १९०० ई० में जर्मनी ने शेख से बर्लिन बगदाद रेल के वास्ते स्टेशन बनाने के लिए कुछ भूमि लेनी चाही, परन्तु अंग्रेजी सरकार से पूर्व सन्धि के कारण शेख ने जर्मनी को भूमि नहीं दी। इसी प्रकार रूस को भी फारस की खाड़ी के समुद्रतट पर जहाजों के लिए स्टेशन बनाने की आज्ञा नहीं मिली।

फारस के उत्तर में रूस का विशाल साम्राज्य है। ब्रिटिश सरकार की यह नीति रही है कि रूस का प्रभाव फारस पर न होने पाये, क्योंकि इससे फारस की खाड़ी द्वारा होने वाला अंग्रेजी व्यापार खतरे में पड़ सकता है। अतः १९०३ ई० में वायसराय कर्जन स्वयं फारस की खाड़ी में गया और वहाँ के मुख्य नगरों में ब्रिटिश 'व्यापार-दूत' स्थापित किये। १९०७ ई० में इंग्लैंड व रूस में जो समझौता हुआ उसमें दोनों देशों ने फारस की अखण्डता और स्वतन्त्रता को स्वीकार करके अपने प्रभाव क्षेत्रों का बँटवारा कर लिया। उत्तरी फारस रूसी और दक्षिणी फारस ब्रिटिश प्रभाव क्षेत्र माने गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रथम विश्व युद्ध (१९१४-१८ ई०) के समय फारस में आन्तरिक कलह मचा था, अतः उसने राजनीति में तटस्थता की नीति अपनायी। जर्मनी एवं उसके मित्र टर्की ने इंग्लैंड व रूस के विरुद्ध फारस, अफगानिस्तान आदि देशों में झगड़े कराकर फारस को विश्व युद्ध में घसीटना चाहा। इस कारण ब्रिटेन भी फारस की खाड़ी में चौकन्ना रहा। फारस तटस्थ ही बना रहा और ब्रिटेन के साथ उसके सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण बने रहे।

(३) तिब्बत से सम्बन्ध

तिब्बत के साथ अंग्रेजों का सम्पर्क वारेन हेस्टिंग्ज ने शुरू किया था। उसने ईस्ट इंडिया कम्पनी के एक क्लर्क को ताशी लामा के पास तिब्बत भेजा, जहाँ उसका बड़ा सत्कार हुआ। उसके आठ वर्षों के बाद कम्पनी ने फिर एक दूसरा क्लर्क तिब्बत भेजा परन्तु इस बार उसका उतना अच्छा आदर-सत्कार नहीं हुआ जितना वारेन हेस्टिंग्ज के समय में हुआ था क्योंकि तिब्बत के निवासी अंग्रेजों को आशंका की दृष्टि से देखने लगे थे। कम्पनी ने अनुभवकिया कि तिब्बती अंग्रेज के साथ व्यापारिकसम्बन्ध कायम करना नहीं चाहते। अतः उन्नीसवीं शती के प्रथम चरण में अंग्रेजों ने विशेष प्रयत्न करके लासा के दलाई लामा से व्यापार की सुविधाएँ प्राप्त कर ली। इस प्रकार अंग्रेजों की भारत सरकार और तिब्बत में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो गये।

उन्नीसवीं शती के अन्त में रूस का प्रभाव तिब्बत में बढ़ने लगा। एक रूसी ने तिब्बत में ऊँचा पद प्राप्त करके अपने को दलाई लामा का विश्वासपात्र बना लिया। १८९८ ई० में दलाई लामा ने उसे रूस के जार के पास भी भेजा। उसके बाद वह कई बार तिब्बत से रूस गया आया। अंग्रेजों को आशंका हो गयी कि वह रूसी जार और तिब्बत के दलाई लामा के बीच में किसी राजनीतिक साँठ-गाँठ को सिद्ध कर रहा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। ऐसी स्थिति में लार्ड कर्जन ने तिब्बत के विरुद्ध अनेक आरोप लगाकर इंग्लैंड की ब्रिटिश सरकार से तिब्बत में एक शिष्ट मण्डल भेजकर तिब्बत से स्थिति को स्पष्ट करने का आग्रह किया, क्योंकि वह समझता था कि तिब्बत को अंग्रेजों के प्रभाव में रखना अंग्रेजों के भारतीय साम्राज्य की सुरक्षा के लिए बहुत आवश्यक है।

तिब्बत चीन साम्राज्य का भाग था, परन्तु चीन बीसवीं शती के शुरू में एक दुर्बल राष्ट्र था। अंग्रेजों की भारत सरकार से तिब्बत के सम्बन्ध पहले तो मैत्रीपूर्ण थे, परन्तु नेपाल युद्ध के बाद तिब्बत के लोग अंग्रेजों की कूटनीति से भयभीत हो गये थे। उधर रूस का प्रभाव भी तिब्बत में बढ़ रहा था। यह बात जब वायसराय कर्जन को असह्य हो गयी, तब उसने १९०३ ई० में तिब्बत पर आक्रमण करने के लिए यंग हस्बैंड के साथ एक सेना भेजी। वह तिब्बत के धनी मन्दिरों को लूटती हुई राजधानी लासा पहुँच गयी। तिब्बत का शाशक दलाई लामा भाग गया तथा अपने पीछे सन्धि की बातचीत करने के लिए अपना एक प्रतिनिधि छोड़ गया। यंग हस्बैंड ने उससे बड़ी कठोर शर्तों के साथ **लासा की सन्धि** की और तिब्बत की विदेश नीति पर ब्रिटिश सरकार का पूर्ण नियन्त्रण स्थापित कर दिया। तिब्बत से यह वचन ले लिया गया कि तिब्बत राज्य का कोई भाग किसी अन्य शक्ति को नहीं दिया जायगा। जून, १९०६ ई० में इंग्लड और चीन ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किये जिससे तिब्बत की आन्तरिक स्वतन्त्रता अक्षत बनी रही, परन्तु १९१३-१४ ई० में भारत की अंग्रेजी सरकार ने तिब्बत के एक मुख्य भाग को अपना रक्षित बनाकर वहाँ भारत का डाक-तार प्रणाली चला दो। इनके बाद १९३६-३७ ई० में एक ब्रिटिश मिशन तिब्बत गया और उसने तिब्बत के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को ताजा किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास के लिए प्रश्न----

१—भारत की सुरक्षा के लिए अफगानिस्तान, फारस और तिब्बत के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध क्यों आवश्यक थे ?

२—अमीर हबीबुल्ला और भारत की ब्रिटिश सरकार के सम्बन्ध कैसे रहे ?

३—अमानुल्ला के समय में आंग्ल-अफगान युद्ध के क्या कारण थे ? उसका परिणाम क्या हुआ ?

४—फारस के सम्बन्ध में रूस और इंग्लैंड में क्या समझौता हुआ था?

५—लार्ड कर्जन के समय तिब्बत पर आक्रमण क्यों किया गया ?

६—बीसवीं शती में ब्रिटिश, भारत और तिब्बत के सम्बन्धों के विषय में क्या जानते हो ?

७—निम्नलिखित के विषय में क्या जानते हो ?

(क) अमानुल्ला। (ख) जनरल मुहम्मद नादिर खाँ। (ग) यंग हस्बैंड।

पाठ २—दो महान विश्व युद्ध

पिछले पाठों में कई बार दो महान विश्वयुद्धों की ओर संकेत आये हैं। इन युद्धों ने संसार के प्रायः सभी देशों के राजनीतिक विदेशी सम्बन्धों को प्रभावित किया। भारत की राजनीति पर भी उनका अनेक प्रकार का प्रभाव हुआ।

प्रथम विश्व युद्ध (१९१४-१८ ई०)

बीसवीं शती के आरम्भ में यूरोप के राष्ट्र उग्र राष्ट्रीयता और साम्राज्यवाद की धुन में अपनी-अपनी सेनाओं को बढ़ाने के लिए पागल से बन गये थे। हरएक देश समझता था कि सेना के बल पर ही वह उन्नति कर सकता है। अतः यूरोप के अधिकांश देशों ने अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यहाँ न केवल अनिवार्य सैनिक शिक्षा का प्रबन्ध किया, अपितु हरएक नागरिक के लिए यह आवश्यक कर दिया कि वह सेना में भर्ती होकर कुछ वर्षों तक सैनिक सेवा करे। इसका यह परिणाम हुआ कि यूरोप की अधिकांश जनता सैनिकों के रूप में बदल गयी। उन देशों ने अपनी-अपनी नौसेना को भी बढ़ाना शुरू किया और बड़े-बड़े जंगी जहाज बनाये। सर्वत्र युद्ध की तैयारी हुई। जर्मनी इस दौड़ में सबसे अधिक प्रयत्न-शील था। वहाँ तरुण जर्मन संघ ने अपना यह सिद्धान्त ही बना रखा था कि मानवीय कार्यों में युद्ध सबसे अधिक श्रेष्ठ और पवित्र कार्य है; जब युद्ध का शंख बजेगा और अस्त्र-शस्त्रों की सुमधुर झंकार से आकाश गूँजेगा, तब वह हमारे लिए एक शुभ अवसर होगा। इसी प्रकार के विचार अन्य देशों में भी प्रचलित थे। ऐसे वातावरण में युद्ध अवश्यम्भावी था।

१९१४ई० में २८ जून को यूरोप के एक देश आस्ट्रिया-हुंगेरी (हुंगारी) के युवराज की बोस्निया के एक नगर में हत्या कर दी गयी। उसने बारूदखाने में चिंगारी का काम किया। आस्ट्रिया ने सर्बिया को उसका अपराधी ठहराया और उसे अपमानजनक शर्तों को मानने के लिए बाध्य किया। सर्बिया ने अपने को निर्दोष प्रमाणित करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के सामने मामला पेश करने का प्रस्ताव किया, परन्तु आस्ट्रिया उससे सहमत नहीं हुआ। वह तो युद्ध के लिए उधार खाये बैठा था। उसने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। जर्मनी ने उसका साथ दिया और पाँच-छः सप्ताहों के अन्दर यूरोप में महायुद्ध आरम्भ हो गया। धीरे-धीरे उसने प्रथम विश्व युद्ध का रूप धारण कर लिया।

प्रथम विश्वयुद्ध के विरोधी पक्षों में एक ओर **जर्मनी**, **आस्ट्रिया** और **टर्की** थे, तथा उनके विरोध में दूसरी ओर **फ्रांस**, **इंग्लैंड** और रूस थे जो अपने को 'मित्र-राष्ट्र' कहते थे। बाद को **इटली** और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अमेरिका भी 'मित्र राष्ट्रों' के गुट में शामिल हो गये। भारतवर्ष अंग्रेजों के अधीन था, अतः उसे भी विश्वयुद्ध में मित्रराष्ट्रों के पक्ष में लड़ना पड़ा। मित्रराष्ट्रों ने घोषणा की कि यह युद्ध संसार में स्वतन्त्रता, जनतन्त्र एवं नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ा जा रहा है। ब्रिटिश पार्लमिंट ने भी युद्ध की समाप्ति पर भारतीयों को शासन के अधिकार देने का वचन दिया। इन वचनों का विश्वास करके कांग्रेस ने अंग्रेजों के साथ पूर्ण सहयोग किया। महात्मागाँधी ने भी भारतवासियों को सम्मति दी कि वे अंग्रेजों की तन-मन-धन से सहायता करें।

युद्धकाल में भारत सरकार ने करोड़ों रुपया ब्रिटेन को युद्ध के खातिर दिया और भारतीय सेनाएं मिस्र, सूडान, फिलिस्तीन, मैसोपोटामिया, अदन, फारस, सुमालीलैंड, सैलोनिका, बेल्जियम, फ्रांस आदि देशों में शत्रुओं से लड़ीं। ससार ने उनकी वीरता की बड़ी प्रशंसा की। युद्ध में इंग्लैंड एवं मित्रराष्ट्रों की विजय हुई और यूरोप में बेल्जियम, पोलैंड, जूगोस्लाविया आदि कई देश स्वतन्त्र हुए, परन्तु भारत को शासन के अधिकार नहीं मिले। युद्धकाल के बीच में रूस में एक राज्यक्रान्ति भी हुई (१९१७ ई०) और वहाँ राजतन्त्र के स्थान पर मजदूर-सैनिक तन्त्र, जिसे सोवियट राज्य कहते हैं, स्थापित हो गया।

इस युद्ध में कई अप्रत्यक्ष परिणामों से भारत को बड़ा लाभ हुआ। जो भारतीय सेनाएं विदेशों में अंग्रेजी सेनाओं से मिलकर युद्ध करती थीं, उनमें अपनी शक्ति व वीरता की आत्मानुभूति हुई। दूसरे, युद्धकाल में देश की असाधारण औद्योगिक उन्नति हो गयी। सैकड़ों ऐसी वस्तुएं जैसे लोहे की कीलें, पेंच, कमानियाँ, तार आदि जो भारत में नहीं बनती थीं, यहाँ आयात की बन्दी, युद्ध की माँग और भारत सरकार के प्रोत्साहन से बनने लगीं। जमशेदपुर के टाटा कारखाने की इसी समय उन्नति हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वितीय विश्वयुद्ध (१६३६-४५ ई०)

द्वितीय विश्वयुद्ध के दो विरोधी पक्षों में एक ओर जर्मनी, इटली और जापान थे। इस पक्ष को 'बर्लिन-रोम-तोकियो धुरी' का नाम दिया जाता है। दूसरी ओर फ्रांस, इंग्लैंड आदि मित्रराष्ट्र थे। फिर अमेरिका भी उनसे मिल गया। रूस पहले तो धुरी राष्ट्रों के साथ रहा, पर पीछे मित्र-राष्ट्रों के पक्ष में लड़ा और जर्मनी की पराजय का कारण बना।

द्वितीय विश्वयुद्ध को जर्मनी ने आरम्भ किया। तुमने जर्मनी के हिटलर का नाम सुना है। प्रथम विश्वयुद्ध के समय की जर्मनी की पराजय का बदला लेना और उस समय की क्षति की पूर्ति करना हिटलर का परम लक्ष्य था। उसने अपनी शक्ति इतनी बढ़ा ली थी कि यूरोप के समस्त राष्ट्र उससे डरने लगे। १६३८ ई० में उसने आस्ट्रिया पर अधिकार कर लिया और उसके बाद सुडेटनलैंड और चेकोस्लोवाकिया को भी ले लिया। किसी यूरोपीय राष्ट्र में हिटलर के विरोध करने का साहस नहीं था। १६३६ ई० में उसने डानजिग नगर पर और उस नगर तक पहुँचने के लिए पोलैंड में होकर जाने वाले गलियारे पर दावा किया। पोलैंड ने उसका दावा नहीं माना, क्योंकि उसे अपनी शक्ति का भरोसा था और फ्रांस व ब्रिटेन उसके पक्ष में थे। संसार के कई राजनीतिज्ञों जैसे अमेरिका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट, रोम के धर्मगुरु पोप एवं बेल्जियम के राजा ने हिटलर से अपील की कि वह आपस में समझौता करके उस समस्या को सुलझा लें, परन्तु उसने किसी की एक न सुनी, और १६३६ई० की १सितम्बर को प्रातः काल ५।। बजे पोलैंड पर आक्रमण कर दिया। उसके दो दिनों बाद ३ सितम्बर को ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जर्मनी ने रूस को अपनी ओर मिला लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जर्मनी और रूस ने मिलकर पोलैंड की स्वतन्त्रता खत्म कर दी और उसे आपस में बाँट लिया। जर्मनी का विजय-चक्र बड़ी तेजी से घूमने लगा और उसने नारवे, डेनमार्क हालैंड और बेल्जियम पर अधिकार कर लिया। अब जिस समय उसने फ्रांस पर धावा बोला, तब उस समय इटली भी उससे आ मिला। फ्रांस का पतन हो गया और १९४० ई० के १४ जन० को जर्मन सेनाएं पेरिस में दाखिल हो गयीं।

फ्रांस के पतन के बाद ब्रिटेन की सैनिक दशा बड़ी नाजुक हो गयी। नारवे से लेकर दक्षिणी स्पेन तक सारा यूरोपीय समुद्रतट हिटलर के अधिकार में था और जर्मन तोपें आसानी से ब्रिटेन पर गोलाबारी कर सकती थीं। ८ अगस्त, १९४० ई० को जर्मनी ने वायुमार्ग से ब्रिटेन पर आक्रमण आरम्भ कर दिया। प्रथम दिन १९० वायुयानों ने आक्रमण किया। बाद में उनकी संख्या निरन्तर बढ़ती गयी। ब्रिटेन की अपार क्षति हुई, पर उसने हिम्मत न हारी और जर्मनी ब्रिटेन को पराजित न कर सका।

ब्रिटेन को हराने में असमर्थ होकर हिटलर ने पूर्वी यूरोप पर आक्रमण आरम्भ किये और १९४१ ई० तक जूगोस्लाविया और यूनान पर अधिकार कर लिया। बल्कान प्रायद्वीप के रूमानिया, बलगारिया आदि देश भी उसके अधिकार में आ गये। जिस समय हिटलर ने अपने वायुयानों के द्वारा इंग्लैंड पर बुरी तरह बम वर्षा कर रखी थी, अमेरिका मित्रराष्ट्रों की ओर से युद्ध में जर्मनी के विरुद्ध शामिल हो गया। जून, १९४१ ई० में हिटलर ने अचानक रूस पर भी आक्रमण कर दिया। फलतः रूस भी मित्र राष्ट्रों के साथ मिल गया। इस प्रकार युद्ध का क्षेत्र बहुत विस्तृत हो गया।

जर्मनी की सेनाएं अफ्रीका में भी पहुँची और जनरल रोमल ने उत्तरी अफ्रीका को जीत कर मिस्र की सीमा को पार कर लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जर्मनी उस समय सीरिया पर अधिकार करके पूर्व में ईरान और तत्पश्चात भारत की ओर अग्रसर होने का इच्छुक था।

दिसम्बर, १९४१ ई० में **जापान** धुरी राष्ट्रों की ओर से युद्ध में कूद पड़ा और उसने सहसा हवाई द्वीप के पर्ल हार्बर में अमेरिका के जहाजों को नष्ट कर दिया। जापान ने भी बड़ी तेजी के साथ पूर्वी एशिया में थाईलैंड, मलाया, फिलीपाइन और हांगकांग पर अधिकार कर लिया। जनवरी, १९४२ ई० में सिंगापुर भी उसके अधिकार में आ गया। अब जावा की बारी आयी। उसे जीत कर जापान ने बरमा पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेज उसे न बचा सके और जापानी सेनाएं भारत की पूर्वी सीमा तक पहुँच गयीं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भी भारतवर्ष अंग्रेजों के अधीन था, परन्तु इस बार **कांग्रेस** या **महात्मा गांधी** ने ब्रिटेन के साथ सहयोग नहीं किया। ब्रिटिश सरकार ने जब बलात भारत को युद्ध में सम्मिलित कर दिया, तब कांग्रेस ने अपने मन्त्रिमण्डलों से इस्तीफे दिला दिये। उस समय जनता का प्रतिरोध भी जोर पकड़ने लगा और महात्मा गांधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह चला दिया। इसी बीच **सुभाषचन्द्र बोस** विदेशों से स्वराज्य का युद्ध चलाने के लिए एकाएक गायब होकर (१९४१ ई०) अफगानिस्तान और रूस के मार्ग से जर्मनी में पहुँच गये। वहां से जापान पहुँच कर **आजाद हिन्द फौज** के 'नेताजी' बन गये (१९४२ ई०)।

दूसरे विश्वयुद्ध का भी वही परिणाम हुआ जो पहले का हुआ था। १९४५ ई० में जर्मनी और उसके साथी राष्ट्रों की पराजय हुई। रूस और अमेरिका संसार में दो प्रबलतम राष्ट्र बन गये, एवं जापान का एटम बम से पराभव हो गया। एशिया में साम्राज्यवाद का विरोध जोर पकड़ गया। भारत के जननेता युद्धकाल में निरन्तर ब्रिटिश शासन का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
विरोध करते रहे और महात्मा गाँधी ने 'भारत छोड़ो' की घोषणा की (८ अगस्त, १९४२ ई०) । ब्रिटिश सरकार ने अपने विरोधी सभी नेताओं एवं हजारों भारतीयों को जेलों में बन्द कर दिया । पर, इससे क्या होता है ? देश में महान क्रान्ति हो गयी जो यद्यपि साधनों के अभाव और सरकारी दमन के कारण ऊपर से देखने में तो शिथिल पड़ गयी, परन्तु भीतर-भीतर उसकी आग सुलगती रही । तब सेना भी अंग्रेजों के हाथ से निकलने लगी ।

भारत में अपूर्व राजनीतिक जागृति, सेना में विद्रोह भावना एवं प्रतिकूल अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति से लाचार होकर ब्रिटिश पार्लमेंट ने विश्व-युद्ध की समाप्ति के केवल दो ही वर्षों बाद १५ अगस्त, १९४७ ई० तक भारत का राज्य भारतीयों के हाथों में सौंपने की घोषणा कर दी ।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—प्रथम विश्वयुद्ध कब हुआ ? विरोधी पक्षों में कौन-कौन से दल थे ? प्रथम विश्वयुद्ध का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा ?

२— मित्र राष्ट्रों ने युद्ध के विषय में क्या घोषणा की ?

३—ब्रिटिश पार्लमेंट ने प्रथम विश्वयुद्ध के समय भारत को क्या वचन दिया ?

४—'बर्लिन-रोम-तोकियो धुरी' से क्या समझते हो । द्वितीय युद्ध में धुरी का विरोध किन राष्ट्रों ने किया ?

५—द्वितीय विश्वयुद्ध में कांग्रेस ने अंग्रेजों का साथ क्यों नहीं दिया?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३—आन्तरिक शासन में सुधार

सन्' ५७ की महान क्रान्ति के बाद जब भारत का शासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी से लेकर ब्रिटिश पार्लमिंट ने सँभाला, तब यह आशा बँध गयी थी कि शान्ति स्थापन के बाद ब्रिटिश पार्लमिंट कनाडा, साउथ अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया की तरह भारत में भी पार्लमिंट-पद्धति का प्रचलन करेगी। भारत के अंग्रेजी-शिक्षित राजनीतिक नेता भी कांग्रेस के जन्म (१८८५ ई०) के समय से निरन्तर इस प्रकार की माँग को दोहराते रहे थे।

मार्ले-मिन्टो सुधार (१९०९ ई०)

धीरे-धीरे उनकी माँग में जोर बढ़ा और बीस वर्षों के बाद इंग्लैंड में भारत-सचिव लार्ड मार्ले और भारत में वायसराय लार्ड मिंटो ने अनुभव किया कि वैधानिक सुधार अवश्य होने चाहिए अन्यथा राष्ट्रीयता हिंसात्मक क्रान्ति की ओर मुड़ जायगी। अतः असन्तोष को शान्त करने के लिए १९०९ ई० में कुछ सुधार किए गये जो **मार्ले-मिंटो** सुधारों के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके अनुसार चुनाव प्रणाली को स्वीकार करके विधान सभाओं में मनोनीत सदस्यों के साथ चुने हुए सदस्य भी आये एवं सदस्यों की संख्या में भी वृद्धि हुई। परन्तु इन सुधारों से नेताओं की संतुष्टि

भारत-सचिव लार्ड मार्ले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नहीं हुई। १९०९ ई० के इण्डिया एक्ट में सदस्यों को केवल प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया था; शासन की नीति बनाने का कोई अधिकार न मिला था। इसके अलावा प्रतिनिधि चुनने का अधिकार बहुत कम लोगों को मिला था, तथा हिन्दू और मुसलमानों के अलग-अलग निर्वाचन से राष्ट्रीयता के मूलाधार पर चोट की गयी थी। अतः देश में पुनः असन्तोष फैलने लगा।

मांटेग्यू-चेम्सफर्ड सुधार (१९१९ ई०)

प्रथम महान विश्वयुद्ध (१९१४-१८ ई०) के समय पार्लमिंट ने वचन दिया था कि युद्ध की समाप्ति पर भारतीयों को शासनाधिकार दिये जायँगे। उसके विषय में जाँच करने के लिए भारत के वायसराय लार्ड चेम्सफर्ड के समय भारत सचिव मांटेग्यू इस देश में आये (१९१७ ई०)। कांग्रेस ने उनके सामने होमरूल की माँग पेश की जो स्वीकार नहीं की गयी। केवल प्रान्तों के लिए कुछ अंशों में उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए मांटेग्यू सहमत हुए।

भारत-सचिव मि० मांटेग्यू

मांटेग्यू रिपोर्ट के आधार पर पार्लमिंट में एक बिल पेश किया गया जो पास होने के बाद १९१९ ई० का गवर्मेन्ट आफ इण्डिया एक्ट कहलाया। यह **मांटेग्यू-चेम्सफर्ड सुधारों** के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनुसार केन्द्र में एक विधान-सभा के स्थान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर दो सदन बनाये गये—**राज्य परिषद** (कौंसिल आफ स्टेट) तथा **विधान सभा** (लेजिस्लेटिव एसेम्बली)। दोनों सभाओं में चुने हुए सदस्यों की संख्या मनोनीत सदस्यों की अपेक्षा अधिक थी। मांटेग्यू-चेम्सफर्ड सुधारों से केन्द्र में प्रथम तो अधिकार बहुत कम दिये गये थे, तथा जो दिये भी गये उन पर वायसराय का अंकुश लगा था।

प्रान्तों में **द्वैध शासन** (डायर्की) चलाया गया। इसका अर्थ यह था कि प्रान्तीय विषयों को दो भागों में बाँटा गया। एक भाग के विषय जैसे अर्थ, पुलिस आदि पर विधान-सभा का कोई अधिकार न था। केवल दूसरे भाग के विषय जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि जनमत द्वारा चुने हुए मन्त्रियों के अधीन रखे गये।

भारतीयों को इन सुधारों से तनिक भी संतोष नहीं हुआ, क्योंकि इनसे भारतीयों की राजनीतिक इच्छाओं की पूर्ति न हो सकी।

वायसराय चेम्सफर्ड
(१९१६–२१ ई०)

केन्द्र में वायसराय की कौंसिल के सदस्य विधान सभा के सामने जिम्मेदार नहीं थे। केन्द्रीय विधान-सभा को केवल आलोचना करने के अलावा कोई दूसरा अधिकार न था। राज्य-परिषद इस प्रकार से बनायी गयी थी कि वह सदा सरकार की हाँ में हाँ मिलाती रहे।

प्रान्तों में भी दशा असन्तोषजनक थी। मन्त्रियों को केवल खर्च के कुछ विभाग दिये गये, जिससे धन के लिए उन्हें सदा गवर्नर का सहारा लेना पड़े। इसके अलावा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
यदि विधान-सभा किसी वित्त या पुलिस जैसे रक्षित विषय के खर्चे में कमी करना चाहे, तो गवर्नर उसकी बात मानने के लिए वाध्य नहीं था। गवर्नर विधान सभा के बहुमत दल से मन्त्रियों को चुनने के लिए भी वाध्य न था। अतः इन सुधारों को केवल नरम दल के कुछ नेताओं ने स्वीकार किया। कांग्रेस ने उनका पूर्ण वहिष्कार किया।

नरम दल के नेता निष्ठा के साथ द्वैध शासन को क्रियान्वित करते रहे, परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। इसके अनेक कारण थे—

(१) **द्वैध शासन की योजना सिद्धान्त की दृष्टि से ही गलत थी।** शासन के ऐसे दो विभाग बनाना जो एक दूसरे से पृथक और स्वतन्त्र-कार्य कर सकें, सम्भव नहीं है। प्रान्तों के विषयों को रक्षित और हस्तान्तरित भागों में बाँटकर एक भाग को अनिर्वाचित और सरकारी हाथों में तथा दूसरे भाग को निर्वाचित और उत्तरदायी हाथों में रखकर लोकतन्त्र की सफलता की आशा करना व्यर्थ था।

विषयों का विभाजन की दोषपूर्ण था। हस्तान्तरित वर्ग का कोई विभाग ऐसा न था जो सांगोपांग किसी एक मन्त्री के हाथ में हो। कृषि-विभाग के मन्त्री का सिंचाई से सम्बन्ध न था। उद्योग मन्त्री का फैक्ट्रियों से सम्बन्ध न था। शिक्षा-मन्त्री का यूरोपियों और आंग्ल-भारतीयों की शिक्षा से सम्बन्ध न था। मन्त्री स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विभागों का प्रवन्ध नहीं कर सकते थे। हस्तान्तरित विभागों को रक्षित विभागों पर निर्भर रहना पड़ता था।

(२) **गवर्नर मन्त्रियों के कार्यों में बहुत हस्तक्षेप करता था।** इंग्लैंड में भारत के लिए राज्य सचिव श्री मांटेग्यू ने अपने पद से हटते ही गवर्नरों ने मन्त्रियों के कामों में अधिकाधिक दखल देना शुरू कर दिया। उन्होंने न केवल अपने मन्त्रियों की उपेक्षा आरम्भ कर दी, अपितु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वे उनके निर्णयों के विरुद्ध काम करने लगे। इस प्रकार धीरे-धीरे शासन की सारी शक्ति गवर्नरों ने अपने हाथों में केन्द्रीभूत कर ली।

(३) **मन्त्रियों तथा गवर्नर की कौंसिल के सदस्यों में सहयोग नहीं रहा।** गवर्नरों को यह आज्ञा थी कि वे अपने मन्त्रियों और कौंसिल के सदस्यों की सम्मिलित बैठकें करके विचार-विनिमय किया करें, परन्तु गवर्नरों ने उस आज्ञा का पालन नहीं किया। ऐसी स्थिति में न तो मन्त्रियों को रक्षित विभागों पर प्रभाव डालने का अवसर मिला और न कौंसिल के सदस्यों को हस्तान्तरित विभागों को प्रभावित करने का। इस प्रकार दोनों का सहयोग दिन प्रतिदिन कम होता गया। स्थिति यहाँ तक बिगड़ गयी कि वे एक दूसरे पर दोषारोपण करने लगे और गवर्नर प्राय: कौंसिल के सदस्यों का समर्थन करने लगा।

(४) **सरकारी नौकरों के कारण स्थिति बिगड़ गयी।** सुधारों में गवर्नरों को यह आदेश दिया गया कि वे प्रान्तीय सरकारी नौकरियों की सुरक्षा का ध्यान रखें। कालान्तर में गवर्नरों ने इसका यह अर्थ लगाया कि सरकारी नौकरों का स्थानान्तरण, पदोन्नति आदि का अधिकार उन्हीं को है। १९२२ ई० के पूर्व गवर्नर प्राय: प्रान्तीय पदों पर नियुक्तियाँ अपनी कौंसिल के सदस्यों के परामर्श से किया करते थे, परन्तु बाद को उन्होंने परामर्श लेना छोड़ दिया। वे केवल उन्हें नियुक्तियों की सूचना मात्र देने लगे। इससे गवर्नरों की शक्ति बहुत बढ़ गयी।

(५) **हस्तान्तरित विभाग के भारतीय लोक-सेवा अधिकारियों पर मन्त्रियों का पूरा नियन्त्रण नहीं था,** क्योंकि उनके वेतन, पदोन्नति, स्थानान्तरण आदि सब कुछ 'भारत के राज्य सचिव' के हाथों में थे। अत: वे लोग मन्त्रियों की क्या परवाह करते?

(६) **मन्त्रियों में सम्मिलित उत्तरदायित्व न था।** सुधारों ने ऐसी बुरी व्यवस्था बनायी थी कि मन्त्री सहयोग की जगह संघर्ष में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
रत रहते थे। हरएक को अपने विभाग से ममता और दूसरे के विभाग से विरति थी। इसका कारण यह भी था कि सभी मन्त्री किसी एक दल के नहीं होते थे। तब उनसे सामूहिक उत्तरदायित्व की आशा किस प्रकार की जा सकती थी ?

(७) मन्त्रियों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, क्योंकि वित्त-विभाग गवर्नर की कार्यपालिका के एक सदस्य के हाथ में रखा गया था।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—मार्ले-मिंटो सुधार कब और क्यों किये गये ?

२—मार्ले-मिंटो सुधारों से नेताओं की सन्तुष्टि क्यों नहीं हुई ?

३—मांटेग्यू-चेम्सफर्ड सुधार कब और क्यों किये गये ?

४—मांटेग्यू-चेम्सफर्ड सुधारों का कांग्रेस ने वहिष्कार क्यों किया ?

५—द्वैध शासन का क्या अर्थ है ? वह क्यों असफल हुआ ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ४—१९३५ ई० के सुधार तथा कांग्रेस का सहयोग

मांटेग्यू-चेम्सफर्ड सुधारों से भारतवासी प्रसन्न तो क्या होते, उलटे असंतोष और अशान्ति से सारे देश में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध प्रबल भावना पैदा हो गयी। विवश होकर ब्रिटिश पार्लमिंट ने **सर जान साइमन** की अध्यक्षता में एक कमीशन बनाया (१९२७ ई०) तथा उसे जांच करने और पार्लमिंट को सुधारों के विषय में परामर्श देने का काम सौंपा। कांग्रेस ने उसका भी वहिष्कार किया, क्योंकि उसके सारे सदस्य अंग्रेज थे। वे भला भारतीयों की राष्ट्रीय आकांक्षाओं को क्या समझ सकते थे ?

पार्लमिंट ने साइमन कमीशन की रिपोर्ट पर भारतीय नेताओं को इंग्लैंड बुलाकर **राउंड टेबल कान्फ्रेंसों** में बहुत विचार-विनिमय किया। अन्त में पार्लमिंट ने १९३५ ई० का गवर्मेंट आफ इण्डिया एक्ट बनाया जिसमें मतदाताओं की संख्या पाँच गुनी कर दी। १९१९ ई० के सुधारों में ७० लाख जनों को मत देने का अधिकार था, अब वह ३६० लाख को दिया गया। इस एक्ट के अनुसार केन्द्र में संघ शासन कायम करने की व्यवस्था की गयी थी जिसमें प्रान्त और देशी राज्य शामिल होने को थे। उन्हें शासन के केवल कुछ विषय केन्द्र को सौंप देने पड़ते, शेष विषयों में वे स्वतन्त्र थे। यह व्यवस्था विरोध एवं दूसरे विश्वयुद्ध के कारण अमल में नहीं आ सकी।

केवल **प्रान्तीय** शासन का अंश अमल में आया। प्रान्त के गवर्नर को परामर्श देने के लिए एक **मन्त्रि-मण्डल** बनाया गया। बंगाल, मद्रास,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बम्बई, उत्तर प्रदेश, बिहार एवं असम में दो सदन रखे गये —विधान-परिषद और विधान-सभा। अन्य प्रान्तों में केवल एक सदन विधान-सभा रही। दो नये प्रान्त **सिन्ध** तथा **उड़ीसा** बनाये गये (१६३६ ई०) और बरमा को भारत से अलग कर दिया गया (१६३८ ई०)।

हरएक सभा के सदस्यों का निर्वाचन साम्प्रदायिकता के आधार पर नियत किया गया।

१६३७ ई० के शुरू में न्तों की नयी विधान-सभाओं के **चुनाव हुए। कांग्रेस ने भी चुनाव में अपने सदस्य खड़े किये**—उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, मद्रास और बम्बई में कांग्रेस की जीत हुई। अब प्रान्तों में मन्त्रि-मण्डल बनाने का प्रश्न पैदा हुआ। कांग्रेस ने मन्त्रि-मण्डल बनाने की शर्त रखी कि जब तक कांग्रेस की कारवाई एक्ट के खिलाफ न हो तब तक गवर्नर उसमें हस्तक्षेप न करे। जब गवर्नरों ने इस प्रकार के वचन दे दिये, तब ६ प्रान्तों में कांग्रेसी मन्त्रि-मण्डल स्थापित हुए। पीछे पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त में भी बहुमत होने पर कांग्रेसी मन्त्रि-मण्डल स्थापित हो गया। असम में कांग्रेस का मिला-जुला मन्त्रि-मण्डल बना। इस प्रकार भारत में कांग्रेस की वैधानिक विजय हुई। कांग्रेस के विरोध में जो मुस्लिम लीग खड़ी हुई थी, वह किसी भी प्रान्त में मन्त्रि-मण्डल न बना सकी।

भारत के इतिहास में मुस्लिम लीग का स्थान

ब्रिटिश पार्लामेंट द्वारा भारतीय शासन सुधारों के प्रसंग में प्राय: मुस्लिम लीग का जिक्र आता है। अत: यहाँ पर मुस्लिम लीग के विषय में जान लेना आवश्यक है।

मुस्लिम लीग की स्थापना १६०६ ई० में ढाका में इस मतलब से की गयी थी कि मुसलमानों को इण्डियन नेशनल कांग्रेस की राजनीति से अलग रखा जाय। लीग के विधान में उसके उद्देश्य ये रखे गये—(१)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भारत के मुसलमानों में ब्रिटिश सरकार के लिए राजभक्ति पैदा करना, तथा (२) भारत के मुसलमानों के राजनीतिक एवं दूसरे अधिकारों की रक्षा करना। इस प्रकार मुस्लिम लीग शुरू से ही राष्ट्रीयता की विरोधी एक साम्प्रदायिक संस्था थी। अत: देशभक्त मुसलमानों ने उसका विरोध किया, और १९१३ ई० में मौ० मुहम्मद अली, मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना आदि नेताओं के प्रयत्नों से मुस्लिम लीग के विधान में सुधार किया गया और उसका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्व-राज्य प्राप्त करना रखा गया। इस प्रकार लीग कांग्रेस के निकट आ गयी और दोनों ने मिलकर १९१६ ई० में सुधार की एक योजना बनायी।

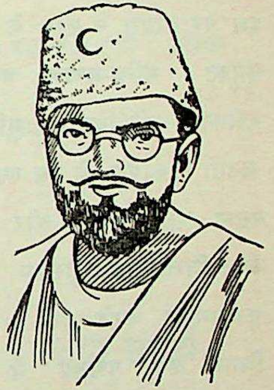
मौ० मुहम्मद अली

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद असहयोग और खिलाफत आन्दोलनों के समय कांग्रेस और मुस्लिम लीग में विरोध जाता रहा (१९२० ई०)। तभी इस्लाम धर्म के विद्वान मुसलमानों ने जमीअत-उल्-उलेमाए हिन्द नाम की एक संस्था स्थापित की जिसके राजनीतिक विचार राष्ट्रीय थे। खिलाफत समिति और जमीअत के बढ़ते हुए प्रभाव के सामने मुस्लिम लीग पिछड़ गयी। परन्तु जब महात्मा गाँधी ने असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया तथा हिन्दू महासभा ने शुद्धि और संगठन का काम आरम्भ किया. तब मि० जिन्ना ने मुस्लिम लीग को पुन: जीवित करने का मौका देखा। मि० जिन्ना पहले एक पक्के कांग्रेसी थे, परन्तु असहयोग आन्दोलन के समय कांग्रेस से अलग हो गये। वह बड़े विद्वान और चतुर राजनीतिज्ञ थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६३७ ई० में मि० जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने विधान सभाओं के चुनाव लड़े जिसमें बहुत साधारण सफलता मिली। इस पर कांग्रेस ने लीग के साथ संयुक्त मन्त्रि-मण्डल बनाना स्वीकार नहीं किया। मुस्लिम जनता ने कांग्रेस के इस रुख को पसन्द नहीं किया और वह मि० जिन्ना एवं मुस्लिम लीग का समर्थन करने लगी। मि० जिन्ना अब पूर्णरूप से सब जातियों और धर्मों के भारत-वासियों की उपेक्षा करके केवल मुसलमानों के हितों और अधि-कारों की रक्षा में लग गये।

मि० मुहम्मद अली जिन्ना

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—सर जान साइमन कौन था ? वह भारत में क्यों आया ?

२—काँग्रेस ने साइमन कमीशन का वहिष्कार क्यों किया ?

३—१९३५ ई० के सुधारों के अनुसार केन्द्र में किस प्रकार की व्यवस्था की गयी थी ? वह अमल में क्यों नहीं आ सकी ?

४—१६३५ई०के सुधारों के अनुसार प्रान्तों में क्या व्यवस्था की गयी?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५—१६३५ ई० के सुधारों के अनुसार चुनाव कब हुए ? उनका क्या परिणाम हुआ ?

६— कांग्रेस दल का बहुमत किन प्रान्तों की विधान-सभाओं में बन गया ?

७—मन्त्रि-मण्डल बनाने के लिए कांग्रेस ने क्या शर्त रखी ? उसका क्या परिणाम हुआ ?

८—भारत के इतिहास में मुस्लिम लीग का क्या स्थान है ?

पाठ ५—भारत में नवचेतना—राष्ट्रीय संघर्ष

भारत के राष्ट्रीय संघर्ष के इतिहास में बंग-भंग एवं १६०५ ई० का विशेष महत्व है। उस वर्ष 'बाल-लाल-पाल' के नेतृत्व में जिस दल का उदय हुआ, वह प्रस्तावों और प्रार्थना-पत्रों की जगह कर्म और संघर्ष का समर्थक था। इस दल के प्रचार का मुकाबला करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने कूटनीति का सहारा लिया। उसने मुसलमानों को राष्ट्रीय आन्दोलन से अलग रखने के लिए 'मुस्लिम लीग' की स्थापना करायी (१६०६ ई०)। गरम दल का दमन करने के लिए लाला लाजपत राय को बरमा में निर्वासित किया तथा नरम दल को अपनी ओर मिलाने के लिए माले-मिंटो सुधार किये (१६०७ ई०)। उस वर्ष जब सूरत में कांग्रेस अधिवेशन हुआ, तब नरम तथा गरम दलों में खुल्लम-खुल्ला हाथा-पायी हो गयी। गरम दल कांग्रेस से अलग हो गया और देश में गुप्त अथवा प्रकट हरएक सम्भव उपाय से राजद्रोह की भावना जागृत करने लगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गरम दल के स्वदेशी-प्रचार और विदेशी वहिष्कार आन्दोलन ने बड़ा जोर पकड़ा। नवयुवकों ने उसमें प्रमुख भाग लिया। इस पर बिगड़ कर कलकत्ते के एक मजिस्ट्रेट ने कई युवकों को बेतों का दण्ड दिया। तब खुदीराम बोस नाम के एक युवक ने बम से उसको मारना चाहा। खुदीराम बोस के कई साथी पकड़े गये। उस पर बाल गंगाधर तिलक ने लिखा कि यह सच है कि बमों से सरकार की सैनिक शक्ति नष्ट नहीं हो सकती…… ……पर बम से सरकार का ध्यान उस अन्धेर की तरफ खींचा जा सकता है जो सैनिक शक्ति के नशे में उसने मचा रखा है। इस लेख पर **तिलक को ६ वर्षों के कारावास** का दण्ड मिला। तभी प्रेस-जब्ती का कानून बनाया गया। अनेक नेता निर्वासित किये गये तथा कई सभा-समितियां अवैध ठहरायी गयीं। (१६०८ ई०)।

१६०६ ई० में **मार्ले-मिंटो** सुधारों पर अमल किया गया, पर इससे विरोध कम नहीं हुआ। ब्रिटिश सरकार ने दमन की चक्की में नेताओं को पीसना चाहा, अतः पंजाब से कई नेता ईरान भागे, दिल्ली से **हरदयाल** मिस्र में पहुँचे। **सावरकर** भारत आते हुए पकड़ लिए गये। १६१०-११ ई० में कई षड्यन्त्रों के मुकदमे चले।

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी लाला हरदयाल

१६११ ई० में **सम्राट जार्ज पंचम** भारत पधारे और उन्होंने **बंग-भंग** को रद्द करने की घोषणा की। जनमत की जीत हुई, परन्तु ब्रिटिश सरकार के द्वारा भारत की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजधानी कलकत्ता से दिल्ली ले जाने पर बंगाल में बड़ा रोष पैदा हुआ। फलत: जब वायसराय हार्डिग्ज जुलूस में दिल्ली के चाँदनी चौक से गुजर रहे थे, किसी ने उन पर **बम फेंका** (१६१२ ई०)।

१६१४-१८ ई० में **प्रथम** महान विश्वयुद्ध चलता रहा। भारत में कांग्रेस के नेताओं ने ब्रिटिश सरकार के वचनों का विश्वास करके उसके साथ सहयोग किया, पर विदेशों में जा बसे भारतीय क्रान्तिकारियों ने भारत में रहने वाले गुप्त क्रान्तिकारियों के साथ अनेक षड्यन्त्रों के द्वारा इस देश में विप्लव के प्रयत्न किये। इन प्रयत्नों का पता चल जाने पर ब्रिटिश सरकार ने पंजाब और बंगाल में सैकड़ों को **फाँसी** दी एवं **काला पानी** भेजा तथा कई हजार को **नजर बन्द** कर दिया। दमन का चक्र दो-तीन वर्षों तक बड़े जोरों से घूमा (१६१५-१७ ई०)।

महायुद्ध के समय भारतवासियों को ब्रिटिश सरकार ने जो-जो आशाएं दिलायी थीं उनमें से एक भी ईमानदारी के साथ पूरी न की। **उल्टे राउलट बिल** पेश किया जिसके पास होने पर न्यायालय में विचार किये बिना चाहे जिसे नजरबन्द किया जा सकता था। महात्मा गाँधी ने इसका **विरोध** किया। सारे देश में **हड़तालें** और विरोध **सभाएँ** हुई। **गांधीजी** पकड़ लिये गये। अमृतसर के **जलियांवाला** बाग की एक सभा में जनरल डायर ने नि:शस्त्र जन-समूह पर गोली चलवा दी जिससे ४०० आदमी मरे और लगभग १५०० घायल हुए। पंजाब में फौजी कानून लगाकर भीषण यन्त्रणाएं दी गयीं। इस प्रकार आन्दोलन को कुचला गया।

अब सरकार ने मांटेग्यू-चेम्सफर्ड सुधार किये और नजरबन्द कैदियों को छोड़ दिया, परन्तु देश में कांग्रेस के नेताओं ने सुधारों को अपूर्ण और असन्तोषजनक ठहराया। १६१६ ई० के दिसम्बर में अमृतसर में जो कांग्रेस अधिवेशन हुआ उसमें महात्मा गाँधी के नेतृत्व में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रिटिश सरकार से असहयोग करना तय पाया। अतः महात्मा गांधी ने अहिंसात्मक असहयोग (नान-कोआपरेशन) आन्दोलन शुरू किया (१६२० ई०)। इस आन्दोलन के कार्यक्रम में तीन बातें मुख्य थीं—

(१) सरकार से भारतीय कर्मचारी इस्तीफा दे दें।

(२) विद्यार्थी सरकारी अथवा सरकार से सहायता-प्राप्त शिक्षालयों में पढ़ना छोड़कर राष्ट्रीय विद्यालयों या विद्यापीठों में पढ़ें।

(३) सब भारतवासी विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं एवं हाथ के कते-बुने वस्त्रों का व्यवहार करें।

उसी समय असहयोग के कार्यक्रम को कामयाब बनाने के लिए कांग्रेस के १ करोड़ सदस्य बनाना एव १ करोड़ रुपये का तिलक स्वराज्य फण्ड जमा करना भी निश्चित हुआ।

महात्मा गाँधी के द्वारा संचालित असहयोग आन्दोलन ने सारे देश में अद्भुत राष्ट्रीय जागृति पैदा कर दी। स्वराज्य का संदेश सर्वसाधारण जनता तक देश के कोने-कोने में पहुँच गया। टर्की मे खिलाफत के अन्त से मुसलमान बड़े क्षुब्ध थे। इस प्रश्न को लेकर वे भी बड़ी संख्या में असहयोग आन्दोलन में शरीक हो गये। उन्होंने कराची के खिलाफत सम्मेलन में घोषणा की कि मुसलमानों के लिए ब्रिटिश फौज में रहना हराम है। इस पर कई मुसलमान नेता पकड़े गये। तब कांग्रेस की कार्य-समिति ने भी आदेश निकाला कि देश भर में सभाएं करके यह घोषणा की जाय कि ब्रिटिश सरकार की नौकरी करना राष्ट्रहित और राष्ट्रगौरव के प्रतिकूल है।

ब्रिटिश सरकार असहयोग आन्दोलन को दबाने के लिए हर प्रकार के उपाय कर रही थी। उधर आन्दोलनकर्ता खुशी-खुशी धड़ाधड जेल जा रहे थे। दिसम्बर, १६२१ ई० तक लगभग ३० हजार असहयोगी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जेलों में पहुँच गये । इस प्रकार का जनता का शान्तिमय प्रतिरोध संसार के इतिहास में बेजोड़ था ।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—राष्ट्रीयता के इतिहास में बंग-भंग और १६०५ ई० का क्या महत्व है ?

२—राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलने के लिए ब्रिटिश सरकार ने १६०७-६ में क्या-क्या उपाय किये ?

३—प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् राष्ट्रीय अन्दोलन ने किस प्रकार जोर पकड़ा ?

४—असहयोग आन्दोलन क्यों शुरू किया गया ? उसका कार्य-क्रम क्या था ?

५—खिलाफत आन्दोलन क्या था ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ६—सत्याग्रह और स्वराज्य

१९२१ ई० के अन्तिम सप्ताह में अहमदावाद काँग्रेस ने आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए गाँधीजी को नेता बनाया। इसके पहले कांग्रेस असहयोग आन्दोलन को एक कदम और आगे बढ़ाने के अभिप्राय से प्रान्तीय कांग्रेसों को **सत्याग्रह** करने का अधिकार दे चुकी थी। **करबन्दी** सत्याग्रह के कार्यक्रम का मुख्य अंग था। तदनुसार महात्मा गांधी ने **बारडोली** (जिला सूरत) में करबन्दी की तैयारी की थी। अपने सत्याग्रह के कार्क्रयम को आरम्भ करने के पहले उन्होंने वायसराय लार्ड रीडिंग को लिखा कि यदि सरकार अहिंसात्मक आन्दोलन में तटस्था की नीति बरतने की घोषणा कर दे, तो मैं सत्याग्रह स्यगित कर सकता हूँ जिससे सारे कैदी छूट कर स्थिति पर नये सिरे से विचार कर लें। इस प्रकार की घोषणा के लिए सरकार को एक सप्ताह का समय दिया गया। इसी बीच गोरखपुर के **चौरीचौरा** नामक स्थान में भड़कायी हुई भीड़ ने पुलिस थाना जला दिया। सत्याग्रह में हिंसा की आशंका से गाँधीजी ने सामूहिक सत्याग्रह बन्द कर रिया। उनकी उदारता

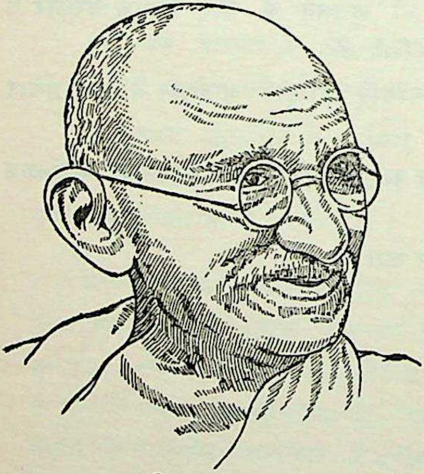

राष्ट्र-पिता महात्मागांधी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का लाभ उठाकर सरकार ने जोरों से दमन आरम्भ किया तथा **गाँधी जी** को पकड़कर ६ वर्षों के **कारावास** का दण्ड दिया।

साम्प्रदायिक दंगे तथा क्रान्तिकारियों का संगठन—कांग्रेस और खिलाफत के मेल से देश ने एक स्वर से विदेशी शासन का विरोध किया था। सरकार ने हिन्दू-मुस्लिम एकता कोभंग करने के लिए साम्प्रदायिक दंगों को उभाड़ा (१९२२ ई०)। खिलाफत और कांग्रेस के नेता उन्हें शान्त न कर सके। जब गाँधी जी को जेल से छोड़ा गया (१९२४ ई०), तब उन्होंने भी साम्प्रदायिक समझौते का प्रयत्न किया। इस समय तक खिलाफत का प्रश्न तय हो चुका था और **मुस्लिम लीग** का मुसलमानों में जोर था। गाँधी जी के प्रयत्न सफल नहीं हुए और **हिन्दू-मुस्लिम दंगे** हद को पहुँच गये (१९२६ ई०)। ऐसी दशा में क्रान्तिकारी नवयुवकों ने अपने सगठनों का विस्तार करके देश में स्वराज्य की ज्योति को प्रज्वलित रखने के प्रयत्न किये। प्रसिद्ध **क्रान्तिकारी सरदार भगतसिंह** इसी समय चमके। उनके स्वाधीन भारत संघ का अनुकरण करके देश में अनेक युवक सभाएं और मजदूर सभाएं बन गयीं।

सरदार भगतसिंह

ब्रिटिश सरकार ने सुधारों की जाँच के लिए जो साइमन कमीशन नियत किया (१९२७ ई०), उसमें कोई सदस्य भारतीय नहीं था, अतः उसका वहिष्कार किया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दमन तथा ब्रिटिश नीति में परिवर्तन—१६२६ ई० में इंग्लैंड में मजदूर दल की सरकार बनी। उसकी आज्ञानुसार भारत को शान्त करने के लिए वायसराय इर्विन ने घोषणा की कि भारत को शासनाधिकार सौंपने के प्रश्न पर विचार करने के लिए शीघ्र ही लन्दन **गोलमेज कानफ्रेन्स** होगी। कांग्रेस ने तब अपने लाहौर के अधिवेशन में भारत का लक्ष्य पूर्ण स्वतन्त्रता निश्चित किया (१६२६ ई०) अंग्रेजों के साइमन कमीशन का वहिष्कार पहले से चल ही रहा था और उसमें लाला लाजपत-राय अपनी आहुति दे चुके थे। १६३० ई० में महात्मा गाँधी ने **नमक कानून तोड़ने का सत्याग्रह** शुरू किया। भारत में जगह-जगह नमक कानून तोड़ा गया। सरकार ने अनेक स्थानों पर गोलियां चलायीं और सैकड़ों गिरफ्तारियां कीं। इसी सिलसिले में पेशावर में सर-कार पठानों के एक जुलूस को गोलियों की बौछार से भी तितर-वितर न कर सकी। **खान अब्दुल-गफ्फारखाँ** ने उन्हें गाँधी जी के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी थी। पठान गोलियां खाकर गिरते रहे, पर पीछे न हटे। उस समय कुछ गढ़वाली सैनिकों ने निःशस्त्र जनता पर गोली चलाने से इनकार कर दिया था। उन्हें दण्ड दिया गया। गाँधीजी भी गिरफ्तार करके यरवदा जेल भेज दिए गये।

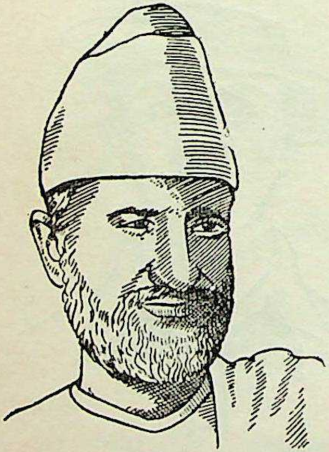
खान अब्दुलगफ्फार खाँ

यद्यपि लार्ड इर्विन दमन कर रहा था, तथापि वह अच्छी तरह समझता था कि उसकी दमननीति अनिश्चित काल तक नहीं चल सकती। अतः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रिटिश मजदूर-सरकार की प्रेरणा से नेताओं को छोड़ दिया गया (१६३१ ई०)। इसके पूर्व कुछ हिन्दू नेता तथा मुस्लिम लीग व देशी राज्यों के कुछ प्रतिनिधि लन्दन की राउंड टेबल कांफ्रेंस में साइमन कमीशन के प्रस्तावों पर विचार करने के लिए भेजे जा चुके थे। पर कांग्रेस की अनुपस्थिति में उनकी बात का वजन ही क्या हो सकता था? अतः इर्विन ने गाँधी जी से समझौता करके उन्हें राउंड टेबल कांफ्रेंस में जाने के लिए राजी कर लिया। गाँधी जी ने सत्याग्रह बन्द कर दिया और गवर्मेंट ने राजनीतिक कैदी छोड़ दिये।

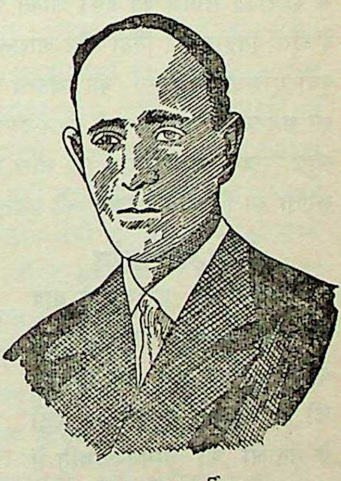
वायसराय इर्विन

दोबारा सत्याग्रह—गोलमेज कांफ्रेंस में गाँधी जी की बात नहीं मानी गयी। सरकार ने साम्प्रदायिक निर्णय से मुसलमानों को अपनी ओर मिला लिया। जब गाँधी जी ने पुनः सत्याग्रह करने का निश्चय किया, तब वायसराय विलिंग्डन ने घोर दमन से काम लिया। उसने कांग्रेस को गैरकानूनी घोषित कर दिया एवं कांग्रेसी नेताओं को पकड़ लिया। देश में साम्प्रदायिक दंगों का दौरा भी शुरू हुआ अतः सत्याग्रह आन्दोलन कुचल गया। इस पर क्रान्तिकारियों ने बंगाल के मेदिनीपुर, चटगाँव आदि जिलों में हिंसात्मक उपद्रव जारी कर दिये। १६३३ ई० में गाँधी जी ने जेल में अनशन शुरू किया, तब सरकार ने उन्हें छोड़ दिया और समझौते की बातचीत की (१६३४ ई०)।

१६३५ ई० में ब्रिटिश पार्लमेंट ने नया शासनसुधार बिल पास किया। १६३७ ई० के चुनावों के फलस्वरूप देश में कांग्रेस की पुनः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वैधानिक विजय हुई । इसके बाद महान विश्वयुद्ध और कांग्रेस के असहयोग एवं' ४२ की क्रांति का इतिहास तुम पिछले एक पाठ में पढ़ चुके हो।

विश्वयुद्ध के बीच सन् '४२ की 'भारत छोड़ो' क्रान्ति से भारत के स्वराज्य संग्राम को बड़ी शक्ति प्राप्त हुई । अनेक स्थानों पर जनता ने खुला विद्रोह कर दिया और शासन का सारा काम ठप्प हो गया । उधर पूर्वी एशिया में भारत को स्वतन्त्र करने के लिए **आजाद हिन्द फौज** का संगठन हो गया । उसी साल बंगाल में **भीषण दुर्भिक्ष** पड़ा जिसमें ३५ लाख आदमी भूख से एवं १२ लाख रोग से पीड़ित होकर मर गये । ऐसा लगता था कि जैसे सरकार की प्रबन्ध-कुशलता को लकवा मार गया हो।

नीति-परिवर्तन

जर्मनी की पराजय के बाद वायसराय वेवल ने कांग्रेस नेताओं को छोड़ दिया और यह घोषणा की कि वह सब राजनीतिक दलों के नेताओं को शासन-समिति में शामिल करने के लिए तैयार हैं, यदि वे जापान के विरुद्ध युद्ध में सहयोग दें।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

अंग्रेजों के सौभाग्य से अमेरिका के **एटम बमों** द्वारा जापान के दो नगरों हिरोशिमा और नागासाकी के पूर्णतः नष्ट हो जाने पर जापान ने भी हार मान ली । उधर आजाद हिन्द फौज के नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की हवाई जहाज से गिर जाने से मृत्यु हो गयी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युद्ध की समाप्ति पर आजाद हिन्द फौज के तीन मुख्य नायकों पर जो अंग्रेजों के हाथों में पड़ गये थे दिल्ली के **लाल किले में मुकदमा** चलाया गया। उनका साथ देने के लिए बिजली की सी एक लहर सारे देश में दौड़ गयी। हिन्दू मुसलमान सब मिल गये। सरकार ने नाममात्र का दण्ड देकर तीनों को छोड़ दिया। उनके मुकदमें की कारवाई से नेताजी के महान व्यक्तित्व और उनके अपूर्व कामों का ज्ञान सर्वसाधारण जनता को हुआ। कांग्रेस और पं० जवाहरलाल नेहरू ने अभियुक्तों की पैरवी का प्रबन्ध किया था। सारा देश उनका कृतज्ञ बना (जनवरी १९४६ ई०)। अगले महीने में एक बड़ी महत्वपूर्ण घटना हुई। बम्बई में **नौसैनिकों ने विद्रोह** कर दिया।उन्होंने जंगी जहाजों से अंग्रेजी झण्डे उतार कर उनकी जगह कांग्रेसी व लीगी झण्डे फहरा दिये। नौसेना का विद्रोह अन्य बन्दरगाहों में फैल गया। पाँच दिनों तक विद्रोह जारी रखने के बाद नौसैनिकों ने राष्ट्रीय नेताओं के कहने से आत्मसमर्पण तो कर दिया, परन्तु ब्रिटिश सरकार को अनुभव हो गया कि अब हवा किधर की है अतः ब्रिटिश पार्लमिंट ने भारत छोड़ने का निश्चय कर लिया।

केन्द्रीय सरकार में कांग्रेसी और लीगी नेता शरीक हो गये थे। मुस्लिम लीग ने मिस्टर जिन्ना के नेतृत्व में भारतवर्ष को विभाजित कर पाकिस्तान की मांग की। कांग्रेस ने कोई चारा न देख वायसराय मौंटबैटन से बटवारे के विषय में अपनी सहमति प्रकट कर दी। इस प्रकार १५ अगस्त, १९४७ ई० को 'अपने देश में अपना राज' स्थापित हुआ।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—बारडोली कहाँ है और राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है ?

२—चौरी-चौरा कहाँ है ? सत्याग्रह आन्दोलन के इतिहास में वह क्यों प्रसिद्ध है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३—१९२२ ई० में साम्प्रदायिक दंगे क्यों हुए ?

४—सरदार भगतसिंह ने क्रान्तिकारी आन्दोलन को कब और क्यों संगठित किया ?

५—महात्मा गाँधी ने नमक सत्याग्रह कब और क्यों शुरू किया ? वह इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है ?

६—वायसराय इर्विन ने गाँधी जी को राउंड टेबल कान्फ्रेंस में भेजने के लिए उनसे समझौता क्यों किया ?

७—सन् '४२ की किन घटनाओं के कारण स्वराज्य-संग्राम को शक्ति प्राप्त हुई ?

८—आजाद हिन्द फौज के नायकों पर लाल किले में चलाये गये मुकदमे का क्या परिणाम हुआ ?

९—नौसैनिकों के विद्रोह से ब्रिटिश सरकार को क्या विदित हो गया ?

पाठ ७—सामाजिक सुधारों की लहर और पुनर्जागरण

आधुनिक काल में राष्ट्रीय चेतना भारत के उस नवजीवन का पहलू था जिसने देश के अन्तस्तल को हिला दिया था। इसके दूसरे पहलू सामाजिक सुधार, शिक्षा में उन्नति तथा साहित्य, संगीत एवं कला का उत्कर्ष है।

गत एक सौ वर्षों में भारतवर्ष में अनेक देशोन्नति के नवजीवनपूर्ण आन्दोलन हुए हैं। उनमें से तुम ब्राह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन व थियोसोफिकल सोसायटी के विषय में एक पिछले अध्याय में पढ़ चुके हो। ये सब उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में आधुनिक नवजीवन के ही स्पन्दन थे। बीसवीं शती में भी देशोन्नति के ये प्रयत्न जारी रहे तथा राजनीतिक सुधारों के साथ-साथ मद्यनिषेध, अछूतोद्धार, बाल-विवाह-निरोध, समाज-सेवा आदि कार्यों में अपूर्व प्रगति हुई।

मद्यनिषेध की ओर प्रायः सभी धर्म-सुधारकों ने ध्यान दिया था,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परन्तु महात्मा गाँधी ने कांग्रेस के रचनात्मक कार्यक्रम में शराबवन्दी को सम्मिलित करके उसे एक महत्वपूर्ण काम का दर्जा दे दिया। अतः असहयोग आन्दोलन के समय शराब की दूकानों पर धरने दिये गये एवं कांग्रेस सरकारों ने शराबनोशी को कानून के द्वारा पूरे प्रान्त के अनेक जिलों में बन्द कर दिया।

अछूतोद्धार के लिए ईसाइ मिशनरियों, आर्यसमाज, प्रार्थना समाज एवं रामकृष्ण मिशन के प्रयत्नों के बारे में सब जानते हैं। इसके अतिरिक्त देश के विभिन्न भागों में अनेक सभाएं और समितियां दलितों की सामाजिक एवं अध्यात्मिक उन्नति के लिए बनायी गयीं। १९०६ ई० में बम्बई में स्थापित 'डिप्रेस्ड क्लासेज मिशन सोसायटी' और ठक्कर बापा द्वारा १९२२ ई० में स्थापित 'भील सेवासदन' बड़े प्रसिद्ध हैं। महात्मा गाँधी का 'हरिजन आन्दोलन' इस दिशा में सबसे अधिक प्रभावशाली रहा है। महात्मा जी ने 'अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ' की स्थापना कर हिन्दू समाज के कलंक अछूतपन को मिटाने और हरिजनों की सर्वांगीण उन्नति करने का प्रयत्न किया। उनकी प्रेरणा से कांग्रेस और राष्ट्रीय सरकार दोनों ने हरिजनों को बराबरी का अधिकार तथा शिक्षा की प्राप्ति एवं नौकरियों में विशेष सुविधाएं दी हैं।

बाल विवाह की सामाजिक कुरीति के विरुद्ध जनमत को शिक्षित करने के अलावा आधुनिक काल में कानून भी बनाये गये हैं। १९०१ ई० में गायकवाड़ बड़ौदा ने कानून बनाकर १२ वर्षों की आयु से पूर्व कन्याओं का और १६ वर्षों की आयु के पूर्व कुमारों का विवाह वर्जित कर दिया। १९३० ई० में भारत सरकार ने शारदा बिल पास करके बाल विवाह को रोका। इसी प्रकार विधवाओं की दारुण दशा का अन्त करने के लिए मैसूर के महारानी स्कूल, आर्यसमाज और उत्तर प्रदेश की विधवा-सुधार सभा ने प्रशंसनीय कार्य किया है। स्त्री-शिक्षा की भी आधुनिक काल में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अद्भुत उन्नति हुई। १६२३ई० में स्थापित 'विमेंस इण्डियन असोसिएशन' ने महिलाओं के उपयोगी हरएक प्रश्न पर सफलता प्राप्त की।

समाजिक सेवा का भाव आधुनिक काल में सामान्य रूप से भारतवासियों के हृदय में उदय हुआ। इस दिशा में जो विविध संगठित प्रयत्न किये गये, उनका उल्लेख भी आवश्यक है। १६०५ ई० में गोपालकृष्ण गोखले ने **भारत सेवक समिति** की स्थापना की। इस समिति ने अनेक ऐसे नवयुवकों को सुशिक्षित किया जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में मातृभूमि की अनुपम सेवा की है।

गोपाल कृष्ण गोखले

गोपालकृष्ण गोखले की मृत्यु (१६१५ ई०) के बाद श्रीनिवास शास्त्री समिति के अध्यक्ष रहे। दोनों ने राजनीति को अपना क्षेत्र बनाकर भारत माता की सेवा की थी। एक सदस्य नारायण मल्हार जोशी ने १६११ ई० में बम्बई में समाज सेवा संघ स्थापित किया जिसका उद्देश्य सर्वसाधारण के जीवन को उन्नत करना था। इस सभा ने अनेक रात्रि पाठशालाएं, वाचनालय, पुस्तकालय आदि खोले। फिर १६२० ई० में श्री जोशी ने अखिल भारतीय **ट्रेड यूनियन कांग्रेस** की स्थापना की जिसका उद्देश्य मजदूरों की दशा को उन्नत करना था। इसी प्रकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोपाल कृष्ण देवधर ने पूना **सेवा सदन** की स्थापना की जिसने महाराष्ट्र में स्त्री शिक्षा के फैलाने में बड़ा काम किया।

भारत सेवक समिति के एक अन्य सदस्य हृदयनाथ कुंजरू ने प्रयाग में १६१४ ई० में **सेवा समिति** की स्थापना की तथा श्रीराम बाजपेयी ने **बालचर आन्दोलन** उस समय चलाया जब लार्ड बेडन पावल के स्काउट आन्दोलन में भारतीयों को शामिल नहीं किया जाता था।

भारत सेवक समिति के इन पाँच सदस्यों—गोखले, शास्त्री, कुंजरू जोशी एवं बाजपेयी—के कार्यों से तुम्हें भली भाँति विदित हो जायगा कि भारत के राष्ट्रनिर्माण में इस समिति का कितना महत्वपूर्ण योगदान है। आधुनिक भारत में सामाजिक सेवा के लिए किये गये प्रयत्नों में भारत सेवक समिति के समान हिन्दुओं, सिक्खों, मुसलमानों, ईसाइयों, पारसियों आदि सभी वर्गों के लोगों ने जनसेवा के लिए अनेक सभा-समितियों को स्थापित किया, जिनसे भारत के जनसाधारण को लाभ पहुँचा।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—आधुनिक काल में देश में फैली कुरीतियों-मद्यपान एवं बाल-विवाह को रोकने के लिए क्या प्रयत्न किये गये ?

२—अछूतोद्धार और स्त्री जाति की उन्नति के लिए आधुनिक काल में क्या प्रयत्न किये गये हैं ?

३—आधुनिक काल में सामाजिक सेवा के लिए किये गये प्रयत्नों का उदाहरण के साथ वर्णन करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आठवां अध्याय

नया भारत

१५ अगस्त सन्' ४७ को भारत की स्वतन्त्रता भारत में ही नहीं वरन् विश्व के इतिहास में एक अन्यतम घटना है। जिस सद्भावना के साथ अंग्रेजों ने भारतीयों के हाथों में अपने महान भारतीय साम्राज्य को सौंपा उसकी मिसाल इतिहास में दूसरी जगह नहीं मिलती। स्वतंत्र होने के बाद जिस तेजी से भारत ने अपने **घर को सँभाला और विदेशों में यश** प्राप्त किया उसकी उपमा भी इतिहास में नहीं पाई जाती।

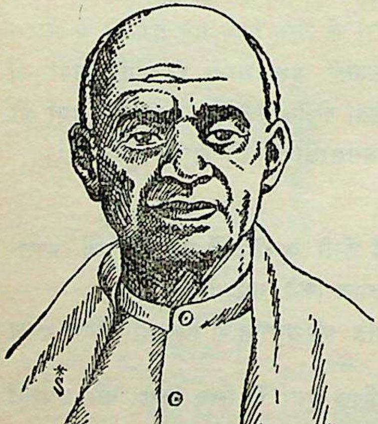

सरदार वल्लभ भाई पटेल

घर को सँभालना—स्वतन्त्र होने के समय भारत के सामने चार कठिनाइयां थीं जिन्हें दूर किये बिना देश की रक्षा और उन्नति नहीं हो सकती थी—

(१) भारत के लगभग ५५० रजवाड़ों का स्वतन्त्र भारत से सम्बन्ध,

(२) पाकिस्तान से निकाले गये लाखों शरणार्थियों को भारत में बसाना,

(३) भारत के भावी शासन का रूप तय करना, तथा

(४) देश में अन्न एवं वस्त्र की कमी को दूर करना।

इन चारों कठिनाइयों पर विजय पा ली गयी। सरदार पटेल ने बड़े

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
धैर्य, बुद्धिमानी और तत्परता से रियासतों को भारत में मिला लिया। उनकी स्वतन्त्र सत्ता का अन्त होकर कुछ तो प्रान्तों में समा गयीं और कुछ ने नये राज्यों का रूप ले लिया। पाकिस्तान से आये शरणार्थियों को भारत के विभिन्न भागों में बसाकर उनके जीवन और व्यवसाय आदि का प्रबन्ध हो गया। भारत की संविधान सभा ने देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में दो वर्षों तक परिश्रम करके भारत का गणराज्य के रूप में नया संविधान बनाया जो २६ जनवरी, १९५० ई० से देश में लागू है। अन्न और वस्त्र की कमी को दूर करने के प्रयत्न जारी हैं।

देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद

भारत को स्वतन्त्र हुए अभी केवल उन्नीस-बीस वर्ष हुए हैं। अपने इन बीस वर्षों के स्वाधीनता काल में देश ने भावी उन्नति के लिए अपनी नींव मजबूत जमा ली है। अधिक अन्न पैदा करने, देश में शान्ति बनाये रखने जैसे अनेक कठिन प्रश्न हल किये जा रहे हैं, पुनर्निर्माण की अनेक महान योजनाओं को पूरा करने के लिए भारत अब तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। पहली पंचवर्षीय योजना के बाद देश के उत्पादन में २५ प्रतिशत की वृद्धि हुई। दूसरी पंचवर्षीय योजना के बाद यह वृद्धि बढ़कर ३५ प्रतिशत हो गयी अर्थात पहली पंचवर्षीय योजना के समय जो उत्पादन था उससे काफी अधिक बढ़ गया। अब १९६६ से चौथी योजना चालू है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस समय शिल्प, व्यापार, रेल, डाक, शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, बिजली आदि सभी बातों में देश में उन्नति हो रही है। अनेक सामूहिक विकास योजनाओं के द्वारा ग्राम, नगर, सारे देश का चित्र ही बदलता जा रहा है। इससे मालूम होता है कि देश जल्द ही परतन्त्रता-काल की दु:ख दरिद्रता का नाश करके सुख सम्पन्नता की ओर बढ़ता जायगा।

देश निर्माण का दूसरा प्रकरण अर्थात् दूसरी पंचवर्षीय योजना (१९५६-६१ ई०) मुख्यरूप से उद्योगीकरण की थी। इन पांच वर्षों में अरबों रुपया लगाकर अनेक छोटे और बड़े उद्योग-धन्धे चलाये गये। चौथी योजना (१९६६-७१ ई०) में एक खरब रुपया से भी अधिक लगेगा तथा देश कृषि उत्पादन और भारी उद्योगों में समृद्ध बनेगा।

विश्व में स्थान

दूसरे महान विश्व युद्ध के बाद संसार का राजनीतिक चित्र बदल गया है। कई एशियाई और अफ्रीकी राष्ट्रों ने जिनमें भारत भी एक है, शतियों की दासता के बाद स्वाधीन राष्ट्रों के समाज में अपना स्थान प्राप्त कर लिया है। अब तक यूरोप विश्व राजनीति का केन्द्र था और एशिया और अफ्रीका की नितान्त उपेक्षा की जाती थी, यहाँ तक कि स्वयं उनके मामलों में भी उनसे सम्मति नहीं ली जाती थी, परन्तु एशिया और अफ्रीका के देशों में जागरण हो जाने के कारण ये महाद्वीप **विश्व की राजनीति के केन्द्र** बन गये हैं। भारत एवं चीन उसके दो बड़े धुरे हैं। यह एशिया का दुर्भाग्य है कि चीन ने भारत पर आक्रमण करके भारत की शान्ति को भंग किया है और नवोदित एशियाई-अफ्रीकी राष्ट्रों के महत्व को धक्का पहुँचाया है।

विश्व की राजनीति **अमेरिका और रूस** के दो गुटों में बंट गयी है। **भारत तटस्थ** है। प्रधान-मन्त्री स्वर्गीय पं० जवाहरलाल नेहरू की तटस्थता नीति का अनुसरण करते हुए भारत गुटबन्दी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में पड़ना नहीं चाहता । उसे अपने घर में न्याय, समता एवं बंधुता की स्थापना करके एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जिसका उद्देश्य लोककल्याण हो । उसने प्राचीनतम काल से निरन्तर शांति का मार्ग अपनाया है और मानवता की सेवा में अपने आपको लगाया है। प्राचीन काल में अनेक ऋषि, महर्षि, मध्यकाल में अनेक सन्त व फकीर तथा आधुनिक काल में महात्मा गाँधी जो मार्ग दिखा गये हैं, भारत ने उसी पथ पर चलने का निश्चय किया है। अतः संसार में जहाँ भी शोषण, साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद के अवशेष हैं उनका विरोध एवं पराधीन देशों की मुक्ति में सहायता भारत सरकार की वैदेशिक नीति का ध्येय है। संसार के जो भी देश या नेता इस मार्ग अथवा ध्येय से सहमत हैं और उससे सहयोग करना चाहते हैं, भारत उनसे सहयोग करने के लिए तत्पर है ।

पं० जवाहरलाल नेहरू

भारत सरकार की इस नीति का यह फल हुआ है कि बड़े देश भी अपने गतिरोधों को दूर करने के लिए भारत की ओर निहारने लगे हैं। इस प्रकार के अवसर विश्व के वर्तमान इतिहास में कई बार आये हैं। इन्हीं के परिणामस्वरूप भारतीय सरकार ने अपनी सेनायें कोरिया को भेजीं और फिर वे हिन्दचीन तथा मिस्र को गयीं । वे उन देशों में लड़ने नहीं वरन् वहाँ जन सेवा एवं शान्ति की स्थापना के लिए गयी थीं ।

भारत की वैदेशिक नीति ने यूरोप के कुछ देशों विशेषकर रूस को शान्ति क्षेत्र में आकर्षित किया है। एशिया,अफ्रीका और मध्यपूर्व के अनेक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

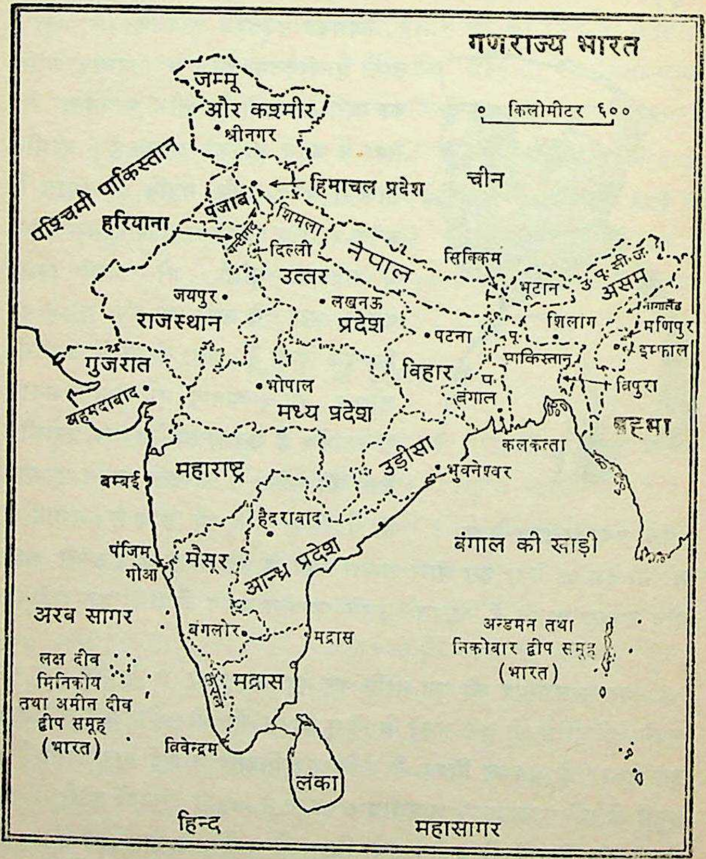

वर्तमान भारत

External boundary of India on the map agrees with the Master copy certified by the Survey of India.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देश भारतीय नीति के अनुगामी बन गये हैं । पंचशील और सह-अस्तित्व की बात संसार में सबसे अधिक प्रभाव रखती है । अब संयुक्त राष्ट्र-संघ तक उससे प्रभावित है ।

१५ अगस्त, १९४७ ई० को पांडिचेरी में कर्मयोगी अरविन्द ने नये भारत के जिस स्वरूप का दर्शन किया था, सौभाग्य से वह अब साकार हो रहा है । उनके शब्द ये थे कि "मेरी सदा से यह धारणा रही है और मैंने सदा यह कहा भी है कि भारत अब उठ रहा है, अपने भौतिक हितों, विस्तार, महानता, शक्ति एवं समृद्धि की प्राप्ति के लिए ही नहीं—यद्यपि इनकी ओर से उदासीन भी नहीं रहना चाहिए—और न ही दूसरों की भाँति अन्य राष्ट्रों के ऊपर आधिपत्य जमाने के लिए, वरन् समस्त मानव जाति का सहायक और नेता बनकर भगवान और संसार के हित जीवन-यापन करने के लिए उठ रहा है ।"

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—१५ अगस्त,सन '४७ को प्राप्त भारत की स्वतन्त्रता विश्व के इतिहास में क्या महत्व रखती है ?

२—सन '४७ में भारतीय नेताओं के सामने कौन-कौन सी कठिनाइयां थीं ? उन्हें कैसे दूर किया गया ?

३—भारत में स्वतन्त्र होने के बाद देश की उन्नति के लिए क्या-क्या काम हुए हैं ?

४—दूसरे महान विश्वयुद्ध का एशिया पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

५—प्राचीन काल से ही भारत का ध्येय क्या रहा है ?

६—विश्व राजनीति में भारत गुटबन्दी में क्यों नहीं पड़ना चाहता ?

७—वर्णन करो कि संसार के भावी इतिहास में भारत का क्या महत्त्व होगा ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खण्ड २—नागरिकता

पहला अध्याय

भारत संघ के राज्य

पाठ १—संघ सरकार का संगठन-राष्ट्रपति

किसी देश की सरकार के तीन अंग होते हैं—

(१) विधान मण्डल,

(२) कार्य-पालिका और

(३) न्याय-पालिका ।

संघ की न्याय-पालिका का वर्णन तुम पिछली कक्षा में पढ़ चुके हो । इस अध्याय में संघ के विधान-मण्डल और संघ की कार्य-पालिका का अध्ययन करोगे ।

तुमने पिछली कक्षा में उत्तर–प्रदेश के विधान-मण्डल के विषय में पढ़ा था । तुम जानते हो कि विधान-मण्डल का काम विधि या कानून बनाना है, और इन विधियों के अनुसार शासन का प्रबन्ध करना **कार्य-पालिका** का काम है ।

राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और मन्त्रि-परिषद कार्य-पालिका के अंग हैं । हमारे नये संविधान ने भारत में गणराज्य की स्थापना की है । गणराज्य का प्रधान राष्ट्रपति होता है, अतः नये संविधान में एक राष्ट्रपति बनाने की व्यवस्था है । वही राष्ट्र का प्रधान और सुरक्षा सेना का सबसे ऊँचा अधिकारी है । उसी के नाम से सारे देश का शासन चलता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राष्ट्रपति

पद के लिए योग्यता—राष्ट्रपति में नीचे लिखी योग्यतायें होनी चाहिए—

(क) वह भारत का नागरिक हो ।

(ख) उसकी आयु ३५ वर्षों से कम न हो ।

(ग) उसमें लोक सभा का सदस्य बनने की क्षमता हो ।

(घ) राष्ट्रपति चुने जाने पर वह संसद अर्थात संघ के विधान-मण्डल या राज्यों के विधान-मण्डल का सदस्य नहीं रह सकता ।

कार्य-काल और वेतन—राष्ट्रपति का चुनाव ५ वर्षों के लिए होता है । १०,००० रु० प्रति मास उसको वेतन मिलता है । पद से अवकाश ग्रहण करने पर भी उसे १००० रु० प्रति मास पेंशन मिलती रहेगी । उसके निवास के लिए दिल्ली में विशाल राष्ट्रपति भवन है ।

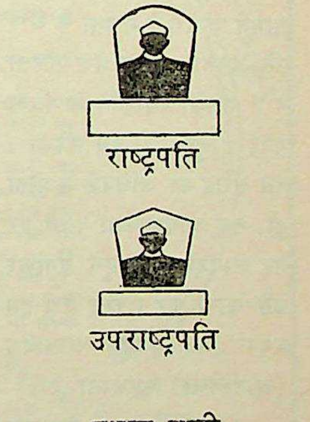

संघ कार्यपालिका

हमारे वर्तमान राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेन हैं जो नयी दिल्ली में स्थित राष्ट्रपति भवन में रहते हैं ।

निर्वाचन—संसद के दोनों सदन लोक सभा और राज्य सभा के तथा **राज्यों की केवल विधान सभाओं के** सदस्य मिलकर राष्ट्रपति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को चुनने के लिए निर्वाचक-मण्डल का काम देते हैं। यही निर्वाचक मण्डल राष्ट्रपति का चुनाव करता है।

अधिकार और कार्य—राष्ट्र के प्रधान होने के कारण राष्ट्रपति को बहुत से अधिकार हैं—

(१) संसद को वही बुलाता और विसर्जित करता है। उसके सामने भाषण दे सकता है और उसे अपना संदेश भेज सकता है। उसकी स्वीकृति के बिना कोई कानून नहीं बन सकता। जब संसद का अधिवेशन न होता हो, तब आवश्यकता पड़ने पर वह आवश्यक कानून बनाकर उसे जारी कर सकता है। इस प्रकार का कानून अध्यादेश (आर्डीनेन्स) कहलाता है।

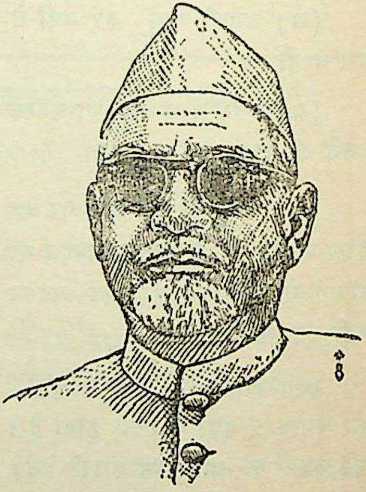

भारत के राष्ट्रपति
डा० जाकिर हुसेन

(२) सरकार के सब महत्वपूर्ण निर्णय राष्ट्रपति के नाम से होते हैं। वही विदेशों में राजदूत भेजता है। विदेशी राजदूत भी उसी के पास आते हैं। वह प्रधान-मन्त्री, संघ की मन्त्रिपरिषद उच्चतम न्यायालय व उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, राज्यपाल तथा अन्य अनेक ऊँचे पदाधिकारियों को नियुक्त करता है। देश की शान्ति को संकट में देखकर वह राज्य सरकारों के कोई भी अधिकार संघ-सरकार को दे सकता है।

(३) न्यायालयों से दण्डित अपराधियों को क्षमा कर सकता है अथवा उनके दण्ड को घटा सकता है।

इस विषय में यह बात याद रखने की है कि राष्ट्रपति अपने अधि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

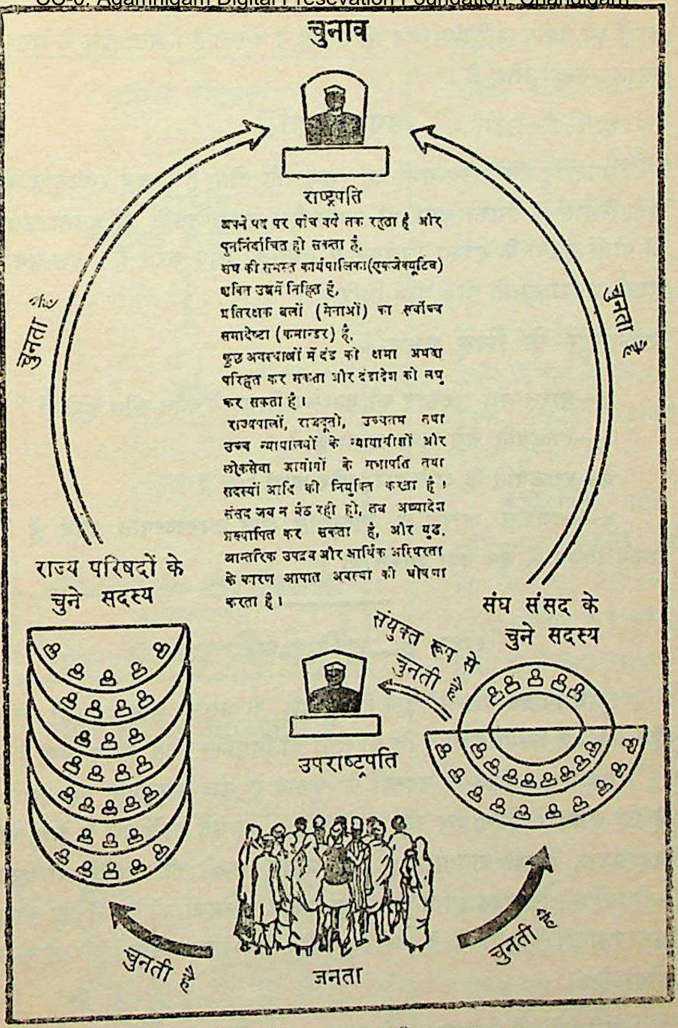

राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति का चुनाव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कारों का प्रयोग मन्त्रि-परिषद की सलाह से करता है। अतः देश के असली शासक मन्त्री लोग हैं।

उपराष्ट्रपति

उपराष्ट्रपति राज्य-सभा का सभापति होता है। वह राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में उसका काम भी करता है। उपराष्ट्रपति का चुनाव संसद के दोनों सदनों के सदस्य मिलकर ५ वर्षों के लिए करते हैं। इस समय हमारे उपराष्ट्रपति वी० वी० गिरि हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—भारत-संघ सरकार की कार्य-पालिका में कौन-कौन होते हैं ?

२—राष्ट्रपति कैसे चुना जाता है ?

३—राष्ट्रपति के अधिकार और कार्य क्या हैं ?

४—आजकल भारत के राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति कौन हैं ? उनके विषय में तुम क्या जानते हो ?

पाठ २—मन्त्रि-परिषद

तुमने पिछले पाठ में पढ़ा है कि देश के असली शासक मन्त्री लोग हैं। अब यह देखना चाहिए कि मन्त्रियों की नियुक्ति किस प्रकार होती है।

नियुक्ति—संसद के सदस्यों के चुनाव के बाद राष्ट्रपति यह देखता है कि संसद में किस दल का बहुमत है। बहुमत वाले दल के नेता को वह **प्रधान मन्त्री** बनाता है। फिर प्रधान मन्त्री की सम्मति से अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति होती है। इस प्रकार मन्त्रियों को चुनने का काम प्रधान मन्त्री के हाथ में है और उनकी नियुक्ति राष्ट्रपति की ओर से होती है।

मन्त्रियों को नियुक्त करते समय राष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री इस बात को अच्छी तरह से देख लेते हैं कि उन पर संसद के सदस्यों का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

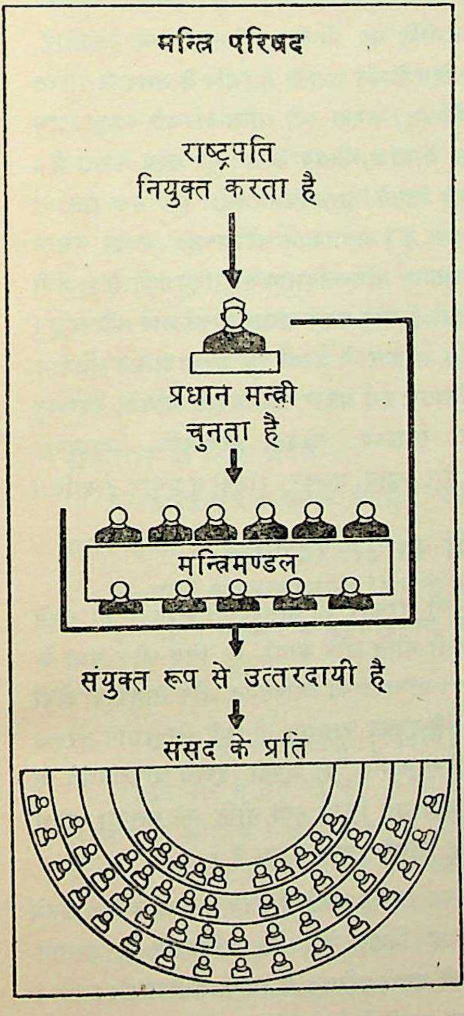

मन्त्रि-परिषद

विश्वास हो । संघ के प्रधान मन्त्री और सब मन्त्रियों को मिला कर **मन्त्रि–परिषद** (अंग्रेजी भाषा में कैबिनेट) नाम दिया गया है ।

वेतन—हर मन्त्री को सरकारी खजाने से वेतन मिलता है जिसकी रकम संसद नियत करती है ।

कार्य और अधिकार—तुम जानते हो कि असली राजसत्ता मन्त्रि-परिषद के हाथों में होती है । कार्य-पालिका का प्रधान राष्ट्रपति केवल नाम के लिए शासक माना जाता है । उसे सारा काम मन्त्रि-परिषद की सम्मति से करना पड़ता है ।

मन्त्रि-परिषद के सब सदस्य मिलजुल कर काम करते हैं । सरकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की नीति और कार्य को निश्चित करने के लिए पहले मन्त्रि-परिषद की बैठक होती है। उसमें जो नीति या नियम स्वीकार किये जाते हैं, मन्त्रि-परिषद उनकी संसद से स्वीकृति कराती है। यदि वे संसद से पारित हो जाते हैं, तो उन्हें कार्यान्वित करना भी मन्त्रि-परिषद का ही काम होता है। हरएक मन्त्री उस नीति या नियम के अनुसार कार्य करता है।

संसद में शासन सम्बधी जितने प्रश्न किये जाते हैं, उन सब का उत्तर मन्त्रियों को देना पड़ता है। अतः काम को अच्छी प्रकार चलाने के लिए हरएक मन्त्री को एक या अधिक विभाग सौंप दिये जाते हैं। मंत्री अपने विभाग का प्रधान होता है और उसके संचालन का भार उठाता है।

विभाग—इस समय संघ सरकार में कार्यों के २५ से अधिक विभाग हैं। उनमें से कुछ मुख्य विभाग इस प्रकार हैं—विदेशी मामले, स्वराष्ट्र विभाग, रक्षा, अर्थ, शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, और कृषि, यातायात, आयोजन, उत्पादन, उद्योग, रेल, न्याय, मजदूर, रेडियो व प्रचार इत्यादि।

मन्त्रियों का उत्तरदायित्व

संसद के आधार पर बनी सरकार को उत्तरदायी सरकार भी कहते हैं क्योंकि मन्त्रि-परिषद अपनी नीति और कार्यों के लिए लोक-सभा के सामने उत्तरदायी होती है। मन्त्रियों की व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों प्रकार की जिम्मेदारी होती है इसका फल यह होता है कि यद्यपि हरएक मन्त्री अपने विभाग के दैनिक कामों को अपनी इच्छा और निर्णय के अनुसार चलाता है, परन्तु यदि उसे किसी नयी नीति को चलाना होता है तो उसे मन्त्रि - परिषद के सामने रखना पड़ता है।

मन्त्री तभी तक अपने पद पर रह सकते हैं, जब तक लोक-सभा उनमें विश्वास रखती है। यदि वह किसी के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पारित कर दे, तो मन्त्री को मन्त्री-परिषद से त्यागपत्र देना पड़ता है। सभी मन्त्रियों को प्रधान मन्त्री के नेतृत्व में काम करना पड़ता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यदि किसी मंत्री का प्रधान मंत्री से मतभेद हो जाता है तो उसे प्रधान मंत्री की बात माननी पड़ती है, नहीं तो त्याग-पत्र देना होता है ।

इस समय श्रीमती इन्दिरा गांधी संघ सरकार के प्रधान मंत्री हैं। श्री वाई० वी० चौहाण संघ सरकार के स्वराष्ट्र मन्त्री हैं। रेल मन्त्री डा० सी० एम० पुनाचा, वित्त एवं उपमन्त्री श्री मोरारजी देशाई, शिक्षा मन्त्री डा० श्री त्रिगुण सेन तथा सूचना एवं प्रसार मंत्री श्री के०के शाह हैं।

सचिवालय—मंत्रियों का दफ्तर दिल्ली में है जो सचिवालय कहलाता है। हरएक विभाग के मंत्री के अधीन बहुत से सरकारी कर्मचारी होते हैं। दिल्ली का सचिवालय (सेक्रेटेरियट) बहुत बड़ा है। उसमें १० हजार से अधिक कर्मचारी काम करते हैं । सारे देश की सरकार के कामों का नियंत्रण वहीं से होता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—भारत संघ के प्रधान मन्त्री और मन्त्रियों की नियुक्ति किस प्रकार होती है ?

२—मन्त्री क्या काम करते हैं ? संघ के कुछ मन्त्रियों के नाम बताओ।

३—भारत सरकार के मुख्य विभाग कौन-कौन से हैं ?

पाठ ३—संसद (पार्लमेंट)

पिछले पाठ में तुम पढ़ चुके हो कि कानूनों को बनाने के लिए संघ सरकार का भी एक विधान-मण्डल है जिसे संसद या पार्लमेंट कहते हैं। दिल्ली में विशाल संसद-भवन है जहाँ इनके अधिवेशन होते हैं। संसद के दो सदन हैं जो लोक-सभा और राज्य-सभा कहलाते हैं। इनका संगठन और कार्य हमारे उत्तर प्रदेश की विधान-सभा और विधान-परिषद से मिलता है। लोक-सभा और राज्य-सभा इन दोनों सदनों से पारित कोई भी विधेयक (बिल) राष्ट्रपति की अनुमति मिलने पर अधिनियम (एक्ट) बन जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोक-सभा की रचना—लोक-सभा में लगभग ५०० सदस्य चुने जा सकते हैं। सदस्य बनने के लिए वही व्यक्ति खड़ा हो सकता है जो भारत का नागरिक हो और आयु में २५ वर्ष का या अधिक हो। पागल, दिवालिये या देशद्रोही को सदस्य बनने का अधिकार नहीं है। जो लोग सरकारी नौकरी करते हैं वे भी सदस्य नहीं हो सकते। संविधान में लिखा है कि ७ लाख जनसंख्या का कम से कम १ प्रतिनिधि संसद में अवश्य होगा।

लोक-सभा के सब सदस्य मिलकर अपने में से ही एक **अध्यक्ष** (स्पीकर) और एक **उपाध्यक्ष** (डिप्टी स्पीकर) चुन लेते हैं। अध्यक्ष सभा में नियन्त्रण रखता है।उसकी बात सब सदस्यों को माननी पड़ती है। वह किसी दल का पक्षपात नहीं करता। उसे वेतन मिलता है और उसका दफ्तर अलग होता है।

राज्य-सभा की रचना—राज्य-सभा में २५० सदस्य चुने जाते हैं। उनको जनता सीधे नहीं चुनती। कुछ थोड़े से सदस्य तो राष्ट्रपति के द्वारा नामजद होते हैं, बाकी राज्यों की विधान-सभाओं द्वारा चुने जाते हैं। भारत का उपराष्ट्रपति राज्य-सभा का **सभापति** होता है। राज्य-सभा अपने सदस्यों में से एक को राज्य-सभा का **उपसभापति** भी चुनती है।

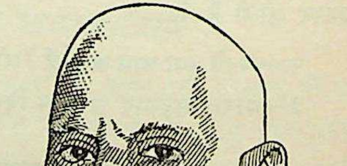

भारत के उपराष्ट्रपति
वी० वी० गिरि

राज्य-सभा कभी भंग नहीं होती। प्रति दो वर्षों बाद उसके एक तिहाई सदस्य अलग हो जाते हैं और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनकी जगह नये सदस्य चुन लिए जाते हैं। राज्य-सभा का सदस्य होने के लिए भारतीय नागरिक और कम से कम ३० वर्षों की आयु होनी चाहिए।

संसद के कर्तव्य और अधिकार

संसद का काम संघ सरकार के अधिनियम या कानून बनाना. मन्त्रियों के कामों की देखरेख रखना, शासन के विषय में मन्त्रियों से प्रश्न पूछना और आवश्यकता पड़ने पर उनके कामों की आलोचना करना है। इस प्रकार केन्द्र की सरकार में संसद के वही काम हैं जो राज्य-सरकारों में विधान-मण्डल के हैं। वार्षिक बजट या वित्त-विल राज्यों के विधान-मण्डल की विधान-सभाओं की भाँति संव-संसद की लोक-सभा में पेश किया जाता है। उसके पास करने की रीति भी लगभग समान है।

विधि निर्माण करने की रीति

वित्त विधेयक (विल) राष्ट्रपति की सिफारिश पर ही मन्त्री पेश कर सकते हैं, परन्तु अन्य सभी प्रकार के विधेयक कोई भी सदस्य सीधे पेश कर सकता है।

विधेयक पेश करना—सदस्य को विधेयक पेश करने की सूचना १ महीना पहले देनी चाहिए। विधेयक सरकारी गजट में छपता है और उस पर विचार करने के लिए तारीख निश्चित की जाती है।

पहला वाचन—निश्चित समय पर विधेयक पेश करने वाला सदस्य सदन से प्रार्थना करता है कि विधेयक का पहला वाचन किया जाय अर्थात पढ़कर सुनाया जाय। वाचन के लिए सदन से वह इन तीन बातों में से एक बात की प्रार्थना करता है :—

(क) विधेयक का दूसरा वाचन किया जाय या (ख) विधेयक एक छोटी समिति को विचारार्थ भेज दिया जाय अथवा (ग) विधेयक पर लोकमत इकट्ठा किया जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

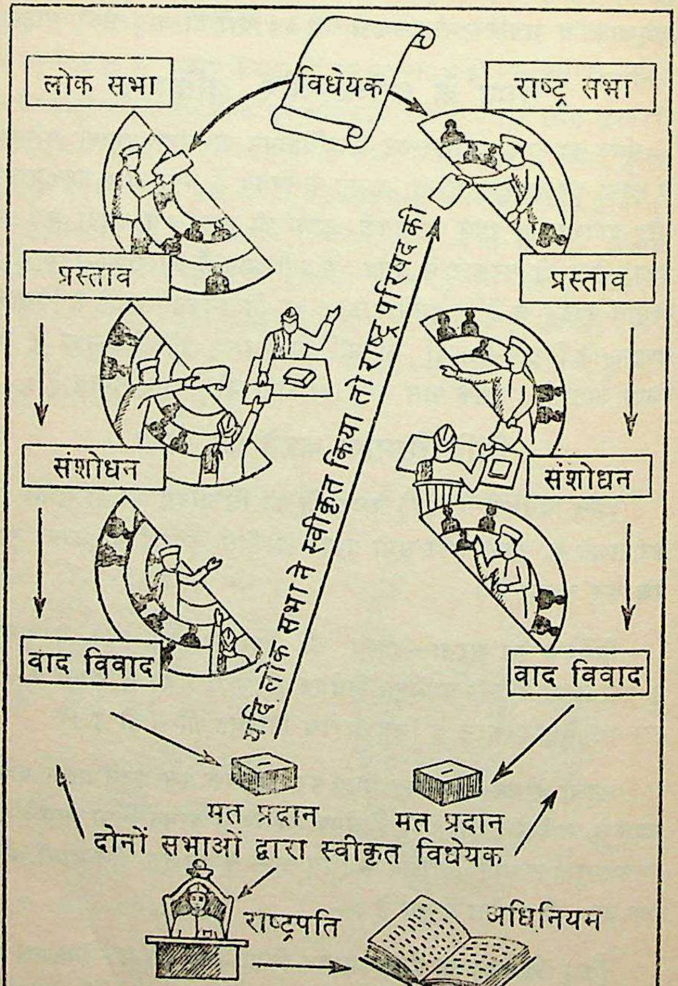

विधेयक से अधिनियम कैसे बनता है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा वाचन—दूसरे वाचन के समय विधेयक की हरएक धारा हर विस्तार के साथ विचार किया जाता है। उसमें संशोधन पेश किये जाते हैं। विरोधी और समर्थक वादविवाद में अपने-अपने तर्क देते हैं; फिर उस पर मत लिये जाते हैं।

तीसरा वाचन—इस वाचन में विधेयक में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता। केवल मौखिक संशोधन किये जा सकते हैं तथा विधेयक को पारित करने या पारित न करने के विषय में साधारण विवाद किया जा सकता है।

इस प्रकार तीसरे वाचन के बाद पारित विधेयक दूसरे सदन को जाता है। वहाँ ऊपर लिखी क्रिया दोहरायी जाती है। दोनों सदनों से स्वीकृत विधेयक राष्ट्रपति की अनुमति के लिए उसके पास जाता है। उसकी अनुमति मिल जाने पर वह अधिनियम (कानून) बन जाता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—संसद से क्या अभिप्राय है ?

२—लोकसभा की रचना किस प्रकार होती है ?

३—राज्य-सभा की रचना के विषय में क्या जानते हो ?

क्रियात्मक अभ्यास—

अपनी स्कूल-सभा को संसद का रूप देकर विधेयक से अधिनियम बनाने की प्रक्रिया को अमल में लाओ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा अध्याय

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति-संगठन

पाठ १—संयुक्त राष्ट्र-संघ की स्थापना

तुमने प्रायः समाचार-पत्रों में 'संयुक्त राष्ट्र-संघ' का नाम पढ़ा होगा। अंग्रेजी भाषा में उसे 'यूनाइटेड नेशन्स आर्गेनाइजेशन' (यू०एन० ओ०) के नाम से पुकारते हैं। इसका उद्देश्य संसार में शान्ति स्थापित करना है।

पिछले विश्व युद्ध के भीषण संहार से जब संसार के सारे देश काँप उठे थे, तब संयुक्त-राष्ट्र-संघ का जन्म हुआ। विश्व की जनसंख्या के अधिकांश अर्थात ५० राष्ट्रों के करीब पौने दो अरब निवासियों के प्रतिनिधियों ने २६ जून, १९४५ ई० को अमेरिका के सैनफ्रांसिस्को नगर में जमा होकर यह घोषणा की कि हम लोग संसार को युद्ध के संकट से बचाने के लिए इस बात की दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं कि हम इस बात का प्रयत्न करेंगे कि **संसार में न्याय और कानून का राज्य कायम** हो और अंतर्राष्ट्रीय नियमों को भंग न किया जाय। उसी समय उन राष्ट्रों ने **एक घोषणा-पत्र** (चार्टर) पर हस्ताक्षर किये जिसके अनुसार संयुक्त राष्ट्रों (यूनाइटेड नेशंस) के कामों का संचालन होता है। उस चार्टर की संक्षिप्त भूमिका का अध्ययन करने से अन्तर्राष्ट्रीय शांति की स्थापना के प्रयत्नों में संयुक्त राष्ट्र-संघ के महत्व का पता लगता है। उसमें कहा गया है कि—

हम संयुक्त राष्ट्रों के लोगों ने निश्चय किया है—

कि आने वाली सन्ततियों को युद्ध की आवृत्ति से बचायेंगे जिसने हमारे जीवन-काल में दो बार मानव-जाति पर असीम कष्ट ढाये हैं और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मूल मानव-अधिकारों में आस्था,व्यक्ति के व्यक्तित्व का आदरयुक्त मूल्य, स्त्री- पुरुष एवं छोटी-बड़ी जातियों के समानाधिकार को दोहरायेंगे और स्वतंत्रता के विस्तृत क्षेत्र में सामाजिक उत्थान एवं जीवन-स्तर को उत्साहित करेंगे।

और इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए—

भले पड़ोसियों की भाँति एक दूसरे के प्रति सहनशील बनने एवं शान्ति से रहने की भावना अपनायेंगे और अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को स्थिर करने के लिए अपनी शक्ति को संगठित करेंगे तथा नियमों की स्वीकृति एवं विधानों की स्थापना द्वारा विश्वास दिलायेंगे कि साझे हित के अतिरिक्त शस्त्र-बल का प्रयोग नहीं करेंगे और सबकी आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्था स्थापित करेंगे।

अतः हमारी अपनी-अपनी सरकारों ने सैनफ्रांसिस्को नगर में एकत्र हुए अपने प्रतिनिधियों द्वारा संयुक्त राष्ट्रों के वर्तमान घोषणा-पत्र (चार्टर) पर स्वीकृति प्रदान की है और इसके द्वारा **संयुक्त राष्ट्र संघ** के नाम से अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की स्थापना करते हैं।

२६ जून, १९४५ ई० के पश्चात संसार के कुछ अन्य देशों ने भी चार्टर पर हस्ताक्षर कर दिये और अब संयुक्त राष्ट्र-संघ की सदस्य-संख्या दो गुनी से भी अधिक ११८ हो गयी है।

उद्देश्य—संयुक्त राष्ट्र-संघ के उद्देश्य ये हैं—

(१) **अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा**—मिलकर अशान्ति के कारणों को दूर करना, एक देश का दूसरे देश पर आक्रमण न होने देना और परस्पर झगड़ों को शान्ति से तय कर लेना।

(२) **राष्ट्रों में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध**—यह समझना कि सभी राष्ट्रों की जनता के अधिकार समान हैं और सब अपने आन्तरिक मामलों में स्वतन्त्र हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग—आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और लोक-कल्याण की समस्याओं को सुलझाने में सहायता देना तथा जाति, भाषा, धर्म अथवा स्त्री-पुरुष के भेद-भाव भुलाकर मानव-अधिकारों के लिए सम्मान उत्पन्न करना।

(४) इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए राष्ट्रों के कामों में सामंजस्य कायम करने के लिए एक केन्द्र रूप से काम करना।

सदस्यता—वे सभी शान्तिप्रिय देश संयुक्त-राष्ट्र-संघ के सदस्य हो सकते हैं जो चार्टर द्वारा निर्धारित कर्तव्यों को स्वीकार करते हैं और जिनको संयुक्त राष्ट्र-संघ इन कर्तव्यों के पालन के उपयुक्त समझता है। इस समय संसार के प्रायः सभी राष्ट्र उसके सदस्य हैं, परन्तु अमेरिका के विरोध के कारण एशिया महाद्वीप का प्रमुख राष्ट्र चीन अपनी प्रबल इच्छा प्रकट करते हुए भी अभी तक उसका सदस्य नहीं बन सका है।

सिद्धान्त—संयुक्त राष्ट्र-संघ की नींव इन सिद्धान्तों पर रखी गयी है-

- सब राष्ट्र-सदस्य सार्वभौम शक्ति से संयुक्त और समान हैं।
- सब राष्ट्र चार्टर के अनुसार अपने उद्देश्यों एवं कर्तव्यों का सद्भावना से पालन करने के लिए वचन-बद्ध हैं।
- सब राष्ट्र अपने झगड़ों का शान्तिमय तरीके से इस प्रकार फैसला करने के लिए वचन-बद्ध हैं, जिससे किसी प्रकार शान्ति, सुरक्षा और न्याय के भंग होने का भय न हो।
- अपने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध में कोई राष्ट्र-सदस्य किसी प्रदेश या किसी देश की राजनीतिक स्वतन्त्रता के विरुद्ध न तो शक्ति का प्रयोग करेगा और न शक्ति-प्रयोग की धमकी देगा और न ऐसा आचरण करेगा जो संयुक्त राष्ट्र-संघ के उद्देश्यों के विपरीत हो।
- जब चार्टर के अनुसार राष्ट्र-संघ का कोई सदस्य कारवाई करेगा, तब सब राष्ट्र-सदस्य उसे सब प्रकार की सहायता देने के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वचन-बद्ध हैं तथा वे किसी ऐसे देश की सहायता नहीं देंगे जिसके विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र-संघ शान्ति एवं सुरक्षा के हित में कारवाई कर रहा हो।

● शान्ति और सुरक्षा बनाये रखने के लिए जहाँ तक आवश्यक होगा संयुक्त राष्ट्र-संघ यह व्यवस्था करेगा कि जो देश सदस्य नहीं हैं, वे भी चार्टर के सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करें।

● शान्ति की रक्षा के लिए जब तक आवश्यक होगा संयुक्त राष्ट्र-संघ उन मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा जो किसी देश के आन्तरिक कार्य-क्षेत्र में आते हैं।

संयुक्त राष्ट्र-संघ का प्रधान कार्यालय अमेरिका में न्यूयार्क नाम के नगर में है और उसके भवन पर सारे राष्ट्र-सदस्यों के झण्डे फहराते हैं।

संयुक्त राष्ट्र-संघ का सबसे बड़ा वैतनिक कर्मचारी महामन्त्री (सेक्रेटरी-जनरल) कहलाता है। इस समय बरमा के ऊथांट संघ के महामन्त्री हैं। उसकी नियुक्ति संयुक्त राष्ट्र-संघ की महासभा के हाथों में है। महामन्त्री के अधीन अनेक संचालक और सैकड़ों कर्मचारी काम करते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—संयुक्त-राष्ट्र-संघ क्या है? उसे कब और किन लोगों ने स्थापित किया?

२—संयुक्त-राष्ट्र संघ के क्या उद्देश्य हैं?

३—संयुक्त-राष्ट्र-संघ की नींव किन सिद्धान्तों पर रखी गयी है?

४—संयुक्त-राष्ट्र-संघ का प्रधान कार्यालय कहाँ है और आजकल उसके महामन्त्री कौन हैं?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—संयुक्त राष्ट्र-संघ के प्रमुख अंग (१)

घोषणा-पत्र (चार्टर) ने संयुक्त राष्ट्र-संघ के छह प्रमुख अंग बनाये हैं :–

१. महासभा (जनरल असेम्बली)

२. सुरक्षा-परिषद (सिक्यूरिटी कौंसिल)

३. आर्थिक और सामाजिक परिषद (सोशल एण्ड इकनामिक कौंसिल)

४. संरक्षण-परिषद (ट्रस्टीशिप कौंसिल)

५. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय (इन्टरनेशनल कोर्ट आफ जस्टिस)

६. सचिवालय (सेक्रेटेरियट)

महासभा (जनरल असेम्बली)

संयुक्त राष्ट्र-संघ की सबसे बड़ी सभा का नाम **जनरल असेम्बली** अर्थात **महासभा** है। संसार के इतिहास में अब तक अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं बनी हैं, परन्तु उन संस्थाओं में यह संस्था मानव-संसद (पार्लमिंट आफ मेन) कहलाने योग्य है। इसका अधिवेशन वर्ष में एक बार होता है और चार्टर में वर्णित सभी विषयों पर विचार करने का इसको अधिकार है। यह संस्था संयुक्त राष्ट्र के दूसरे अंगों के अधिकारों और कर्तव्यों के विषय में भी विचार करती है। राजनीतिक,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयों पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के विचार से महासभा स्वयं काम आरम्भ कर सकती है या संयुक्त राष्ट्र-संघ के दूसरे अंगों एवं सदस्य-राष्ट्रों के पास अपनी सिफारिशें भेज सकती है ।

महासभा में सभी राष्ट्र-सदस्यों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं और प्रत्येक राष्ट्र को **एक मत** देने का अधिकार है । परन्तु हर एक राष्ट्र—सदस्य उसके अधिवेशनों में अपने ५ प्रतिनिधियों तक को भेज सकता है । मामूली विषयों में सभा का निर्णय उपस्थित सदस्यों के बहुमत से होता है, परन्तु महत्वपूर्ण विषयों के निर्णय के लिए दो-तिहाई मतों की आवश्यकता है । ये निर्णय संयुक्त राष्ट्र-संघ के दूसरे अंगों एवं सदस्य राष्ट्रों के पास सिफारिशों के रूप में भेजे जाते हैं ।

सुरक्षा परिषद के विचाराधीन विषय या विवाद पर महासभा बहस तो कर सकती है; परन्तु अपना मत उस समय तक नहीं प्रकट कर सकती, जब तक कि उसकी माँग परिषद न करे । दूसरे अंगों के कार्यों और कर्तव्यों पर विचार करने का अधिकार प्राप्त होने के कारण महासभा का संयुक्त राष्ट्र-संघ में महत्वपूर्ण स्थान है । सुरक्षा-परिषद एवं संयुक्त राष्ट्र-संघ के अन्य सभी अंग अपनी वार्षिक और विशेष रिपोर्ट महासभा को देते हैं । सभा इन रिपोर्टों पर विचार करती है ।

सुरक्षा परिषद की सिफारिश पर महासभा नये सदस्यों को ग्रहण करती है, तथा महामन्त्री (सेक्रेटरी-जनरल) को नियुक्त करती है, जो सचिवालय (सेक्रेटेरियट) का प्रबन्ध करता है ।

महासभा के **प्रधान** का **चुनाव** हर वर्ष अधिवेशन के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आरम्भ में किया जाता है। १९५४ ई० में भारतीय महिला-रत्न श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित संयुक्त राष्ट्र-संघ की प्रधान चुनी गयी थीं।

श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित

महासभा ही राष्ट्र-संघ का बजट स्वीकार करती है और व्यय को सदस्य-राष्ट्रों में बाँटती है। इस प्रकार संयुक्त राष्ट्र-संघ का आर्थिक नियंत्रण महासभा के हाथों में है।

संयुक्त राष्ट्र-संघ का व्यय सदस्य राष्ट्रों के चन्दे से चलता है।

सुरक्षा-परिषद (सिक्यूरिटी कौंसिल)

सुरक्षा-परिषद एक प्रकार से संयुक्त राष्ट्र-संघ की कार्यकारिणी समिति है। सदस्य-राष्ट्रों ने शांति एवं सुरक्षा की व्यवस्था का भार इस परिषद के ऊपर डाला है। युद्धों को रोकने, राष्ट्रों के आपस के कलहों को दूर करने एवं सुरक्षा कायम करने का काम सुरक्षा-परिषद करती है। अपने कर्तव्य-पालन में सुरक्षा-परिषद सदस्य-राष्ट्रों की ओर से कार्य करती है। उन्होंने इसके निर्णय को मानना और उसको पालन करना स्वीकार कर लिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुरक्षा-परिषद में अब १५ सदस्य होते हैं, जिनमें ५ सदस्य स्थायी हैं और ६ सस्दयों का चुनाव महासभा करती है। स्थायी सदस्य चीन (फारमोसा वाला), फ्रांस, रूस, यूनाइटेड किंगडम और यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका हैं। अस्थायी सदस्यों का दो-दो वर्षों के लिए निर्वाचन होता रहता है। हमारा राष्ट्र भारत भी सुरक्षा-परिषद का सदस्य रह चुका है। सन् १९६८ में सुरक्षा-परिषद के १० अस्थायी सदस्य अल्जीरिया, भारत, ब्राजील, कनाडा, डेनमार्क, इथिओपिया, हंगेरी, पाकिस्तान, पाराग्वे और सेनेगाल हैं।

सुरक्षा-परिषद के हरएक सदस्य का एक मत होता है। कार्यक्रम के बारे में विषयों का निर्णय १५ सदस्यों में से ९ सदस्यों के बहुमत से हो सकता है। मूल विषयों के बारे में भी निर्णय के लिए ९ मतों की आवश्यकता होती है; इनमें से ५ स्थायी सदस्यों की सहमति जरूरी है।

संसार में शांति की व्यवस्था के लिए लगातार सावधानी आवश्यक है। हो सकता है कि सुरक्षा-परिषद को कभी तुरन्त ही कोई निर्णय करना पड़े, अतः सुरक्षा-परिषद का अधिवेशन स्थायी होता है और उसकी बैठक पखवाड़े में कम से कम एक बार अवश्य होती है। यदि परिषद चाहे तो अपनी बैठकें मुख्य कार्यालय के अलावा अन्य स्थानों पर भी कर सकती है।

सुरक्षा- परिषद किसी भी ऐसे विवाद या विषम परिस्थिति की जांच कर सकती है, जिससे दो या अधिक देशों के बीच परस्पर संघर्ष बढ़ने की संभावना हो। इस प्रकार के विवाद या परिस्थिति की सूचना परिषद को उसके सदस्य, सदस्य राष्ट्र महासभा या महा-मन्त्री दे सकते हैं।

सुरक्षा-परिषद शान्ति भंग होने पर अथवा शान्ति भंग होने की आशंका के अवसर पर सुरक्षा और शांति की पुनः स्थापना के लिए जरूरी कारवाई कर सकती है। इसके लिए यातायात, आर्थिक और कूटनीतिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संबन्ध तोड़ा जा सकता है अथवा आवश्यकतानुसार वायु, जल एवं स्थल सेनाओं का प्रयोग भी किया जा सकता है। कोरिया या कांगो में संयुक्त राष्ट्र-संघ ने इसलिए सैनिक कारवाई की।

सुरक्षा-परिषद के अधीन एक सैन्य दल समिति (मिलिटरी स्टाफ कमेटी) है, जिसमें पाँचो स्थायी सदस्यों के चीफ आफ स्टाफ या उनके प्रतिनिधि रहते हैं। वह परिषद को सैनिक विषयों के सम्बन्ध में परामर्श देती है।

महासभा ने जनवरी, १९४६ ई० में जो अणु-शक्ति आयोग (एटामिक एनर्जी कमीशन) स्थापित किया था, वह सुरक्षा परिषद के निर्देशों के अनुसार काम करता है। फरवरी, १९४७ ई० में सुरक्षा परिषद ने शस्त्रीकरण (कनवेंशनल आर्मामेंट) के सम्बन्ध में भी एक कमीशन स्थापित किया था जो विभिन्न राष्ट्रों में शस्त्रों की वृद्धि की बाढ़ को रोकने के लिए प्रयत्नशील है। जनवरी, १९५२ ई० से एक निःशस्त्रीकरण आयोग (डिसआर्मामेंट कमीशन) भी परिषद के अधीन काम कर रहा है, भारत भी इस १८ राष्ट्रों के कमीशन का एक सदस्य है। १९५५ ई० में सबसे पहले भारत ने ही नूक्लीयर टेस्टों पर रोक लगाने का प्रशन महासभा में उठाया था।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—संयुक्त-राष्ट्र-संघ की महासभा के विषय में क्या जानते हो ?

२—सुरक्षा-परिषद क्या है ? उससे क्या लाभहैं ?

३—सुरक्षा-परिषद में कितने सदस्य हैं। उनका चुनाव कैसे होता है ?

४—अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति संगठन में सुरक्षा परिषद का क्या महत्व है ? आक्रमण करने वाले देश के विरुद्ध वह क्या-क्या कारवाई कर सकती है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३—संयुक्त राष्ट्र-संघ के प्रमुख अंग (२)

तुमने पिछले पाठ में संयुक्त राष्ट्र-संघ के दो अंगों—महासभा और सुरक्षा-परिषद का अध्ययन किया है। संसार को अधिक सुखी, समृद्ध एवं न्यायशील बनाने के लिए महासभा के अधीन एक आर्थिक और सामाजिक परिषद है।

आर्थिक और सामाजिक परिषद

(सोशल एण्ड इकनामिक कौंसिल)

आर्थिक और सामाजिक परिषद में अब २७ सदस्य होते हैं, जिनका निर्वाचन महासभा करती है इस परिषद का काम बहुत ही व्यापक और विशाल है जिसे पूरा करने के लिए अनेक संस्थायें और समितियां काम कर रही हैं। उनमें से मुख्य संस्थाओं का परिचय नीचे दिया जाता है—

यूनेस्को—(यूनाइटेड नेशन्स एजूकेशनल, साइंटिफिक एण्ड कल्चरल आरगेनाइजेशन)—इसके नाम से ही प्रकट है कि यह समिति राष्ट्रों के बीच शिक्षा, विज्ञान एवं संस्कृति सम्बन्धी मेलजोल पैदा करती है। यूनेस्को के संविधान की भूमिका में लिखा है कि चूंकि युद्ध पहले मनुष्यों के मस्तिष्क में आरम्भ होते हैं, इसलिए संसार के सभी व्यक्तियों के मस्तिष्क को शान्ति के लिए तैयार करना चाहिए। हमारे भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन इसके अध्यक्ष रह चुके हैं।

यूनेस्को ने दिल्ली में एक बड़ा भारी सार्वजनिक पुस्तकालय खोला है। यूनेस्को की ओर से विभिन्न राष्ट्रों के बीच अध्यापकों की अदला-बदली का उपयोगी कार्य हो रहा है। वह संसार के साहित्य के विशेष रत्नों को एक दूसरे देश में सुलभ करने के लिए उनका विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी करा रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संघ (आई० एल० ओ०)--विभिन्न देशों के मजदूरों, उद्योगपतियों और सरकारों के प्रतिनिधि मिलकर मजदूरों का हित साधन करते हैं। इस संघ ने मजदूरों के लिए ४८ घंटे काम करने का सप्ताह नियत किया है, जिसको सब उन्नतिशील देशों ने मान लिया है।

खाद्य और कृषि संघ—इस संघ की ओर से खेती की उन्नति और ग्रामीणों की दशा में सुधार करने का प्रयत्न किया जाता है।इसने दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में चावल की उपज बढ़ाने के विषय में कई अनुसन्धान केन्द्र (रिसर्च सेंटर) खोले हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय बैंक—इसका उद्देश्य राष्ट्रों के विकास में सहायता करना है। इसका सदस्य बनने के लिए राष्ट्रों को मूल पूंजी में हिस्से लेने पड़ते हैं। भारत इसका सदस्य है। उसे अन्तर्राष्ट्रीय बैंक से अपनी घाटी योजनाओं को पूरा करने और रेल के इंजन आदि मोल लेने के लिए भारी ऋण मिल चुके हैं।

विश्व स्वास्थ्य संघ (डब्लू० एच० ओ०)—इसका उद्देश्य मनुष्य के स्वास्थ्य को अच्छा बनाना और भयानक रोगों से बचाना है। इसकी ओर से हमारे देश में मलेरिया को रोकने के लिए सहायता मिली थी और डाक्टरों के दो समूहों ने क्षयरोग से बचाने के लिए बी० सी० जी के टीके लगाये थे। भारत सरकार की पूर्व स्वास्थ्य मन्त्राणी स्वर्गीय राजकुमारी अमृत कौर एक वर्ष स्वास्थ्य संघ की अध्यक्षा थीं।

संरक्षण-परिषद (ट्रस्टीशिप-कौंसिल)

संयुक्त राष्ट्र-संघ के घोषणा-पत्र (चार्टर) ने पराधीन देशों के सम्बन्ध में भी दो महत्वपूर्ण सिद्धान्तों की घोषणा की है। जो सदस्य-राष्ट्र इन देशों का शासन-प्रबन्ध करते हैं उन्होंने अपने शासित देशों के सम्बन्ध में इस प्रकार के कर्तव्य स्वीकार किये हैं जैसे उनकी राज-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नीतिक, आर्थिक एवं शिक्षा विषयक उन्नति करना, दुराचारिता को दूर करना, उनके साथ अच्छा व्यवहार करना, उनमें स्वायत्त शासन का विकास करना आदि।

इस घोषणा के अनुसार पराधीन देशों के शासक राष्ट्र-सदस्य प्रधान सचिव को इन देशों की स्थिति के बारे में रिपोर्ट देते हैं। यह रिपोर्ट महासभा एवं अन्य विभागों के सामने पेश की जाती है जिससे संसार को इन देशों की प्रगति के बारे में पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त होती रहेगी।

घोषणा-पत्र (चार्टर) ने इन देशों की निगरानी और प्रबन्ध के लिए **संरक्षण परिषद** बनायी है। संरक्षण परिषद अपना काम महासभा की अधीनता में करती है। वह उन रिपोर्टों पर विचार करती है जो शासन करने वाले राष्ट्र पेश करते हैं। यह परिषद संरक्षित देशों के बारे में प्रार्थना-पत्रों पर विचार करती है और समय समय पर उनके निरीक्षण का प्रबन्ध करती है।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय

संयुक्त राष्ट्र-संघ का प्रधान न्यायालय हालैंड के हेग नगर में स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय कहलाता है। इसमें १५ न्यायाधीश हैं जिनकी नियुक्ति साधारण सभा ९ वर्षों के लिए करती है। भारत के प्रसिद्ध विधि-विद्वान स्वर्गीय श्री बी० एन० राव भी इसके एक न्यायाधीश थे।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय का काम कानून द्वारा संचालित होता है जो संयुक्त राष्ट्र-संघ के घोषणा-पत्र का एक अंग है। संयुक्त राष्ट्र-संघ के प्रत्येक सदस्य की पहुँच इस न्यायालय तक है और वह वादी या प्रतिवादी के रूप में उसका निर्णय मानने के लिए वचन-बद्ध है।

कानूनी झगड़ों से फैसले के अलावा न्यायालय का काम उन कानूनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषयों के बारे में सलाह देना है जिनके सम्बन्ध में महासभा, सुरक्षा-परिषद अथवा अन्य अंग कानूनी मत जानना चाहें ।

संयुक्त राष्ट्र-संघ का दिन-प्रतिदिन का विशाल काम उसके छठे अंग सचिवालय के द्वारा संचालित होता है। यह आठ विभागों में बँटा है जो क्रमश: सुरक्षा-परिषद, आर्थिक, सामाजिक संरक्षण एवं अधीन देशों की जानकारी, कानून, सार्वजनिक जानकारी, सम्मेलन एवं सामान्य सेवाएँ तथा प्रबन्ध एवं वित्त विषयक कामों से सम्बन्ध रखते हैं।

सचिवालय के कर्तव्य पूर्णरूप से अन्तर्राष्ट्रीय हैं । सचिवालय का हरएक सदस्य चाहे वह किसी भी राष्ट्र का हो अन्तर्राष्ट्रीय कर्मचारी है । वह संसार की सेवा करता है और इस प्रकार अपने देश का भी सबसे अधिक हित साधन करता है ।

सचिवालय के वर्तमान महामन्त्री ने १९६१ ई० में तीन सहायक महामन्त्री भी नियुक्त किये हैं । उन सहायक महामन्त्रियों में एक भारत के श्री नरसिंगम हैं ।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—संयुक्त-राष्ट्र-संघ के छह विभागों के नाम बताओ । इनमें से किन-किन विभागों में भारत के नीचे लिखे नेता अध्यक्ष या सदस्य रह चुके हैं—

(क) श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित, (ख) डा० राधाकृष्णन, (ग) राजकुमारी अमृतकौर, (घ) श्री बी० एन० राव ।

२—यूनेस्को के विषय में क्या जानते हो ?

३—संरक्षण-परिषद का क्या काम है ?

४—अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय कहाँ स्थापित है ? उससे क्या लाभ हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ४—महात्मा गान्धी और रवीन्द्रनाथ टैगोर का आध्यात्मिक प्रभाव

विश्व में शान्ति के वातावरण को पैदा करने में महात्मा गाँधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के आध्यात्मिक प्रभाव का बड़ा मूल्य है। आधुनिक युग में भारत के इन दोनों महापुरुषों ने अपने-अपने क्षेत्र में वह कार्य किया है जो प्राचीन काल में महात्मा बुद्ध और सम्राट अशोक ने किया था।

आध्यात्मिकता या आत्मबल भारत की विशेषता है। दूसरे देशों में सैनिक शक्ति को महत्व दिया जाता है। एक देश इसलिये महान है कि वह समुद्रों का स्वामी है; दूसरा इसलिए कि वह सबसे प्रबल वायुबल रखता है; तीसरा इसलिए कि वह सबसे अधिक धनवान है। भारत के पास ये शक्तियाँ नहीं हैं। उसकी शक्ति उसकी आध्यात्मिकता है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, त्याग और तपस्या आदि की शुभ भावनाएं आध्यात्मिक प्रवृत्ति के रूप हैं। महात्मा गांधी ने इनको राजनीतिक क्षेत्र में तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें साहित्यिक क्षेत्र में अपनाकर विश्व को शान्ति का मार्ग दिखलाया है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर (१८६१-१९४१ ई०) की ख्याति न केवल भारत अपितु अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी सर्वत्र फैली। १९१३ ई० में उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'गीतांजली' पर नोबेल पुरस्कार दिया गया। आपके नाटकों में 'मुक्ताधार' और 'चित्रांगदा' तथा उपन्यासों में 'गोरा', 'आँख की किरकिरी' आदि प्रसिद्ध हैं। गद्य, पद्य, नाटक, निबन्ध, संगीत और चित्रकला सम्बन्धी उनकी कृतियाँ विश्व-साहित्य का अमर अंग बन गयी हैं। उनकी अनेक रचनाओं के अंग्रेजी, फ्रांसीसी, रूसी तथा अन्य भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं। उनमें भारत की आध्यात्मिकता को अनेक रूपों में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रतिबिम्बित किया गया है। मनुष्य एवं पशुजीवन और प्रकृति के दृश्यों में टैगोर ने एक ही आत्मा की ज्योति को देखा, अतः उनके सामने संसार के सब प्राणी समान थे। देश, काल, जाति अथवा रंग के भेद-भाव उनके व्यक्तित्व और विचारों को छू तक नहीं गये थे।

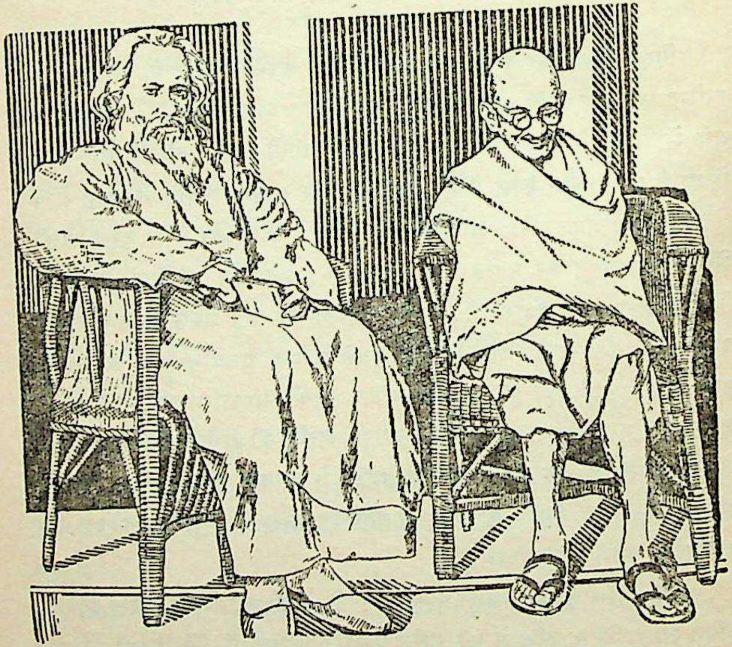

शान्तिनिकेतन में रवीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी

१६०१ ई० में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने एक शिक्षा संस्था स्थापित की जो सब देशों, जातियों और वर्गों के अध्यापकों और विद्यार्थियों का स्वागत करती है। टैगोर ने उसका नाम शान्तिनिकेतन रखा था। उसने अब विश्वविद्यालय का रूप धारण कर लिया है। भारत के प्रधान मन्त्री स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू उसके कुलपति थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महात्मा गाँधी (१८६६-१९४८ ई०) के विषय में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा था कि "वह हजारों दीन-हीनों की झोपड़ियों में उनकी ही ऐसी वेशभूषा में पहुँचा और वहाँ ठहर कर उसने उनकी भाषा में बातचीत की। यही कारण था कि जनता ने उसे महात्मा का नाम दिया और यही उसका सच्चा नाम था। कौन है दूसरा जिसने उसकी ही तरह अनुभव किया हो कि सारे भारतवासी एक ही हाड़ और मांस के बने हुए हैं। उसकी पुकार पर भारत एक नवीन महानता को लेकर आगे बढ़ा, ठीक वैसे ही जैसे एक बार पहले प्राचीन काल में बढ़ा था जब बुद्ध ने प्राणी-प्राणी में भ्रातृ-भाव और करुणा का संचार किया था।"

तुम जानते हो कि महात्मा गाँधी में सबसे अद्भुत बात यह थी कि उन्होंने एक भी गोली दागे बिना एक विशाल देश को स्वतन्त्र करा दिया। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि कोई देश हिंसा का सहारा लिये बिना भी सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक क्रान्ति सम्पन्न कर सकता है। यद्यपि उन्होंने अंग्रेजों से संघर्ष किया और उनके साम्राज्य को छिन्न भिन्न कर डाला, तथापि आज अंग्रेज उनका उतने ही आदर के साथ स्मरण करते हैं जितना कि अन्य लोग।

महात्मा गाँधी के जीवन और विचारों में तुम यह बात पाओगे कि भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के सेनापति होते हुए भी वह संकीर्ण देश-भक्ति या अनुदार राष्ट्रीयता से सदा अलग रहे। उन्होंने राष्ट्रीयता को अन्तर्राष्ट्रीयता से अलग नहीं समझा। उनकी राष्ट्रीयता का आधार मानवता थी। इसी कारण उनके सिद्धान्तों से प्रभावित देशों में स्वतन्त्र होने की नयी उमंगें और संसार में शान्ति-स्थापना की नयी आशाएं उत्पन्न हुईं। फ्रांस के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान रोम्या रोलां ने लिखा है कि 'युद्ध और विप्लवों से ग्रसित यूरोप शान्ति के लिए गांधी जी की ओर निहारता था।'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजनीतिक व्यवस्था की तरह महात्मा गांधी ऐसी आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था कायम करना चाहते थे जो सत्य और प्रेम पर आधारित हो। सब तरह के शोषण और पीड़न का अन्त उनको अभीष्ट था। उनका विचार था कि आर्थिक और सामाजिक स्वतन्त्रता के बिना राजनीतिक स्वाधीनता का कोई अर्थ नहीं। वह स्वावलम्बन, संयम और सादे जीवन के पक्षपाती थे। वह चाहते थे कि समाज में कोई बेकार न रहे, आर्थिक विषमता नष्ट हो, समाज में सब व्यक्तियों को बराबर का दर्जा और उन्नति के समान अवसर मिलें। इस प्रकार के विचार महात्मा गांधी की आध्यात्मिकता के फल थे जो उन्होंने व्यवहार में चरितार्थ किये। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी अपने साहित्य में इन्हीं विचारों का प्रतिपादन किया। ये विचार भारत की सांस्कृतिक निधि के अमूल्य रत्न हैं। भारतीय संस्कृति के इन विचारों से विश्व में आशा और उत्साह से सम्पन्न नव मानव का जन्म हो सकता है। आधुनिक युग में इन भारतीय आदर्शों की प्रतिष्ठा महात्मा गाँधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने की और इसी कारण विश्व के कोटि-कोटि जन भारत को इन महापुरुषों की जन्म-भूमि के नाम से ही जानते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारत और संसार को किन बातों से प्रभावित किया है ?

२—महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों के विषय में क्या जानते हो ?

३—आध्यात्मिकता से क्या मतलब समझते हो ?

४—शान्तिनिकेतन क्या है ? उसके विषय में क्या जानते हो ?

५—महात्मा गांधी किस प्रकार की आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था कायम करना चाहते थे ?

६—रवीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गाँधी का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व क्या है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा अध्याय

भारत और विश्व

पाठ १—विश्व-राजनीति में भारत का स्थान

स्वतन्त्रता के पहले हमारे देश की स्थिति एक पराधीन देश की थी। हमारे संसार की राजनीति में उसका अपना स्वतन्त्र स्थान नहीं था। अंग्रेजों के अधीन होने के कारण भारत के प्रतिनिधि वास्तव में इस देश के प्रतिनिधि न होकर ब्रिटेन की हाँ-में-हाँ मिलाने वाले प्रतिनिधि होते थे। स्वतन्त्र होने के बाद भारत की मान-मर्यादा संसार में बहुत बढ़ गयी है।

राजनीति के विचार से विश्व में इस समय दो प्रकार के देश हैं—(१) रूस, चीन आदि कुछ देश **साम्यवादी** कहे जाते हैं। वहाँ के निवासियों के जीवन पर राज्य का कठोर नियन्त्रण रहता है। (२) अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, भारत आदि देश **स्वतन्त्र विश्व** के देश कहलाते हैं क्योंकि उनके निवासियों के सामान्य जीवन पर राज्य का कठोर नियन्त्रण नहीं है।

'स्वतन्त्र विश्व' के देशों में भारत जनसंख्या के विचार से सबसे बड़ा देश है। एशिया में वह प्रथम कोटि का राष्ट्र है।

इस समय संयुक्त राष्ट्र-संघ के अधिकांश सदस्य-राष्ट्र दो शस्त्रसज्ज गुटों में बँट गये हैं—एक अमेरिकी गुट और दूसरा रूसी गुट। इनमें से हरएक गुट अपने स्वार्थों और हितों की रक्षा के लिए तो प्रयत्न करता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है, परन्तु उसे दूसरे गुट के राष्ट्रों के हितों की चिन्ता कम है। इसका एक उदाहरण है साम्यवादी चीन के राष्ट्र-सघ में प्रवेश का अमेरिका बराबर विरोध करता रहता है और अभी तक संसार के सबसे बड़े ७० करोड़ की अबादी वाले देश चीन को संयुक्त राष्ट्-संघ मे स्थान नहीं मिला है। दोनों गुटों की आपस की तनातनी, ईर्ष्या और स्वार्थपरता के कारण संसार की राजनीति से युद्ध का वातावरण नष्ट नहीं होने पाता। संसार में शान्ति कैसे स्थापित हो ?

स्वतन्त्र भारत इस सत्य को अच्छी तरह समझता है। हमारे प्रधान मन्त्री स्व० पं० जवाहर लाल नेहरू ने बार-बार स्पष्ट रूप से घोषणा की थी कि इस प्रकार की गुटबन्दी और युद्ध की तैयारियों से संसार में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। भारत संसार में शान्ति चाहता है। वह युद्ध से सम्बन्ध रखने वाले सारे प्रयत्नों का विरोधी है, क्योंकि उनसे हिंसा, वैमनस्य और अविश्वास की भावनाएं पैदा होती हैं। अतः **उसने किसी गुट में सम्मिलित होना स्वीकार नहीं किया** है, चाहे वह गुट साम्यवादी देशों का हो और चाहे 'स्वतन्त्र विश्व' के देशों का। गुटों के राजनीनिक संघर्षों में भारत तटस्थ रहकर सत्य-असत्य की जाँच करता है। जिधर सत्य होता है, उधर भारत होता है। उसे इस बात का भय नहीं कि इससे अमेरिकी नाराज हो जायेंगे या रूसी। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा, ये दोनों प्राचीन महामन्त्र, इस देश में फिर से फूंके थे। भारत ने उनका प्रयोग स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए किया और अब वह उन महामन्त्रों का प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में कर रहा है।

भारत की इस प्रकार की नीति से पहले तो अनेक विदेशों में विभ्रम पैदा हुआ, परन्तु धीरे-धीरे वह गलतफहमी दूर हो रही है। फलस्वरूप इंग्लैंड के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री स्व० श्री एटली ने भारत-भ्रमण

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के समय (अक्तूबर, १९५६ ई०) हमारे देश की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए स्वीकार किया कि मैं भारत को एशिया में लोकतन्त्र एवं सुदृढ़ सरकारों का पथ-प्रदर्शक और समर्थक देश मानता हूँ । मुझे इसके बारे में कोई संदेह नहीं कि भारत पर जो उत्तरदायित्व पड़ेगा वह उनका भली भाँति निर्वाह करेगा ।"

अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न पर भारत का रुख

भारत ने विश्व में शान्ति की स्थापना करने के लिए संयुक्त राष्ट्र-संघ में अनुपम काम किये हैं । वह एशिया एवं अफ्रीका के पिछड़े हुए राष्ट्रों को अपनी भाँति स्वतन्त्र बनाना चाहता है, परन्तु इस प्रयोजन के लिए भारत ने एशियायी एवं अफ्रीकी देशों का तीसरा गुट कभी नहीं बनाया, वरन् संयुक्त राष्ट्र-संघ के द्वारा ही उहें स्वतन्त्रता दिलाने के प्रयत्न किये हैं ।

१९४८ ई० में **इन्डोनीशिया** के स्वाधीनता संग्राम को कुचलने के लिए हालैंड-सरकार ने सैनिक कारवाई की थी । भारत ने १९४९ ई० में दिल्ली में एक एशियायी कान्फ्रेंस बुलायी जिसमें संयुक्त राष्ट्र-संघ के १७ सदस्य शामिल हुए । इस कान्फ्रेंस के प्रभाव से संयुक्त राष्ट्र-संघ और हालैंड दोनों ने इंडोनीशिया की स्वन्तत्रा को स्वीकार किया और इस प्रकार एशिया के दक्षिण-पूर्व में न्याय एवं शान्ति की स्थापना हुई ।

कोरिया में युद्ध को रुकवाने और वहाँ अपनी भारतीय सेना के मण्डल को शान्ति स्थापन के लिए भेजकर भारत ने विश्व को एक महायुद्ध की विभीषिका से बचा लिया । इसी प्रकार **हिन्दचीन** में भारत ने फ्रांसीसियों और हिन्दचीन के निवासियों के युद्ध का अन्त कराकर वहाँ शान्ति स्थापित करायी है । १९५६ ई० में स्वेज समस्या को लेकर पश्चिमी एशिया में युद्ध की आग भड़कने वाली थी, परन्तु भारत के ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रयत्नों से सशस्त्र संघर्ष बच गया। १९६१ ई० से भारत कांगों में राष्ट्र-संघ के निर्देशानुसार शान्ति के स्थापन का प्रायत्न करता रहा।

विश्वशान्ति व पंचशील

आजकल के आणविक युग में विश्व के राष्ट्रों को साथ-साथ रहने **(सह-अस्तित्व)** के मन्त्र की दीक्षा देने का मुख्य श्रेय भारत को है।

सह-अस्तित्व के पाँच सिद्धान्त, जो अब 'पंचशील के नाम से प्रसिद्ध हैं, संसार के प्रायः सभी प्रमुख राष्ट्र मान चुके हैं। इन सिद्धान्तों का उल्लेख सबसे पहले तिब्बत के बारे में **भारत और चीन के बीच समझौते** के अवसर पर हुआ (२९ अप्रैल, १९५४ ई०)। उस समझौते की भूमिका में उनका इस प्रकार वर्णन है—

(१) एक दूसरे की क्षेत्रीय एकता एवं सार्वभौमिकता का परस्पर सम्मान;

(२) अनाक्रमण;

(३) एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना;

(४) समानता और पारस्परिक लाभ तथा

(५) शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व।

जिस समय इस समझौते पर चीन की राजधानी पेकिंग में हस्ताक्षर हुए, लगभग उन्हीं दिनों श्रीलंका की राजधानी **कोलम्बो में** भारत, पाकिस्तान, बरमा, श्रीलंका और इण्डोनीशिया के प्रधानमन्त्रियों का सम्मेलन चल रहा था। सम्मेलन की समाप्ति पर जो संयुक्त विज्ञप्ति प्रकाशित की गयी, उसमें पाँचों प्रधान मन्त्रियों ने इन सिद्धान्तों का समर्थन किया (२मई, १९५४)।

इसके बाद जून,१९५४ ई० में चीन के प्रधान मन्त्री **चाऊ-एन-लाई** दो-तीन दिनों के लिए भारत पधारे और दिल्ली में उन्होंने हमारे प्रधान मन्त्री स्व० जवाहरलाल नेहरू से संसार की समस्याओं पर विचार किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस अवसर पर दोनों प्रधान मन्त्रियों ने संयुक्त वक्तव्य निकाला। उसमें उन्होंने इन पांच सिद्धान्तों को न केवल आपस के सम्बन्धों के लिए आदर्श आधार बतलाया, वरन् उन्हें विश्व की स्थायी शान्ति और सुरक्षा का एक प्रबल साधन भी माना। इसके दो दिनों बाद चीनी प्रधान मन्त्री और बरमी प्रधान मन्त्री की मुलाकात हुई और उन्होंने भी संयुक्त वक्तव्य में इन सिद्धान्तों का समर्थन किया।

पंचशील सिद्धान्तों का सबसे प्रबल समर्थन **बांडुंग सम्मेलन** में किया गया। अप्रैल, १९५५ ई० में इण्डोनीशिया के बांडुंग नगर में एशियायी और अफ्रीकी २९ राष्ट्रों का एक ऐतिहासिक सम्मेलन हुआ। ये राष्ट्र मिलकर संसार की आधी से अधिक जनसंख्या रखते हैं। इस सम्मेलन ने बड़े विचार-विमर्श के बाद राष्ट्रों के परस्पर व्यवहार के लिए दस ऐसे सिद्धान्त निश्चित किये जिनमें पंचशील का पूर्ण समावेश और व्याख्या की गयी थी।

जून, १९५५ ई० में पंचशील को **मास्को घोषणा** द्वारा एक ऐसे राष्ट्र का समर्थन प्राप्त हुआ जो विश्व के प्रमुख राष्ट्रों में गिना जाता है। हमारे प्रधान मन्त्री स्व० जवाहरलाल नेहरू ने रूस की यात्रा की। वहाँ उनका अपूर्व स्वागत हुआ। रूस के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री बुलगानिन के साथ संयुक्त वक्तव्य में पंचशील सिद्धान्तों को न केवल रूस और भारत के सम्बन्धों का आधार स्वीकार किया गया, अपितु उसे विश्व की वर्तमान उलझनों को सुलझाने का मार्ग माना गया। उक्त घोषणा ने 'एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने' के तीसरे सिद्धान्त के साथ 'किसी भी कारण से चाहे वह आर्थिक, राजनीतिक या आदर्श सम्बन्धी हो' यह बात जोड़कर पंचशील के सिद्धान्तों को अधिक व्यापक और महत्वपूर्ण बना दिया।

नेहरू-बुलगानिन घोषणा में यह भी कहा गया कि दोनों प्रधान—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मन्त्रियों को विश्वास है कि ये सिद्धात जिन्हें हाल में पर्याप्त मान्यता मिल चुकी है, इससे भी बड़े क्षेत्र में उपयोग करने योग्य हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार में इनके अनुसरण में भय और आशंका को दूर कर विश्व में फैले हुए वर्तमान तनाव को कम करने की आशा और क्षमता छिपी है।

रूस की यात्रा के बाद हमारे प्रधान मण्त्री स्व० पं० जवाहरलाल नेहरू पोलैंड गये। पोलैंड के प्रधान मन्त्री ने भी हमारे प्रधान मन्त्री के साथ संयुक्त वक्तव्य में पंचशील का समर्थन किया। इससे स्पष्ट प्रकट होता है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में नेहरू जी की विचारधारा दिन प्रतिदिन प्रबल होती गयी। इसका एक अत्यन्त ज्वलंत प्रमाण दिसम्बर, १६५७ ई० में न्यूयार्क में संगठित संयुक्त राष्ट्र-संघ के प्रस्ताव में मिलता है जिसे भारत, स्वीडन और यूगोस्लाविया ने प्रस्तुत किया और जिसका समर्थन संसार के ७६ राष्ट्रों ने किया। उस प्रस्ताव में पंचशील के आधार पर शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की चर्चा की गयी थी।

सन् १६५६ ई० के दिसम्बर में अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री आइजनहोवर ने भारत की ऐतिहासिक यात्रा की और नेहरू जी के शान्ति-प्रयासों का हार्दिक समर्थन किया। दोनों नेताओं की बातचीत में चीनी आक्रमण की भी चर्चा हुई जिसमें दोनों नेताओं ने इस विवाद को शान्तिपूर्ण ढंग से सुलझाने को समझदारी समझा।

नेहरू जी की विचारधारा भारत की विचारधारा है। उसके मूल में शान्ति और सहिष्णुता के भाव हैं जो आदि काल से भारतीय जीवन और दर्शन के अभिन्न अंग रहे हैं।

चीन का नया आक्रमण

खेद का विषय है कि सन् १६६२ ई० में भारत को दुर्बल समझ और नेहरू के नेतृत्व से खीज कर चीन ने हमारे देश पर बड़े पैमाने में आक्रमण करके भारत के एक भू भाग पर अधिकार कर लिया है और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत की अपनी स्वतन्त्रता, सम्मान और अखण्डता की रक्षा के लिए शस्त्रों को सँभालने के लिए बाध्य कर दिया है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—संयुक्त-राष्ट्र-संघ में इस समय कौन से दो गुट बन गये हैं? उनसे क्या हानि है?

२—भारत की विदेशी नीति का वर्णन करो।

३—भारत ने संसार में शान्ति की स्थापना के लिए क्या प्रयत्न किये हैं?

पाठ २—परराष्ट्रों में भारत के राज-प्रतिनिधि

स्वतन्त्रता के पहले परराष्ट्रों के साथ भारत का सम्बन्ध ब्रिटिश सरकार के द्वारा था। स्वतन्त्रता प्राप्त होने के बाद भारत-संघ-सरकार ने समानता के आधार पर संसार के प्रायः सभी देशों से अपने मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बनाये हैं। इस समय भारत के राजदूत, हाई कमिश्नर एवं अन्य राज-प्रतिनिधि विदेशों में नियुक्त हैं और उन देशों के राजदूतावास भारत में खुले हैं।

देश के स्वतन्त्र होते ही डा० राजेन्द्र प्रसाद ने परराष्ट्रों से भारत के सम्बन्धों के बारे में यह विचार प्रकट किया था कि संसार के सभी देशों को हम यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि हम अपनी परम्परा के अनुसार सभी के साथ मित्रता का बर्ताव रखना चाहते हैं। हमारा किसी के साथ द्वेष नहीं है, हमें किसी के साथ घात नहीं करना है और हम आशा करते हैं कि कोई हमारे साथ भी ऐसा नहीं करेगा। हमारी एक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की आशा और अभिलाषा है कि हम सब के लिए स्वतन्त्रता तथा मानव जाति में शान्ति और सुख स्थापित करने में सहायक हो सकें।

आधुनिक काल में जो देश उन्नति करना चाहता है, उसके लिए आवश्यक है कि वह संसार की गति-विधि से परिचित रहे। स्वदेश के प्रति दूसरे देशों की सद्भावना उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि वह दूसरे देशों का अपने देश से सम्बन्ध बनाने में स्वागत करे।

इस प्रसंग में तुम यह जानना चाहोगे कि भारत सरकार के राजदूतावास किस किस देश में हैं। यदि कोई कभी शिक्षा-प्राप्ति या व्यापार के लिए उन देशों को जाना चाहे तो इन राजदूतों से लिखापढ़ी करके आवश्यक सूचनाएँ पा सकता है।

अंबेसेडर (राजदूत)—विश्व के ६० से अधिक देशों में भारत के राजदूत रहते हैं जैसे संयुक्तराज्य अमेरिका, यूरोप में सोवियट रूस, फ्रांस, इटली, टर्की, जर्मनी बेल्जियम, हालैंड, स्विटजरलैंड, चेकोस्लोवाकिया और जूगोस्लाविया में, एशिया में अफगानिस्तान, बरमा, चीन, ईरान, मंगोलिया, इंडोनीशिया, जापान, नेपाल और थाईलैंड में, दक्षिणी अमेरिका में अर्जेन्टाइना व चिली एवं ब्राजील में तथा अफ्रीका में मिस्र, कांगो, इथिओपिया, गिनी आइवरी कोस्ट, लीबिया, माली, मोरोक्को और ट्यूनिशिया में।

हाई कमिश्नर—भारत अपनी इच्छा से राष्ट्र-कुल का सदस्य है और राष्ट्र-कुल के राजदूत हाई कमिश्नर कहलाते हैं। आस्ट्रेलिया, कनाडा, श्रीलंका, साइप्रस, घाना, मलाया, नाइजीरिया, न्यूजीलैंड, टैंगानिका, पाकिस्तान, और यूनाइटेड किंगडम में भारत के हाई कमिश्नर रहते हैं। साउथ अफ्रीका से भी पहले राजनीतिक सम्बन्ध था, परन्तु प्रवासी भारतीयों के साथ उसके अन्यायपूर्ण व्यवहार के कारण वह सम्बन्ध टूट गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंवेसेडरों और हाई कमिश्नरों के अलावा कुछ देशों में भारत के **लीगेशन** है जैसे अल्बानिया में, कुछ देशों में **कमिश्नर** नियुक्त हैं जैसे अदन, हांगकांग, फिजी और मारीशस में। कुछ देशों में **काँसलेट-जनरल** हैं जैसे व्येतनेम में। इस प्रकार अब संसार का शायद ही कोई उन्नत देश बचा हो, जहाँ किसी न किसी पद का हमारा राजदूतावास न हो। इनके बदले संसार के बहुत से देशों के राजदूतावास भारत में भी स्थित हैं।

भारत के राजदूत विदेशों में भारत के हितों की रक्षा करते हैं। उनकी विद्यमानता उन देशों के साथ भारत की मित्रता का प्रतीक है। उनके आचार-विचार और कार्य-कलाप से विदेशों के निवासी भारतीय जीवन, राजनीति और संस्कृति का परिचय प्राप्त करते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—परराष्ट्रों में भारत के राजदूतावासों के बनाने के क्या लाभ हैं?

२—परराष्ट्रों के साथ सम्बन्ध के विषय में भारत की क्या नीति है?

३—साउथ अफ्रीका में भारत का राजदूतावास क्यों नहीं है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३—प्रवासी भारतवासी

उन्नीसवीं शती में भारत के बहुत से लोग कुलियों के रूप में जीविका प्राप्ति के लिए मलाया, अफ्रीका आदि समुद्र पार के अनेक देशों में जा बसे थे। अब वहाँ उनकी जनसंख्या ५० लाख के लगभग हो गयी है। उन देशों की ओर जाने का लालच उन्हें अंग्रेजों ने दिलाया था और वे लोग ही उन्हें वहाँ पर ले भी गये। इसमें अंग्रेजों एवं अन्य यूरोपियों का स्वार्थ था। पृथ्वी के इन गर्म देशों में जहाँ घने जंगल और दलदल भरे थे, यूरोपीय लोग खेतीबारी करने के अयोग्य साबित हुए। अत: उन्होंने निर्धन भारतीयों को आर्थिक प्रलोभन देकर भर्ती कर लिया। उन्हें बन्दरगाहों पर एकत्र कर उनसे विदेशों में रहने का पट्टा लिखाया और जहाजों में बिठाकर उन्हें बाहर भेज दिया। भूखा क्या न करता ?

भारतीय लोग समुद्र पार के देशों में गये। उन्होंने साहस, प्रयत्न और परिश्रम से वहाँ के घने बनों को साफ किया, धरती को खेती के योग्य बनाया, खेतीबारी की और अपने यूरोपीय मालिकों को मालामाल कर दिया। कालान्तर में अपने लिखे पट्टों की शर्तों के पूरा होने पर भी वे लोग वहीं पर प्रवास करके अपनी स्वतन्त्र खेतीबारी एवं वाणिज्य व्यापार करने लगे। यूरोपियों को यह बहुत अखरा और उन्होंने भारतीयों पर अत्याचार करने शुरू किये। भारत में उस समय विदेशी हुकूमत थी। भारत सरकार से हमारे देशवासियों को यथेष्ट सहायता नहीं मिली। अब हमारा देश स्वतन्त्र है। अब हम उनकी सहायता कर सकते हैं। अत: भारत के हरएक नागरिक के लिए आवश्यक है कि वह अपने प्रवासी भाइयों के विषय में जानकारी प्राप्त करें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अफ्रीका के प्रवासी भारतीय

अफ्रीका के कई देशों में भारतीय रहते हैं, परन्तु दक्षिण अफ्रीका में उनकी बड़ी दुर्दशा है। दक्षिण अफ्रीका की गोरी सरकार ने जाति और रंग-भेद की नीति बरत कर वहाँ के भारतीयों को नागरिक अधिकारों से बंचित कर रखा है। उसका असली अभिप्राय भारतीयों को या तो हीन पतितों की भाँति उस देश में रखना है अथवा उनको वहाँ से निकाल देना है। दक्षिण अफ्रीका और भारतीयों का यह संघर्ष काफी पुराना हो गया है। तुमने सुना होगा कि भारत की राजनीति में आने के पहले गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में वहाँ की सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह संग्राम चलाकर भारतीयों के मान और अधिकारों की रक्षा की थी (१६१४ ई०), परन्तु आगे आने वाली दक्षिणी अफ्रीकी सरकारों ने फिर अन्याय और अत्याचार जारी कर दिया। भारतीय भी अन्याय का बराबर मुकाबला कर रहे हैं। अब यह प्रश्न अन्तर्राष्ट्रीय बन गया है। संयुक्त-राष्ट्र-संघ ने कई बार भारतीयों के पक्ष में अपनी सम्मति भी प्रकट की है, परन्तु दक्षिण अफ्रीका की गोरी सरकार अपनी हठधर्मी को नहीं छोड़ना चाहती। दक्षिण अफ्रीका में इस समय करीब ४ लाख से अधिक भारतीय हैं जिनमें २ लाख से अधिक अकेले नेटाल राज्य में रहते हैं।

मोरीशस—४ लाख से अधिक भारतीय मोरीशस में रहते हैं जो हिन्द महासागर में एक द्वीप है। वहाँ उनकी बहुसंख्या है, और उन्हें शासन और रकारी नौकरियों में धीरे-धीरे अधिकार प्राप्त हो रहे हैं। इस समय वहाँ के प्रधान मन्त्री एक भारतीय सज्जन ही हैं जिनका नाम श्री शिवसागर रामगुलाम है।

श्रीलंका—यहाँ करीब सवा आठ लाख भारतीय रहते हैं। श्रीलंका सरकार भारत-संघ सरकार बराबर इस बात का आग्रह करती रही है कि उन्हें न्यायोचित अधिकार मिलने चाहिए।

मलाया में प्रवासी भारतीयों की संख्या करीब साढ़े सात लाख है। आधुनिक काल में भारतीयों ने सबसे पहले १८०० ई० में वहीं प्रवास

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया था। वहाँ लाखों की संख्या में से केवल इने-गिने भारतीयों को नागरिक अधिकार प्राप्त हैं तथा जमीन के मालिक और मजदूर दोनों प्रकार के भारतीय परेशान रहते हैं।

इन्डोनीशिया में करीव ३० हजार भारतीय रहते हैं। पहले डच सरकार उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी, परन्तु अब वहाँ की स्वतन्त्र सरकार का व्यवहार कुछ सुधरा है।

इन देशों के अतिक्ति **बरमा, फिजी** (प्रशान्त महासागर), **त्रिनीदाद, केनिया, ब्रिटिश गायना** (दक्षिणी अमेरिका) तथा **सिंगापुर में भी** भारतीयों की काफी आबादी है।

भारत में अंग्रेजों की गुलामी के समय बाहर के राष्ट्रों में भारतीयों के अपमान का निराकरण कठिन था। जब स्वतन्त्र हो जाने पर भारत जैसे-जैसे शक्तिशाली होता जायगा, वैसे-वैसे दूसरे देश भारतीयों का मान-सम्मान करने लगेंगे और उन्हें उनके न्यायोचित अधिकार देने पड़ेंगे।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—आधुनिक काल में भारत के लोग विदेशों में किस प्रकार जा बसे?

२—संसार के किन-किन देशों में प्रवासी भारतवासी पाये जाते हैं ?

३—दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतवासियों को क्या कष्ट हैं ? उनके दूर करने के लिए क्या प्रयत्न किये गये हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा अध्याय

मानव जीवन पर वैज्ञानिक खोजों का प्रभाव

पाठ १—आजकल विज्ञान का युग है

बालको, क्या तुम जानते हो कि आजकल तुम्हारे पाठ्यक्रम में विज्ञान की शिक्षा पर इतना जोर क्यों दिया जा रहा है ? यह विज्ञान का युग है । आधुनिक विज्ञान में सभी बातें मौजूद हैं जिनकी मदद से मनुष्य प्रकृति की देन को अपने वश में करके जनसाधारण का जीवन-स्तर ऊँचा उठा सकता है। हमारे जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं, जहाँ विज्ञान ने अपना चमत्कार न दिखाया हो। तुम देखोगे कि विज्ञान ने लोगों के जीवन को ऊपर उठाने, निर्धनता को दूर करने और मनुष्य-समाज के सुख व सम्पत्ति ब ढ़ाने के लिए बहुत कुछ किया है।

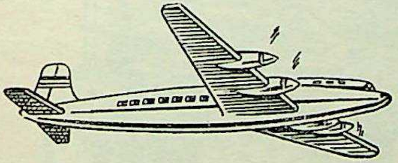

वायुयान

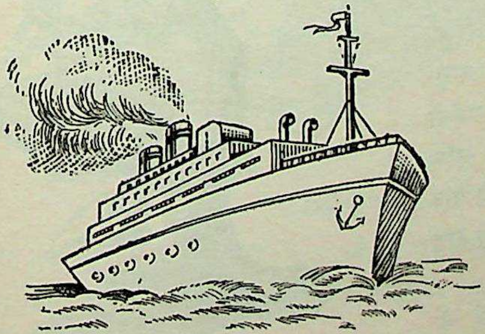

जलयान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारा देश अभी बहुत सी बातों में पिछड़ा है, अतः उसके लिए विज्ञान का सहारा लेना और भी आवश्यक है।

स्थान सम्बन्धी प्रभाव--रेल, तार, मोटर जलयान, वायुयान ये सब वैज्ञानिक खोजों के प्रभाव हैं। तुम्हारे लिए रेल, मोटर-बस आदि इस समय साधारण सी वस्तुएँ हैं, परन्तु जरा उस समय की कल्पना करो जब इन वायुयानों की खोज नहीं हुई थी। यह वैज्ञानिक खोजों का ही चमत्कार है कि मनुष्य भूमि की परिक्रमा ऐसे शीघ्रगामी वायुयानों पर करता है जो बिना घोड़ों के भागते हैं, तथा समुद्रों पर ऐसे जहाज चलाता है जो वायु के प्रतिकूल खुले समुद्रों पर जल-धाराओं को चीरते चले जाते हैं। वायुयानों ने समुद्र और पर्वतों को आकाश-मार्गों से लाँघ कर मानों समुद्रों को पाट दिया और पहाड़ों को ढाह दिया है।

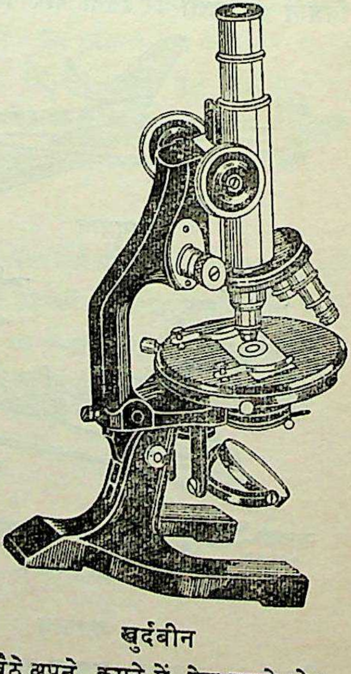
खुर्दबीन

वैज्ञानिक खोजों के कारण तुम मीलों दूर के दृश्यों को टेलीविजन के द्वारा घर बैठे अपने कमरे में देख सकते हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूरबीन यन्त्र किसी दृश्य के आकार को बहुत बड़ा कर देता है, अतः तुम उसके द्वारा दूर के दृश्यों को स्पष्ट रूप से देख सकते हो । एक खुर्दबीन **एलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप** ऐसा है जिसके द्वारा नन्हीं वस्तुओं का कई लाख गुना बढ़ा हुआ बिम्ब देखा जा सकता है ।

समाचारों के भेजने की गति—वैज्ञानिक खोजों से सब तरह के पत्र-व्यवहार और व्यवसाय सुगम हो गये हैं । तुमने देखा होगा कि किस प्रकार धातु के पतले तारों पर होकर समाचार एक स्थान से दूसरे स्थान पर दौड़ जाते हैं । **टेलीफोन** के द्वारा तुम अपने घर में बैठकर

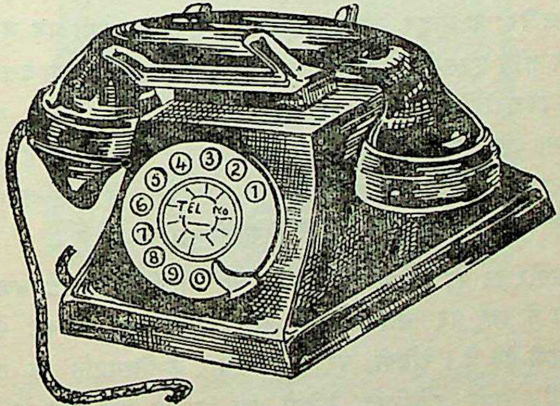

टेलीफोन

हज़ारों मील दूर रहने वाले लोगों से वार्तालाप कर सकते हो । **वायरलेस** अर्थात बिना तार के तार से क्षण भर में समाचार एक स्थान से दूसरे स्थान पहुँचा दिये जाते हैं ।

छापाखाना—छापेखाने में पुस्तकों की सैकड़ों प्रतियां जरा सी देर में छप जाती हैं । अब तो अक्षरों को जोड़ने के बाद आदमी को फिर हाथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लगाने की आवश्यकता नहीं रह गयी है । एक ओर से कोरा कागज आप से आप चलता है और दूसरी ओर छपकर गड्डी के रूप में निकल आता है । बड़े-बड़े छापेखानों में एक घण्टे में कई हजार समाचार-पत्र इसी प्रकार छापे जाते हैं । इसके फलस्वरूप तुम नित्य प्रति हजारों मील दूर के कल के समाचार आज पढ़ लेते हो ।

केमरा—केमरा पलक मारते तुम्हारा फोटो खींच लेता है । पहले के भी चित्रकार चित्र तो बनाया करते थे, किन्तु वे असली के समान नहीं होते थे ।

एक्स-रे का प्रभाव—एक अद्भुत वैज्ञानिक खोज एक्स-रे है जिसके द्वारा शरीर के अन्दर की वस्तुएं साफ-साफ दिखायी पड़ जाती हैं । डाक्टर लोग एक्स-रे के उपयोग से शरीर के भीतर की दशा देखकर बड़े-बड़े भयंकर रोगों का इलाज करते हैं । यदि कभी कोई बच्चा खेल-खेल में किसी वस्तु को निगल जाय, तो उसके प्राण तक जा सकते हैं । एक्स-रे के द्वारा यह देखा जा सकता है कि वह वस्तु शरीर में किस जगह है और फिर चीड़-फाड़ करके उसे वहाँ से निकाला जा सकता है ।

मनोरंजन पर प्रभाव—ग्रामोफोन में गीतों के रेकार्ड बजते हैं ; सिनेमा में परदे पर चलते-फिरते और बोलते हुए जीवन के दृश्य दिखलायी देते हैं । रेडियो पर हम संसार के नित्यप्रति के समाचार सुनते हैं । इसके अतिरिक्त रेडियो पर हमको कवि-सम्मेलन, नाटक विभिन्न प्रकार के संगीत आदि प्रोग्राम भी सुनने को मिलते हैं । यह वैज्ञानिक खोजों का प्रभाव है ।

एक लेख में प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान मेकाले ने जीवन पर वैज्ञानिक खोजों के प्रभावों का वर्णन करते हुए लिखा है कि विज्ञान ने हमें दीर्घायु प्रदान की है, कष्ट की वेदना कम कर दी है, रोग मिटा दिये हैं, आकाश की बिजली को भूमि की दासी बना दिया है जिसने रात्रि के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्धकार को दिन की जगमगाहट में बदल दिया है। उसने गति में पर लगा दिये हैं। उसने सारी दूरी लाँघ दी है। उसने मानव को समुद्र की गहराइयों में उतरने, आकाश में उड़ने और पृथ्वी की भयानक दरारों में निर्भयतापूर्वक प्रवेश करने के योग्य बना दिया है।

वैज्ञानिकों की मुट्ठियों में आज समस्त मानव जाति का भाग्य है। अतः विज्ञान का अध्ययन अपनी, अपने समाज और देश की उन्नति के लिए परम आवश्यक है। भारत के सामने आज जो उत्पादन, वस्त्र

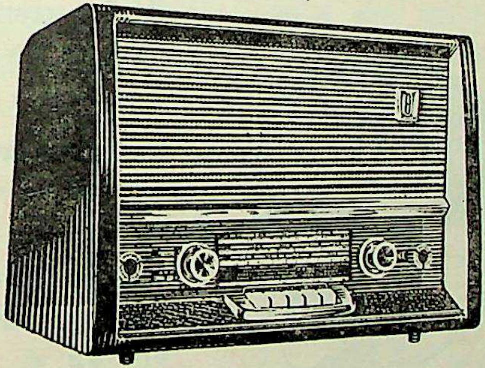

रेडियो

मकान, स्वास्थ्य आदि की अनेक समस्याएं हैं, वैज्ञानिक खोजों और उनके उपयोगों से उनका हल बड़ा आसान बन सकता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—तुम्हारे मनोरंजन के लिए वैज्ञानिक खोजों से क्या चीजें मिली हैं ?

२—सिद्ध करो कि वैज्ञानिक खोजों ने गति में पर लगा दिये हैं ?

३—तुम्हें विज्ञान का अध्ययन क्यों करना चाहिए ? उससे क्या-क्या लाभ होते हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—स्वतन्त्र भारत में वैज्ञानिक अनुसन्धान

शतियों की दासता की शृंखलाओं को तोड़कर जब से हमारे देश ने स्वाधीनता के नवीन युग में पदार्पण किया है, वह वैज्ञानिक अनुसंधानों में अपूर्व उन्नति कर रहा है। संघ सरकार, राज्य सरकार, विश्वविद्यालय और गैर सरकारी संस्थाएँ विज्ञान की नयी नयी खोजों के काम में लगी हैं।

स्वर्गीय शान्तिस्वरूप भटनागर

पिछले विश्वयुद्ध के समय भारत में एक संस्था वैज्ञानिक व औद्योगिक अनुसंधान परिषद के नाम से स्थापित की गयी थी। युद्ध की समाप्ति के बाद उसने भारत के औद्योगिक पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण कार्य किया है। देश में अनेक राष्ट्रीय प्रयोगशालाएँ खोली गयी हैं। उनके गत संचालक स्वर्गीय शान्तिस्वरूप भटनागर ने अपने जीवन का एक एक क्षण राष्ट्र की वैज्ञानिक उन्नति में लगाया।

राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के कार्य—दिल्ली में स्थित राष्ट्रीय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भौतिक प्रयोगशाला ने एक ऐसा चूल्हा तैयार किया है जो सूरज की किरणों को एकत्र करके जब उन्हें बर्तन के पेंदे पर फेंकता है तब उसमें पानी गर्म होने लगता है। इस यन्त्र के द्वारा आधे घण्टे में चावल पकाया जा सकता है। यही प्रयोगशाला रेडियो के पुर्जे बनाने का यत्न कर रही है। कलकत्ते में स्थापित काँच **प्रयोगशाला** में काँच और चीनी मिट्टी के विषय में अनेक खोजें की जा रही हैं। हमारे देश में प्रतिवर्ष २ करोड़ रुपये का काँच का सामान विदेशों से आता है। आशा है कि निकट भविष्य में भारतीय कारखाने उत्तम श्रेणी के काँच के सामान बनाने लगेंगे और देश का बहुत सा धन देश के काम आयेगा। रुड़की की **भवन निर्माण अनुसंधानशाला** सस्ती लागत पर छोटे आकार के स्वास्थ्यप्रद मकानों के बनाने के प्रयत्नों में लगी है। देहरादून की वन **अनुसंधानशाला** में तुलसी के पत्तों से कपूर तैयार करने की विधि खोजी गयी है और शीघ्र ही बड़े पैमाने पर कपूर बनाये जाने की आशा है। जिन खनिज पदार्थों की देश में कमी है और जो दूसरे देशों से मँगाने पड़ते हैं, उनकी जगह काम आ सकने वाले अन्य पदार्थों की खोज में हमारी प्रयोगशालाओं को सफलता मिली है।

मद्रास की **चर्म गवेषणशाला** ने चमड़ा कमाने के काम में आने वाली विदेशी छालों के बदले देशी चीजों का आविष्कार किया है। मैसूर में अदरक, काजू और सेव के रस से कुछ हल्के पेय पदार्थों का बड़े पैमाने पर उत्पादन होने लगा है।

इंजीनियरिंग के कार्य—भारतीय इन्जीनियरों ने जल-विद्युत की अनेक वृहत योजनाओं को मूर्तरूप दिया है। दामोदर घाटी, हीरा कुण्ड, भाखड़ा-नंगल आदि के बाँध इन्जीनियरिंग विज्ञान के चमत्कार हैं। उदाहरण के लिए सतलज नदी पर चढ़ाव की ओर भाखड़ा नामक स्थान पर २०७.२६ मीटर ऊँचा बाँध तैयार किया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गया है, जिसमें वहाँ ८० किलोमीटर लम्बी और ४.८ किलोमीटर चौड़ी झील बन गयी है। उससे जो नहरें निकाली जा रही हैं उनकी लम्बाई करीब ११२० किलोमीटर होगी और जो बिजली उत्पन्न की जा रही है उससे १२८ नगरों, कस्बों आदि को रोशनी और वहाँ के कल-कारखानों को संचालन-शक्ति मिल सकेगी। उस शक्ति से ८०० नलकूप भी चलाये जा सकेंगे।

लौह-उद्योग के क्षेत्र में भारत ने और भी महान कार्य किया है। रूरकेला (उड़ीसा), भिलाई (मध्य-प्रदेश) और दुर्गापुर (बंगाल) में क्रमश: पश्चिमी जर्मनी, रूस और ब्रिटेन की सहायता से तीन बड़े कारखाने लगे हैं, जिनमें लाखों मन कच्चा लोहा और इस्पात तैयार हो रहा है। इन कारख़ानों से भारत में 'इस्पात युग' आरम्भ हो गया है, और देश में मशीनें बनाने के कारखाने खड़े किये जा रहे हैं।

स्वर्गीय जगदीशचन्द्र बसु

गैर सरकारी संस्थाओं में अनुसंधान कार्य—भारत में अनेक गैर सरकारी संस्थाएं भी बड़ा उपयोगी कार्य कर रही हैं। कलकत्ते में स्थित स्वर्गीय जगदीशचन्द्र बसु द्वारा स्थापित बसु **अनुसंधानशाला** ने वनस्पति विज्ञान के सम्बन्ध में अनेक मौलिक खोजें की हैं जैसे पटसन (जूट) को सड़ाने की विधि। आजकल पटसन को सड़ाने के लिए उसके डंठलों को गट्ठर बाँधकर उन्हें पानी में डाल देते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं। वहाँ कुछ दिन सड़ने के बाद वे इस योग्य बन हैं पाते कि उनका पटसन आसानी से अलग किया जा सके। वसु अनुसंधानशाला में इस सम्बन्ध में खोज करके कुछ ऐसे द्रव पदार्थ तैयार किये गये हैं कि उसे खेतों में ही कटे हुए डंठलों पर छिड़क देने से तीन चार दिन बाद पटसन डंठलों से पृथक किया जा सकता है।

लखनऊ विश्वविद्यालय के स्वर्गीय प्रोफेसर बीरबल साहनी की स्मृति में लखनऊ में **वनस्पति पुरातत्व विज्ञानशाला** स्थापित है। उसमें धरती के भीतर दबे हुए पेड़-पौधों के अवशेषों का अध्ययन करके यह मालूम किया गया है कि दक्षिण भारत के पठार करोड़ों वर्षों के पुराने हैं, जब कि पृथ्वी पर मनुष्य जाति का उद्भव भी नहीं हुआ था।

वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण—उत्तम श्रेणी के कुछ वैज्ञानिक यन्त्र भारत में **मैथमैटिकल इंस्ट्रूमेन्ट आफिस, गवर्मेंट आर्डीनेंस फैक्ट्री, इन्डियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज, हिन्दुस्तान एयरक्राफ्ट कम्पनी** आदि बनाते हैं। अधिकांश यन्त्र अब भी विदेशों से मँगाने पड़ते हैं और देशी कारखानों के बने हुए यन्त्रों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला दिल्ली के संचालक ने आशा दिलायी है कि अगले तीन-चार वर्षों में भारत अपनी आवश्यकता के अधिकांश वैज्ञानिक यन्त्र स्वयं तैयार कर सकेगा तथा तब सम्भवतः बने यन्त्रों को विदेशों में भी भेज सकेगा।

अणु विज्ञान—जब से अमेरिका ने अणु अर्थात एटम बम का प्रयोग करके जापान के दो समृद्ध नगरों को भस्मीभूत किया है, तब से संसार का ध्यान अणु-शक्ति की ओर आकर्षित हो गया है। अन्य देशों की भाँति अनुसंधान के लिए यहाँ भी एक कमीशन नियुक्त हो चुका है, जिसके पूर्व प्रधान विश्वविख्यात वैज्ञानिक स्व० डा० भाभा थे। उसके अनुसंधानों के फलस्वरूप बम्बई की प्रयोगशाला में अणु भट्ठी (एटोमिक रिएक्टर)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तैयार की गयी है जो एशिया में अपने ढंग की पहली भट्ठी है। भारत का यह एक नया प्रयास देश के इतिहास में एक स्मरणीय घटना माना जायगा। कई वर्ष हुए कलकत्ते में एक अणु तोड़क प्रयोगशाला भी खुली थी जिसका निर्देशन स्वर्गीय डा० मेघनाद साहा कर रहे थे। इस समय भारत दक्षिण एशिया में अणु-शक्ति के विकास में सबसे अग्रणी है। स्व० डा० भाभा का कथन था कि भारत यदि चाहे तो दो वर्षों के अन्दर आणविक अस्त्र प्रस्तुत कर सकता है, परन्तु भारत की नीति है कि वह विश्व के विनाश के लिए नहीं वरन् विकास के लिए अणु-शक्ति का प्रयोग करेगा।

भारत सरकार ने अणु-अनुसन्धानों के विषय में अपनी नीति की घोषणा में स्पष्ट कह दिया है कि वह केवल रचनात्मक उद्देश्यों के लिए ही अणु-शक्ति के विकास का प्रयोग कर रही है। अणु-शक्ति से बिजली पैदा करने का काम काफी आगे बढ़ चुका है और आशा है कि शीघ्र हमारे देश में अणु-शक्ति से बिजली बनने लगेगी।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—वैज्ञानिक व औद्योगिक अनुसन्धान परिषद के विषय में तुम क्या जानते हो?

२—राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के कुछ अनुसन्धानों का वर्णन करो।

३—अणु-अनुसन्धान से भारत का क्या उद्देश्य है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पांचवाँ अध्याय

उद्योगीकरण की समस्याएँ

पाठ—१ कुटीर उद्योग

कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री ढेवर ने घोषणा की थी कि बेरोजगारी दूर करने और आर्थिक समानता कायम करने के लिए हमें छोटे और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन और भूदान आन्दोलन को पूर्ण सहयोग देना होगा। उन्हें विश्वास है कि यदि छोटे उद्योगों का देशव्यापी विस्तार किया गया, तो १० वर्षों में वेकारी का अन्त हो जायगा। संघ और राज्य सरकारें भी कुटीर उद्योगों की उन्नति में संलग्न हो गयी हैं। अतः इस सम्बन्ध में जरूरी बातें जान लेना बहुत आवश्यक है।

कांग्रेस के भूतपूर्व सभापति
श्री उच्छरंगराय ढेबर

किस प्रकार के कुटीर उद्योग शुरू किये जायँ? यह पहली विचारने योग्य समस्या है। गाँव तथा नगर निवासियों को अपनी स्थानीय सुविधाओं के अनुसार उन उद्योगों को अपनाना चाहिए जिससे उन्हें आर्थिक, शारीरिक और नैतिक लाभ हों। सरकारों और जननायकों को उन उद्योगों पर जोर देना चाहिए जिनके द्वारा अधिक से अधिक व्यक्तियों को जीविका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के साधन मिल सकें। हमारी राज्य सरकार ने कुटीर उद्योगों को बढ़ाने के लिए एक बोर्ड बनाया है जो लोगों को आर्थिक सहायता देता है और उनकी बनायी वस्तुओं की बिक्री के लिए सुविधाएँ बढ़ा रहा है।

राष्ट्रीय नियोजन आयोग (प्लानिंग कमीशन) ने अपनी पिछली रिपोर्ट में अनेक उद्योगों को पुनः चालू करने की सम्मति दी थी। दूसरी पंचवर्षीय योजना में कुटीर उद्योगों की महत्ता पर विशेष बल दिया गया। जहाँ कहीं बिजली के तार गये हैं, वहाँ अनेक प्रकार के नये, छोटे और कुटीर उद्योग, जिनमें साधारण पूँजी लगाने की आवश्यकता है, बिजली से चालू किये जा सकते हैं। उनके लिए सरकार से आर्थिक सहायता और बिजली दोनों प्राप्त हो सकती हैं।

नियोजन आयोग ने बहुत से कुटीर उद्योगों के नाम सुझाये हैं। उनमें से मुख्य उद्योगों के नामों का नीचे उल्लेख है :—

कृषि उद्योग—दालें साफ करना, आटा पीसना, घानी का तेल निकालना, गुड़ व शक्कर बनाना, फलों का संरक्षण, मुरब्बे बनाना व अचार डालना, मसाले व तम्बाकू पैदा करना, गोपालन (डेयरी), मुर्गियाँ पालना (पोल्ट्री), शहद की मधुमक्खियां पालना इत्यादि।

वस्त्र उद्योग—कपास ओटना, कातना, करघे पर बुनना, निवाड़ व दरी बनाना, रेशम के कीड़े पालना, ऊन तैयार करना, कंबल व कालीन बनाना, रेशमी व सूती वस्त्रों की रँगाई व छपाई, टोपी, साफा, डोरी, रस्सी आदि बनाना।

लकड़ी—चीरना, गाड़ी व पहिए बनाना, खिलौने, कंघे, मेज, पलंग, चौखटे, किवाड़ बनाना इत्यादि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धातु—लोहार का काम, ताँबे और पीतल के बर्तन, ट्रंक, सन्दूक, ताले बनाना, तार निकालना, सोने और चाँदी की वस्तुएं व आभूषण, धातुओं के खिलौने आदि बनाना।

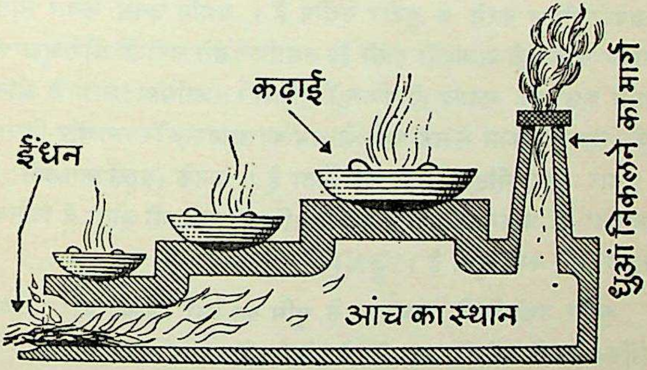

गुड़ बनाना

चमड़ा, काँच, पत्थर मिट्टी आदि—खालों को कमाना, जूते और दूसरी चीजें बनाना, कांच की चूड़ियां और अन्य सामान, पत्थर व मिट्टी के बर्तन और खिलौने बनाना।

रासायनिक (केमिकल) उद्योग—लाख व लाख की चूड़ियां, रंग, स्याही, साबुन, तेल, दवाइयाँ आदि तैयार करना।

अन्य उद्योग जैसे किताबों की जिल्द बाँधना, बाजे, बटन, कागज आदि बनाना, मछली का तेल निकालना।

कुटीर उद्योगों के स्थापन और विकास में सहयोगी और सहकारी समितियाँ बहुत उपयोगी हैं। उनसे सस्ती पूँजी और सहायता मिल सकती है। उनके द्वारा कच्चा माल खरीदा जा सकता है। बनी हुई चीजों को एकत्र करने और बेचने के लिए सहकारी समितियों से बेहतर अन्य कोई साधन नहीं है। अतः ऐसा यत्न करना चाहिए कि सब किसान और कारीगर सहकारी समितियों के सदस्य बन जायँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लाभ—कुटीर उद्योगों से भारत जैसे गरीब और घनी आबादी वाले देश में, जहाँ करोड़ों मनुष्य लगभग आधे वर्ष वेकार रहते हैं, लोगों को उनके घरों पर ही काम मिल जायगा। इसका उदाहरण **सूत कातने व खद्दर तैयार करने** के कुटीर उद्योग हैं। यद्यपि उनसे केवल सात-आठ आने की ही आमदनी होती है, तथापि इससे गरीबी और भूख की ज्वाला कुछ तो अवश्य ही कम हो जायेगी। आर्थिक लाभ के अतिरिक्त उपयोगी काम में लगे रहने से श्रम का आदर और आचार-विचार के सुधार द्वारा **नैतिक** लाभ भी होता है। उनके द्वारा जन-जन में समानता की भावना पैदा होने से **सामाजिक** लाभ भी होता है जिसका देश के लिए बड़ा मूल्य है।

कुटीर उद्योगों के प्रचलन से **भूमि का भार** हल्का हो जायगा, क्योंकि लाखों करोड़ों मनुष्यों को खेती के अतिरिक्त जीविका का दूसरा साधन मिल सकेगा। हमारी दैनिक आवश्यकताओं की चीजें घर-घर सुलभ हो जायेंगी। आजकल नौकरी या मजदूरी के लिए गाँवों से शहरों की ओर जो दौड़ रहती है, वह जाती रहेगी। शहरों में तंग व गन्दी आबादियों में जो गाँवों के श्रमिकों को रहना पड़ता है उसका भी अन्त हो जायगा।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—कुटीर उद्योग का क्या अर्थ है ? तुम्हारे गाँव में कौन-कौन से कुटीर उद्योग हैं ?

२—कुटीर उद्योगों की आवश्यकता और महत्व पर एक लेख लिखो।

३—तुम्हारे यहाँ कौन-कौन से कुटीर उद्योग हो सकते हैं ? उन्हें किन साधनों की जरूरत पड़ेगी ? उनको किस प्रकार प्राप्त करोगे ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—श्रम और पूंजी की समस्या

भारत में दो प्रकार के श्रमिक या मजदूर हैं—एक तो वे जो गांवों में रहते और खेती कि काम में मजदूरी करते हैं (खेतिहर मजदूर); और दूसरे वे जो नगरों में रहते और कल-कारखानों में काम करते हैं (औद्योगिक मजदूर)।

खेतिहर मजदूर

भारत में करीब ३० करोड़ लोगों का धन्धा खेती है जिनमें करीब एक चौथाई अर्थात् ७ करोड़ से कुछ अधिक खेतिहर मजदूर हैं। उनके पास खेती के लिए अपनी भूमि नहीं है, अत: वे लोग दूसरे के खेतों पर मजदूरी करते हैं। इनमें से कुछ तो बारहों महीने मजदूरी पर लगे रहने वाले मजदूर हैं, परन्तु कुछ को केवल फसल के दिनों में ही खेती पर काम मिलता है।

खेतिहर मजदूरों को अनेक कष्ट हैं। औसत जोत में भूमि की न्यूनता और औसत उपज की कमी होने के कारण उन लोगों को इतनी मजदूरी नहीं मिलती कि आधा पेट भी खाना खा सकें। उन लोगों के लिए गांवों में उद्योग नहीं हैं। उनकी अतिरिक्त आमदनी का एक साधन पशुपालन बचता है, परन्तु वह भी लाभकारी नहीं है। एक तो दुधारू पशुओं की संख्या घटती जा रही है, दूसरे उपयुक्त चारे की कमी से पशु बहुत कम दूध देते हैं।

खेतिहर मजदूरों के सबसे बड़े त्राता इस समय आचार्य विनोबा भावे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
माने जाते हैं। उनके भूदान यज्ञ में लाखों एकड़ भूमि मिल रही है और वह भूमिहीन खेतिहरों में बाँटी जा रही है।

देश में एक अखिल भारत खेतिहर मजदूर संघ १६३७ ई० से स्थापित है। सरकार ने न्यूनतम मजदूरी का कानून बनाया है जिससे आय में २० से लेकर ४० प्रतिशत तक बढ़ती हुई है, परन्तु यह कानून सर्वत्र लागू नहीं हुआ है। आशा है शीघ्र ही सरकार कोई ठोस कदम उठायेगी जिससे खेतिहरों की दुर्दशा का अन्त होगा।

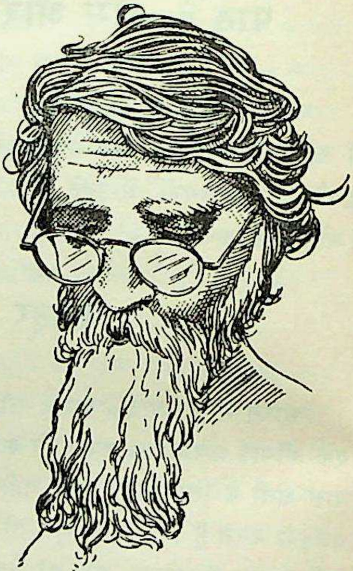

आचार्य विनोबा भावे

औद्योगिक मजदूर

आधुनिक कल-कारखानों के विकास से नगरों में औद्योगिक मजदूरों की संख्या बढ़ रही है। १६५० ई० में कारखानों, खानों, रेल, तार, डाक, चाय के बगीचों आदि में उनकी संख्या ६५ लाख थी। उनमें से अधिकांश गाँवों को छोड़ कर नगरों में आ बसे हैं जहाँ वे लोग तंग से तंग मकानों और गन्दी से गन्दी गलियों में रहते हैं। दिन भर कठोर परिश्रम के बाद मनोरंजन की इच्छा को पूरा करने के लिए उनके अन्दर शराब पीने, जुआ खेलने, गन्दे सिनेमा देखने आदि के दुर्व्यसनों ने घर कर लिया है।

अन्य देशों की भाँति भारत के औद्योगिक मजदूर भी अपने हितों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और अधिकारों की रक्षा के लिए आन्दोलन करते रहते हैं। देश के सुधारवादी, समाजवादी, साम्यवादी, राष्ट्रीयतावादी सभी उन्नतिशील दलों को मजदूर आन्दोलनों से सहानुभूति रही है। १६३० ई० में सारे देश के मजदूरों के संगठन और कल्याण के लिए अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन काँग्रेस स्थापित हुई जिससे मजदूर आन्दोलन को विशेष बल प्राप्त हुआ। आन्दोलन के फलस्वरूप मजदूरों की दशा में बहुत सुधार हुआ है। काम के कम घण्टे, उचित मजदूरी, निश्चित छुट्टियाँ अच्छे मकान, मजदूरों की ये सब बातें सरकार और मिल मालिकों को मान्य हैं और अमल में लायी जा रही हैं।

१६४८ ई० में फैक्ट्रियों में काम करने वाले मजदूरों के फायदे के लिए बीमा-योजना स्वीकार की गयी है जिसमें धन मजदूरों व मालिकों के चन्दे और संघ व राज्य सरकार की दी हुई सहायता से जमा होता है। इस बीमे से मजदूरों की मुफ्त चिकित्सा, बीमारी में रुपये पैसे की मदद, प्रसूताओं की मदद, चोट के कारण काम करने से अयोग्य होने पर सहायता आदि प्राप्त होती है।

मजदूर आन्दोलन का नेतृत्व—इस समय हमारे देश में कई राजनीतिक दल मजदूरों के आन्दोलन में रुचि लेते हैं। ट्रेड यूनियन काँग्रेस के नेता काँग्रेसी हैं और मजदूरों के हितों का ध्यान रखते हुए सरकार की नीति का समर्थन करते हैं। जो मजदूरों के संगठन साम्यवादियों और समाजवादियों के प्रभाव में हैं, वे प्राय: सरकार की नीति का विरोध करते हैं।

पूँजी

पूँजी के विचार से इस समय कुछ उद्योग तो **सार्वजनिक सम्पत्ति** हैं जैसे रेल, डाक, तार, हवाई जहाज आदि और कुछ **निजी सम्पत्ति** हैं। निजी सम्पत्ति वाले उद्योगों से मजदूरों और मालिकों के बीच **झगड़ों**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को तय करने के लिए सरकार ने देश के स्वतन्त्र होते ही १९४७ ई० में कानून बना दिया जिसका प्रयोजन दोनों पक्षों में अच्छे सम्बन्ध कायम करना और झगड़े के कारणों को दूर करना है। १९४८-४९ ई० के कानून के अनुसार हर कारखाने में जहाँ ५०० या अधिक मजदूर काम करते हैं, मालिक को मजदूरों के कल्याण के लिए एक **वेलफेयर अफसर** नियुक्त करना पड़ता है। अब किसी से एक दिन में अधिक से अधिक ८ घण्टे और सप्ताह में कुल ४८ घण्टे से अधिक काम नहीं लिया जा सकता।

इस समय सरकार की यह नीति है कि देश में उत्पादन खूब बढ़े, उसके लिए निजी सम्पत्ति वाले उद्योगों को खूब प्रोत्साहन दे और अधिक से अधिक उद्योग सार्वजनिक सम्पत्ति हों। कुछ राजनीतिक दल उद्योगों के **राष्ट्रीयकरण** पर बहुत जोर देते हैं, परन्तु सरकार समझती है इस प्रकार न तो उत्पादन बढ़ सकेगा और न निजी सम्पत्ति वाले उद्योगों के साथ न्याय होगा। इसके अतिरिक्त सरकार के पास सब उद्योगों को मोल ले लेने के लिए धन भी नहीं है। जो धन है उसे राष्ट्रीय नियोजन के कार्यों में लगाना देश के कल्याण के लिए आवश्यक है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—खेतिहर मजदूरों को क्या कष्ट है? उन्हें दूर करने के उपाय बताओ।

२—औद्योगिक मजदूरों के विषय में तुम क्या जानते हो? उन्हें सरकार ने क्या-क्या सुविधाएं दी हैं?

३—उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के विषय में तुम्हारे क्या विचार हैं?

संग्रहालय पुस्तकालय लखनऊ 3799 21.5.6

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh